शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
महाराष्ट्र

दूर शिक्षण केंद्र

प्रयोजनमूलक हिंदी

(शैक्षिक वर्ष 2015-16 से)

बी. ए. भाग–3 हिंदी

सत्र–5 पेपर 10

सत्र - 5 : इकाई 1

पारिभाषिक शब्दावली

(अ) संचार माध्यम संबंधी शब्द (ब) शिक्षा, सभा और संमेलन संबंधी शब्द

अनुक्रम

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय-विवेचन

1.3.1 पारिभाषिक शब्दावली : सामान्य परिचय

1.3.1.1 पारिभाषिक शब्दावली : अर्थ एवं परिभाषाएँ

1.3.1.2 पारिभाषिक शब्दावली : उपयुक्तता

1.3.1.3 पारिभाषिक शब्दावली : सामान्य विशेषताएँ

1.3.2 पारिभाषिक शब्दावली

1.3.2.1 संचार माध्यम संबंधी शब्द

1.3.2.2 शिक्षा, सभा और संमेलन संबंधी शब्द

1.4 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.6 स्वयं-अध्ययन -प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

- पारिभाषिक शब्दावली के अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप से परिचित होंगे ।
- पारिभाषिक शब्दावली का महत्व एवं प्रासंगिकता को समझ सकेंगे ।
- संचार माध्यम संबंधी अंग्रेजी शब्दों के हिंदी पर्यायवाची रूपों को जान सकेंगे ।
- शिक्षा, सभा और संमेलन संबंधी अंग्रेजी शब्दों के हिंदी पर्यायवाची रूपों से परिचित होंगे ।

1.2 प्रस्तावना

जो शब्द किसी विशिष्ट ज्ञान के क्षेत्र में एक निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होता है, वह पारिभाषिक शब्द होता है । किसी भी विषय की पारिभाषिक शब्दावली का बड़ा ही महत्व होता है । प्रशासन, ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखाओं-उपशाखाओं की अपनी-अपनी विशिष्ट शब्दावली होती है । जिसे 'पारिभाषिक शब्दावली' कहते हैं । शास्त्र, विशिष्ट विषय अथवा सिद्धान्त के सम्प्रेषण के लिए सामान्य शब्दों के स्थान पर विशिष्ट शब्दावली की आवश्यकता होती है । यही शब्दावली पारिभाषिक शब्दावली कहलाती है । कुछ विद्वान इसे तकनीकी शब्दावली कहते हैं ।

किसी भी विषय की पारिभाषिक शब्दावली का बड़ा ही महत्व है । सहज भाषा (natural language) की तुलना में किसी वैज्ञानिक, तकनीकी या आर्थिक विषय के वर्णन में यह विशेषता होती है कि उसमें संज्ञाओं (नाम) की भरमार होती है । किसी विशिष्ट विषय (specialized subject) को समझने-समझाने का काम पारिभाषिक शब्दावली के बिना दुरूह ही नहीं, असम्भव भी है । पारिभाषिक शब्दावली के दो फायदे होते हैं - पहला यह कि किसी विचार या कान्सेप्ट (concept) को समझने-समझाने के लिये नये शब्द के प्रयोग से विचारों को पंख लग जाते हैं । दूसरा यह कि शब्द की परिभाषा करने से वह अस्पष्टता समाप्त हो जाती है, जो कि उस शब्द सामान्य अर्थों में प्रयोग में आती है । इस प्रकार विचार-विनिमय (communication) में आसानी होती है और विचार-विनिमय दक्षता पूर्वक हो जाता है ।

स्वाधीन भारत के संविधान के अनुसार केन्द्र सरकार के कामकाज के लिए देवनागरी में लिखित हिन्दी को 26 जनवरी 1950 को भारत की राजभाषा घोषित किया गया । भारत की राजभाषा हिंदी घोषित हो जाने पर संविधान के अनुच्छेद 344 (1) के अंतर्गत 1955 में गठित राजभाषा आयोग की सिफारिश पर निर्मित संसदीय समिति की रिपोर्ट पर 1960 में राष्ट्रपति के आदेशानुसार हिंदी की वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली निर्माण के लिए 1961 में स्वतंत्र आयोग का गठन होने पर हिंदी पारिभाषिक शब्दावली के क्षेत्र में गतिशीलता आई । राजभाषा का उत्तरदायित्त्व ग्रहण करते ही हिन्दी भाषा साहित्य से अन्य क्षेत्रों में, न्याय, विज्ञान, वाणिज्य, प्रशासन, जनसंचार, विज्ञापन, अनुवाद एवं रोजगार की भाषा बन गई । स्वतंत्रता से पूर्व अंग्रेजी शासन-काल से शासकीय कार्य अंग्रेजी भाषा में सम्पन्न किए जाते थे । स्पष्ट है आज भी जनमानस में अंग्रेजी का गहरा प्रभाव छाया हुआ दिखाई देता है । साथ ही ज्ञान-विज्ञान, तंत्रज्ञान एवं प्रशासन के विभिन्न शाखाओं पर अंग्रेजी भाषा का ही प्रभुत्व है । ऐसी स्थिति में कार्यालयीन, कामकाजी और व्यावहारिक भाषा के रूप में हिन्दी को ढाला गया और उसके प्रयोजनीय पक्ष को बढावा मिला । न्याय, जनसंचार,

पत्रकारिता, मीडिया, विज्ञान और विज्ञापन की आवश्यकता को पूरा करने हेतु पारिभाषिक शब्दावली का विकास हुआ और हो रहा है । दैनंदिन व्यवहार में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली के विकास के कारण हिंदी समृद्ध होती जा रही है । अत: हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली प्रयोजनमूलक हिन्दी का महत्वपूर्ण अंग है ।

भूमंडलीकरण के इस दौर में पूरी दुनिया समेटकर नजदीक आ गई है। ज्ञान, विज्ञान एवं तंत्रज्ञान के विभिन्न आविष्कारों ने विकास की गति को वृद्धिंगत किया और दुनिया का चेहरा-मोहरा ही बदल दिया है। सूचना एवं प्राद्योगिकी के क्षेत्र में नए विकसित संचार-माध्यमों ने क्रांति ला दी है। आज देश के विकास में संचार के मुद्रित एवं इलेक्ट्रॉनिक दोनों प्रकार के माध्यमों का अनन्यसाधारण महत्व बना हुआ है । अत: इन विभिन्न संचार-माध्यमों संबंधी के ज्ञान एवं व्यवहार हेतु इस क्षेत्र से जुडी पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होना आवश्यक है । साथ ही पूरे मानवजाति की उन्नति में शिक्षा का महत्व अक्षुण्ण है । दिन-ब-दिन शिक्षा की अहमियत बढ़ती ही जा रही है । शिक्षा के विकास के साथ-साथ सभा एवं संमेलनों की संख्या में भी वृद्धि हो रही है और विचार-विमर्श को बढ़ोतरी मिल रही है । ज्ञान तथा नैतिक मूल्यों के उन्नयन हेतु, विचारों एवं भावों के आदान-प्रदान हेतु इनका योगदान मिल रहा है । अत: तत्संबंधी पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान होना जरूरी है । इस दृष्टि से संचार-माध्यम तथा शिक्षा, सभा एवं संमेलन से संबंधित अंग्रेजी एवं हिंदी पारिभाषिक शब्दावली का विवेचन यहाँ किया जा रहा है ।

1.3 विषय - विवेचन

1.3.1 पारिभाषिक शब्दावली : सामान्य परिचय

1.3.1.1 पारिभाषिक शब्दावली : अर्थ एवं परिभाषाएँ

अर्थ -

पारिभाषिक शब्द अंग्रेजी के 'टेक्निकल' शब्द का हिंदी अनुवाद है । ग्रीक भाषा के 'टेक्निक्स' शब्द से अंग्रेजी का 'टेक्निकल' शब्द व्युत्पन्न हुआ है । फादर कामिल बुल्के ने 'एन इंग्शिल-हिंदी डिक्शनरी' में इसके अर्थ के बारे में लिखा है - "Of a particular art, science, craft or about art." अर्थात् विशेष कला, विज्ञान, शिल्प अथवा कला के बारे में इसका प्रयोग Skill (विशिष्ट कला) के अर्थ में भी किया जाता है । इस तरह कहा जा सकता है कि ''पारिभाषिक'' शब्द वह शब्द है जो किसी विशिष्ट ज्ञान के क्षेत्र में एक निश्चित निर्धारित अर्थ में प्रयुक्त होता है ।

परिभाषाएँ -

डॉ. रघुवीर - ''पारिभाषिक शब्द का अर्थ है जिसकी सीमाएँ बांध दी गई हो। जिन शब्दों की सीमा बाँध दी जाती हैं वे पारिभाषिक शब्द हो जाते हैं और जिनकी सीमा नहीं बाँधी जाती, वे साधारण शब्द होते हैं ।''

डॉ. भोलानाथ तिवारी - ''पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्दों को कहते हैं जो रसायन, भौतिकी, दर्शन, राजनीति, विभिन्न विज्ञानों या शास्त्रों के शब्द होते हैं, तथा जो अपने-अपने क्षेत्र में विशिष्ट अर्थ में सुनिश्चित रुप से पारिभाषिक होते हैं । अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से निश्चित रूप से पारिभाषित होने के कारण ही ये शब्द पारिभाषिक शब्द कहे जाते हैं ।''

इसी प्रकार पारिभाषिक शब्दों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए अनेक विद्वानों ने अनेक प्रकार से परिभाषाएँ निश्चित करने का प्रयत्न किया है । विवेचन के आधार पर पारिभाषिक शब्द की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है - ''जो शब्द सामान्य व्यवहार की भाषा में प्रयुक्त न होकर ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में विषय एवं संदर्भ के अनुसार विशिष्ट किंतु निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें पारिभाषिक शब्द कहते हैं ।''

इस प्रकार ऐसे पारिभाषिक शब्द समूह को 'पारिभाषिक शब्दावली' अथवा 'तकनीकी शब्दावली' कहा जा सकता है । सरकारी कार्यालयों तथा उद्योग, बैंक, कंपनी, संस्थान आदि के अंतर्गत व्यवहार के लिए जिन विशिष्ट शब्दों का प्रयोग किया जाता है, अर्थात् जो विशेष विषय के बोधक माने जाते हैं, वे भी पारिभाषिक शब्दावली की श्रेणी में आते हैं । साथ ही भौतिकी, रसायन, प्राणिविज्ञान, वनस्पतिविज्ञान, गणित, ज्यामिति, अंतरिक्ष-विज्ञान, कम्प्यूटर, इंजीनियरी, मानविकी, दूरसंचार तथा प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों की अभिव्यक्ति और व्यवहार में विशिष्ट अर्थ को लेकर पारिभाषिक शब्द प्रयुक्त होते हैं ।

1.3.1.2 पारिभाषिक शब्दावली : उपयुक्तता

किसी भी भाषा के लिए पारिभाषिक शब्दावली का महत्व असंदिग्ध है । डॉ. माई दयाल जैन के विचारानुसार किसी भी भाषा के लिए शब्दावली का स्थान पहला है और साहित्य का दूसरा । संभवत: इसीलिए वे यह भी स्वीकारते हैं कि हिंदी और दूसरी भाषाओं में वैज्ञानिक तथा शिल्प-विज्ञान संबंधी उच्चकोटि का साहित्य और उस साहित्य के लिए उपयुक्त पारिभाषिक शब्दावली तैयार करने का काम अत्यन्त आवश्यक है । वैज्ञानिक साहित्य और वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दावली का आपस में गहरा संबंध है । किसी भी विषय की प्रगति और विकास के लिए विषय के अनुकूल पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता पड़ती है । विषय से संबंधित कठिनाईयों, गुत्थियों को सुलझाने एवं किसी विचार को समझने-समझाने तथा उसके स्पष्टीकरण हेतु पारिभाषिक शब्दावली की सहायता होती है । इस प्रकार की शब्दावली का प्रयोग अपने-अपने विषय के विशेषज्ञों में परस्पर विचार-विनिमय और चिंतन के लिए होता है । इस दृष्टि से किसी भी विषय के सर्वांगिण विकास हेतु पारिभाषिक शब्दावली अनन्यसाधारण भूमिका का निर्वाह करती है ।

आज का युग विज्ञान और प्रविधि का युग है । विज्ञान की नई उपलब्धियों का साक्षात्कार, उद्योगों के विस्तार तथा विभिन्न ज्ञान-शाखाओं में निरंतर विकसित होती ज्ञान-चेतना तथा बढ़ते हुए चिंतन से समुचित परिचय करने-कराने एवं पारस्पारिक संवाद और विशिष्ट संप्रेषण के लिए सामान्य अथवा साधारण भाषा अपर्याप्त तथा असमर्थ होती है । अत: इन नवीन शोधों से लाभान्वित होने के लिए उस ज्ञान-शाखा की विशिष्ट शब्दावली का ज्ञान आवश्यक है । विशिष्ट ज्ञान की ये विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ, पारिभाषिक शब्दावली की सृजन-भूमि हैं । जिस भाषा में जितने अधिक पारिभाषिक शब्दों का रचाव-जमाव होगा, वह भाषा उतनी ही संपन्न कहलाएगी तथा समकालीन जीवन-जगत के लिए उतनी ही अधिक उपयुक्त कही जाएगी । डॉ. महेंद्र चतुर्वेदी के शब्दों में ''किसी भी भाषा में समुचित पारिभाषिक शब्दावली की विद्यमानता, उस भाषा-भाषी वर्ग के बौद्धिक उत्कर्ष एवं सम्पन्नता की परिचायक होती है और उसका अभाव बौद्धिक दरिद्रता का ।''

हिंदी के संदर्भ में विशेष रूप से उसके राजभाषा बनने के बाद पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता एवं अनिवार्यता और अधिक बढ़ गई । औद्योगिक क्षेत्र की अंग्रेजी पारिभाषिक शब्दावली के स्थान पर राष्ट्रीय स्वाभीमान, भारतीय अस्मिता की प्रतिष्ठा तथा मानसिक गुलामी से मुक्ति के लिए एवं ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न अनुशासनों के अध्ययन-अध्यापन के लिए उनकी पारिभाषिक शब्दावली का हिंदी में होना आवश्यक हो गया । अत: ज्ञान-विज्ञान, प्रशासन, वाणिज्य एवं जनसंचार के क्षेत्र में इस दृष्टि से प्रयास किए गए और हिंदी पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण हुआ । स्वतंत्र देश की अपनी निजी राजभाषा में पारिभाषिक शब्दों का महत्व और उपयोगिता और अधिक हो जाती है, क्योंकि शासन संबंधी सभी कार्य उसकी अपनी भाषा में होते हैं । इस दृष्टि से हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली का महत्व बहुत अधिक है । आज हिंदी की प्रयोजनीयता में यह पारिभाषिक शब्दावली अहम् भूमिका निभा रही है । आज हिंदी पारिभाषिक शब्दावली को अत्याधुनिक बनाने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं और इस दृष्टि से और अधिक प्रयास आवश्यक भी है, तभी हिंदी की समृद्धि में वृद्धि होगी ।

1.3.1.4 पारिभाषिक शब्दावली : सामान्य विशेषताएँ

विभिन्न विद्वानों ने पारिभाषिक शब्दावली की अपेक्षित विशेषताओं पर विचार-विमर्श किया है । यूनेस्को की ओर से प्रोफेसर आगस्टिनो सेवोरिन ने अपने ग्रंथ में पारिभाषिक शब्दावली की विशेषताओं पर विस्तार से प्रकाश डाला है । डॉ. भोलानाथ तिवारी तथा डॉ. सत्यव्रत आदि ने भी पारिभाषिक शब्दावली की सामान्य विशेषताओं की चर्चा की है । विभिन्न ग्रंथों के अध्ययन के पश्चात् पारिभाषिक शब्दावली की निम्नलिखित अपेक्षित सामान्य विशेषताएँ निर्धारित की जा सकती हैं -

- 'पारिभाषिक' शब्द का अर्थ सुनिश्चित, सुबोध तथा स्पष्ट होना चाहिए । उसे अर्थसंकोच अथवा अर्थविस्तार के दोष से मुक्त होना चाहिए । 'पारिभाषिक' शब्द को अपनी अर्थपरिधि से अधिक या कम अर्थ को अभिव्यक्त नहीं करना चाहिए ।
- 'पारिभाषिक' शब्द उच्चारण की दृष्टि से सरल तथा सुबोध होने चाहिए ।
- किसी एक संकल्पना के लिए एक ही पारिभाषिक शब्द का प्रयोग किया जाना चाहिए ।
- हर शब्द को स्वतंत्र अस्तित्त्व होना चाहिए ताकि उसे पढ़कर या सुनकर किसी अन्य पारिभाषिक शब्द का भ्रम पाठक या श्रोता को न हो ।
- 'पारिभाषिक' शब्द अल्पाक्षरी या छोटा होना चाहिए । जैसे 'हंगर स्ट्राइक' के लिए 'भूखहड़ताल' के बदले 'अनशन' शब्द ज्यादा अच्छा है ।
- सरलता और बोधगम्यता के लिए समान श्रेणी के पारिभाषिक शब्दों में एकरूपता होनी चाहिए । साथ ही साथ असमान संकल्पनाओं अथवा चीजों के लिए मिलते-जुलते शब्द-प्रयोग को टालना चाहिए । इसके विपरीत संबद्ध संकल्पनाओं और चीजों के लिए एक श्रेणी के संबद्ध शब्द होने चाहिए ।
- पारिभाषिक शब्द यथासंभव एक ही मूल शब्द से निर्मित होने चाहिए ।

- पारिभाषिक शब्द के नियत अर्थ में उपसर्ग, प्रत्यय या अन्य उपयुक्त शब्द जोड़कर जहाँ तक हो सके अन्य शब्द बनाने की गुंजाईश रहनी चाहिए ।
- यदि विभिन्न भाषाओं के लिए एक ही पारिभाषिक शब्द का प्रयोग किया जाता हो, तो उस शब्द को उच्चारण की दृष्टि से सरल तथा अर्थ की दृष्टि से स्पष्ट होना चाहिए ।
- पारिभाषिक शब्दावली में संक्षिप्तता के साथ-साथ सांकेतिकता भी होनी चाहिए । जैसे - आविनि -आगरा विकास निगम ।
- पारिभाषिक शब्दों को उनकी संकल्पना के अनुसार व्याख्या देकर समझाया जाता है । जैसे - अंतरीक्ष (स्पेस), ताप-मापी (थर्मा-मीटर) आदि ।
- पारिभाषिक शब्द असामान्य होते हैं, क्योंकि वे सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त नहीं होते । जैसे - चित्र-तुरग-न्याय, प्रतिभूति आदि ।
- किसी एक क्षेत्र के विशिष्ट पारिभाषिक शब्द का स्थान अन्य कोई दूसरा शब्द नहीं ले सकता । जैसे विधि के क्षेत्र में प्रयुक्त ''अधिसूचना'', प्रशासन के क्षेत्र में प्रयुक्त ''इश्यू'' आदि ।
- कुछ पारिभाषिक शब्द दो या अधिक विशिष्ट क्षेत्रों में विशिष्ट (अलग-अलग) अर्थों में प्रयुक्त होते हैं । जैसे - सेक्युरिटी-सुरक्षा (सैन्य-विज्ञान में) और प्रतिभूति/जमानत (बैंकिंग में) आदि ।
- दो या अधिक संकल्पनाओं के बीच की सूक्ष्मता की सही अभिव्यक्ति प्रदान करना भी इसकी एक प्रमुख विशेषता है । जैसे - हीट - ताप, टेम्प्रेचर - तापमान आदि ।
- ज्ञान-विज्ञान के नए-नए क्षेत्रों का विकास तथा नवीन वस्तुओं का निर्माण होने के कारण उनकी अभिव्यक्ति तथा नवीन संकल्पनाओं को स्पष्ट करने हेतु उनके अनुरूप नए शब्दों का निर्माण आवश्यक हो जाता है । पारिभाषिक शब्दों से सरलतापूर्वक नए शब्दों का निर्माण भी किया जा सकता है । जैसे 'अंकन' से परांकन, पृष्ठांकन, रेखांकन, सीमांकन आदि ।

1.3.2 पारिभाषिक शब्दावली

पारिभाषिक शब्दावली का संबंध प्रयोजनमूलक हिंदी से अनिवार्यत: जुड़ा हुआ है । वस्तुत: प्रयोजनमूलक हिंदी के अंगभूत अनिवार्य तत्त्व के रूप में पारिभाषिक शब्दावली की महत्ता अक्षुण्ण बनी हुई है । हमारे देश में विज्ञान और प्रोद्योगिकी के उदय एवं विकास के साथ उसकी सटीक तथा सार्थक अभिव्यक्ति हेतु हिंदी के प्रयोजनमूलक रूप में उसकी तकनीकी शब्दावली की नितांत जरूरत महसूस की गई है । फलत: हिंदी में प्रशासन, विधि, विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण एवं प्रचलन हुआ है । इस प्रकार वैज्ञानिक और तकनीकी के निर्माण के कारण विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में प्रयोजनमूलक हिंदी को अत्याधिक गति मिल गई है । अत: पारिभाषिक शब्दावली की अनुप्रयुक्तता प्रयोजनमूलक हिंदी में एक अनिवार्य तथा अत्यन्त उपादेय तत्त्व के रूप में सिद्ध हुई है । इस अर्थ में प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रशासन, विधि, दूरसंचार, मानविकी विज्ञान, अंतरीक्ष, कम्प्युटर तथा प्रोद्योगिकी आदि क्षेत्रों में प्रयुक्ति के उपकरण के रूप में पारिभाषिक शब्दावली की महत्ता अक्षुण्ण है ।

1.3.2.1 संचार माध्यम संबंधी पारिभाषिक शब्द

'संचार' का सामान्य अर्थ है किसी सूचना या जानकारी को दूसरों तक पहुँचाना । यह अंग्रेजी के 'कम्युनिकेशन' का हिंदी रूपांतर है । 'किसी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को अथवा किसी एक व्यक्ति से कई व्यक्तियों को कुछ सार्थक चिह्नों, संकेतों या प्रतीकों के संप्रेषण से सूचना, जानकारी, ज्ञान या मनोभाव का आदान-प्रदान करना 'संचार' है । इसी प्रकार किसी बात अथवा ज्ञान को दूर-दूर तक लोगों में फैलाना या उन्हें उस ज्ञान से अवगत कराना यह भी संचार है । दूसरे शब्दों में हम कह सकते है कि जब हम किसी भाव या विचार को या किसी जानकारी को दूसरों तर पहुँचाते हैं और यह प्रक्रिया व्यक्तिगतस्तर पर न होकर सामूहिकस्तर पर होती है, तो उसे 'जन-संचार' के नाम से जाना जाता है । अंग्रेजी में 'जन-संचार' को 'मास-कम्युनिकेशन' कहा जाता है । 'मास' का अर्थ होता है 'विशाल' तथा 'कम्युनिकेशन' का अर्थ है 'संचार' । अर्थात किसी जानकारी को विशाल जन-समूह अथवा दूरस्थ देश व प्रदेश में फैलाना ही मास-कम्युनिकेशन है ।

सभ्यता और ज्ञानवृद्धि के साथ 'जनसंचार' का महत्व निरंतर बढ़ता ही जा रहा है । वर्तमान युग में किसी भी देश या समाज की कल्पना व उसकी उन्नति 'जनसंचार' के अभाव में संभव नहीं है । वर्तमान समय में लाखों लोगों तक सूचनाएँ एकसाथ और त्वरित गति से 'जनसंचार' माध्यमों की सहायता से पहुँच जाती है । इसका मुख्य उद्देश्य होता है, जनकल्याण, शिक्षा, जागरूकता, मनोरंजन । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए 'जन-संचार' माध्यमों का उपयोग किया जाता है ।

'विश्व-गाँव' की कल्पना का आधार विकसित जनसंचार तंत्र ही है । इसे अंग्रेजी में इनफॉरमेशन टेक्नॉलॉजी (आय.टी.) तथा हिंदी में 'सूचना-क्रान्ति' के रूप में जाना जाता है । आज हम करोड़ों मील दूर बैठे व्यक्ति, समाज, भीड़ अथवा समूह तक अपनी बात या अपना संदेश सफलता के साथ दे सकते हैं । आज तो जनसंचार माध्यमों में अत्याधुनिक टेक्नॉलॉजी के कारण बहुत भारी मात्रा में वृद्धि हो रही है । समाचार-पत्र, पत्र-पत्रिकाएँ, विज्ञापन, टेलिफोन, मोबाईल, रेडिओ, टेलिव्हिजन, फिल्म, कम्प्युटर आदि जनसंचार के विकसित साधनों ने मनोरंजन एवं ज्ञान-विज्ञान की जानकारी को हमारे सम्मुख परोस दिया है । इन माध्यमों से हम दूरस्थ देशों में होने वाली घटनाओं की जानकारी ले सकते हैं । अपना ज्ञान-परिमार्जन कर सकते हैं । व्यापारिक हितों का संबंध कर सकते हैं । विज्ञान व शिक्षा के नए-नए आयामों को खोज सकते हैं । आम जिंदगी की छोटी-छोटी जरूरतमंद चीजों तक आसानी से पहुँच सकते हैं । अपने कोमलभाव, अपने अंतरंग मित्रों व परिजनों तक संप्रेषित कर सकते हैं या यूँ कहा जाए कि हम दुनिया को अपनी मुट्ठी में कैद कर सकते हैं ।

आज विभिन्न समाचारपत्र, पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से घर बैठे ही दुनियाभर की खबरें मिल जाती हैं । रेडिओ तथा दूरदर्शन के विविध चैनेलों एवं फिल्मों द्वारा मनोरंजन एवं जानकारी को हर घर में पहुँचाया जा रहा हैं । मोबाईल, कम्प्युटर, इंटरनेट, ई-मेल, वॉट्स अप आदि प्रणालियों के अधुनातन विकसित तंत्र प्रणाली ने तो संचार में क्रांति ला दी है । लगभग हर क्षेत्र में इनके प्रयोग से कार्य करना सुलभ हो गया है । आज स्थिति यह है कि जिंदगी बसर करने के लिए इन माध्यमों से अछूता नहीं रहा जा सकता । तब इन विभिन्न संचार-माध्यमों से ठीक ढ़ंग से अवगत होने के लिए इनसे संबंधित अंग्रेजी-हिंदी पारिभाषिक शब्दावली को जानना नितांत जरूरी है ।

परिशिष्ट - अ

पारिभाषिक शब्दावली

संचार-माध्यम संबंधी शब्द

1.	Adless Paper	:	विज्ञापनरहित पत्र, विज्ञापनरहित पत्रिका
2.	Abstract bulletin	:	संक्षिप्त समाचार
3.	Advt. media	:	विज्ञापन माध्यम
4.	Airproof Paper	:	वातरूद्ध कागज
5.	Automatic Composing	:	स्वचल मुद्रायोजन
6.	Binding	:	जिल्दसाजी
7.	Blank Paper	:	अमुद्रित पृष्ठ
8.	Block letter	:	स्थुलाक्षर
9.	Black list	:	काली सूची
10.	Blue journalism	:	नील पत्रकारिता
11.	Caption	:	शीर्षक, चित्रपरिचय
12.	Cartoon	:	व्यंग्यचित्र
13.	Catch line	:	शेषांश (शीर्षक)
14.	Column	:	स्तंभ
15.	Comic paper	:	हास्य समाचार पत्र
16.	City news	:	नगर समाचार
17.	Composing	:	अक्षरयोजन
18.	Water colour paper	:	जलरंग पेपर
19.	Wedding column	:	विवाहस्तंभ
20.	Weekly news paper	:	साप्ताहिक समाचार पत्र
21.	Weekly	:	साप्ताहिक
22.	Watermark paper	:	जलांक पेपर

23.	Waxed paper	:	मोमी कागज
24.	Wearing of letter	:	अक्षर का मिटाना
25.	Wad stock	:	कारतूसी कागज

1.3.2.2 शिक्षा, सभा और संमेलन संबंधी पारिभाषिक शब्द

मनुष्य-जाति की विकास प्रक्रिया में शिक्षा का महत्व अनन्यसाधारण है । बगैर शिक्षा के उन्नति पाना असंभव है । मनुष्य अपने जन्म से लेकर अंततक आजीवन शिक्षा पाता रहता है । औपचारिक और अनौपचारिका इन दो प्रकारों से वह शिक्षा ग्रहण करता रहता है । शिक्षा की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है । शिक्षा की प्रक्रिया के कारण मनुष्य का विकास होता आ रहा है । जनमानस में इंसानियत, संस्कार एवं नैतिक मूल्यों के बीज बोने हेतु तथा ज्ञान-विज्ञान और तंत्रज्ञान को आत्मसात करने हेतु शिक्षा अनिवार्य है । आज शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति मच गई है । वैश्वीकरण के इस दौर में ज्ञान-विज्ञान एवं तंत्रज्ञान के विकास के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी विस्तार हो गया है । उसकी अनगिनत फैली हुई विभिन्न शाखाओं के ज्ञान से मनुष्य दिन-ब-दिन समृद्धि की ओर अग्रेसर होता चला जा रहा है । कला, वाणिज्य, विज्ञान, तंत्रज्ञान आदि शाखाओं एवं उनकी उपशाखाओं से शिक्षा लेकर वह नित्य नया ज्ञान पा रहा है । आज की दुनिया के नए-नए आविष्कारों की उपलब्धि के पीछे शिक्षा की भूमिका अहम् बनी हुई है । शिक्षा के कारण ही वह अपनी आजीविका भी पाता है । शिक्षा की अनिवार्यता ध्यान में लेकर अपने देश में शिक्षा संबंधी विभिन्न योजनाएँ बनाई गई हैं । अत: शिक्षा-क्षेत्र से संबंधित महत्वपूर्ण पारिभाषिक शब्दावली का अध्ययन यहाँ किया जा रहा है ।

भावों एवं विचारों के आदान-प्रदान हेतु तथा अभिव्यक्ति प्रेषण के लिए सभा एवं संमेलनों का अपना महत्व है । समाज-सुधार के उद्देश्य से कार्य करनेवाली अनेक संगठण, सभा तथा संमेलनों के आधार से समाज को जागृत एवं सचेत करने का प्रयास करते हैं । जनमानस को सजग एवं सचेत बनाने में शिक्षा के साथ, सभा एवं संमेलनों का भी योगदान होता है । समाजहित तथा अन्याय के खिलाफ न्याय प्राप्ति के लिए सभा एवं संमेलन ही सहायक सिद्ध होते हैं । जनतंत्रप्रणाली में जनमत का स्थान अहम् होता है । जनमत से ही समाज एवं शासन प्रणाली में स्थिरता संभव है । इस जनमत को बनाने में सभा एवं संमेलन ठोस कार्य करते हैं । इनके माध्यम से विचार एवं मूल्यों का प्रचार-प्रसार प्रभावी ढ़ंग से होता आ रहा है । सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक, शैक्षिक आदि क्षेत्रों से संबंधित सभा एवं संमेलनों में विचारों का आदान-प्रदान प्रभावपूर्ण होता है । जनजागृति, ज्ञान की प्राप्ति, विचारों का संवहन एवं आदर्श नीति-मूल्यों की प्रतिष्ठापना आदि उद्देश्यों की पूर्ति में सभा एवं संमेलनों का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण रहा है । अत: यहाँ सभा एवं समेलनों से संबंधीत अंग्रेजी-हिंदी पारिभाषिक शब्दावली की सूची दी जा रही है ।

परिशिष्ट - ब

पारिभाषिक शब्दावली

शिक्षा, सभा और संमेलन संबंधी शब्द

1.	Academic Council	:	विद्या परिषद
2.	Academic dean	:	शैक्षिक संकाय
3.	Admission	:	प्रवेश, दाखिला
4.	Additional	:	अतिरिक्त
5.	Agenda	:	कार्य सूची
6.	Attach	:	संलग्न करना
7.	Bachelor	:	स्नातक
8.	Backward tribes	:	पिछडी, आदिम जातियाँ
9.	Brain drain	:	प्रतिभा पलायन
10.	Bureaucratic	:	नौकरशाही
11.	Briefly	:	संक्षेप में
12.	Call-bell	:	बुलावा घंटी
13.	Casual leave	:	आकस्मिक छुट्टी
14.	Charity	:	दान
15.	Civics	:	नागरिकशास्त्र
16.	Colloquial	:	बोल-चाल की भाषा
17.	Complexity	:	जटिलता
18.	Audiaence	:	श्रोतागण
19.	Delighted	:	आल्हादित
20.	Delay	:	विलंब
21.	Departure	:	प्रस्थान
22.	Inauguration	:	उद्घाटन

23. Minutes : कार्यवृत्त

24. Symposium : संगोष्ठी

25. Wisdom : ज्ञान

1.4 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न

अ) निम्नलिखित वाक्यों में दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर वाक्य फिर से लिखिए ।

1. 'पारिभाषिक शब्द' अंग्रेजी के ..... शब्द का हिंदी अनुवाद है ।

   1) टेकनिक 2) टेक्नॉलॉजी 3) टेक्निकल 4) टेक्नीक

2. ..... के विचारों के अनुसार किसी भी भाषा के लिए पारिभाषिक शब्दावली का स्थान पहला और साहित्य का दूसरा है ।

   1) डॉ. रघुवीर 2) डॉ. भोलानाथ तिवारी

   3) डॉ. विनोद गोदरे 4) डॉ. माई दयाल जैन

3. अंग्रेजी के 'कम्युनिकेशन' का हिंदी रूपांतर है ..... ।

   1) संचार 2) वार्ता 3) संपर्क 4) संभाषण

4. 'संक्षिप्त समाचार' के लिए ..... अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द है ।

   1) Short news 2) Brief information

   3) Brief bulletin 4) Abstract bulletin

5. 'Binding' हिंदी के ..... का अंग्रेजी पर्याय है ।

   1) जोडना 2) चिपकाना 3) जिल्दसाजी 4) समेटना

6. 'अमुद्रित पृष्ठ' इस अंग्रेजी ..... शब्द का हिंदी पर्याय है ।

   1) Nonprinted paper 2) Blank paper

   3) Clean paper 4) Nonmarked paper

7. जनमानस को ..... बनाने में शिक्षा के साथ सभा एवं संमेलनों का भी योगदान होता है ।

   1) अच्छा 2) सजग एवं सचेत 3) बड़ा 4) संपन्न

8. 'विद्या परिषद' के लिए ..... अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द है ।

   1) Academic Council 2) Student council

   3) Scollor council 4) Knowledge council

9. 'Bachelor' हिंदी के …… का अंग्रेजी पर्याय है ।

1) स्नातक 2) अकेला 3) छात्र 4) पदवीप्राप्त

10. 'Weekly' हिंदी के …… का अंग्रेजी पर्याय है ।

1) साप्ताहिक 2) मासिक 3) पाक्षिक 4) वार्षिक

आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए ।

1. किस प्रकार के शब्दों से हिंदी की वृद्धि होती है ?
2. अंग्रेजी में 'जन-संचार' को क्या कहा जाता है ?
3. 'हास्य समाचार पत्र' के लिए अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द कौनसा है ।
4. 'City News' के लिए कौनसा हिंदी पारिभाषिक शब्द है ?
5. मनुष्य जीवन में शिक्षा की प्रक्रिया कब तक चलती रहती है ?
6. जनमत को बनाने में कौन ठोस कार्य करते हैं ?
7. "Attach" के लिए हिंदी पारिभाषिक शब्द कौनसा है ?
8. 'आकस्मिक छुट्टी' के लिए अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द कौनसा है ?
9. "Inauguration" के लिए हिंदी पारिभाषिक शब्द कौनसा है ?
10. "Agenda" के लिए हिंदी पारिभाषिक शब्द कौनसा है ?

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

प्रयुक्त	:	अच्छी तरह से जोड़ा हुआ, लगाया हुआ, जिसका प्रयोग किया गया हो
सम्प्रेषण	:	संदेश पहुँचाना
सिफारिश	:	किसी के गुणों का दूसरे से अनुमोदन करना
उत्तरदायित्व	:	जिम्मेदारी
भूमंडलीकरण	:	वैश्वीकरण
प्रविधि	:	कार्य करने का विशेष ढ़ंग
अक्षुण्ण	:	बिना टूटा हुआ

1.6 स्वयं-अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

अ) 1) टेक्निकल 2) डॉ. माई दयाल जैन 3) संचार
4) Abstract bulletin 5) जिल्दसाजी 6) Blank paper
7) सजग एवं सचेत 8) Academic Council 9) स्नातक
10) साप्ताहिक

आ)

1. पारिभाषिक शब्दों से हिंदी की वृद्धि होती है ।
2. अंग्रेजी में 'जन-संचार' को 'Mass Communication' कहा जाता है ।
3. 'हास्य समाचार पत्र' के लिए अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द 'Comic Paper' है ।
4. 'City News' के लिए 'नगर समाचार' यह हिंदी पारिभाषिक शब्द है ।
5. मनुष्य के जीवन में शिक्षा की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है ।
6. जनमत को बनाने में सभा एवं संमेलन ठोस कार्य करते हैं ।
7. "Attach" केलिए हिंदी पारिभाषिक शब्द 'संलग्न करना' है ।
8. 'आकस्मिक छुट्टी' के लिए अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द 'Causal Leave' है ।
9. 'Inauguration' के लिए हिंदी पारिभाषिक शब्द 'उद्घाटन' है ।
10. 'Agenda' के लिए हिंदी पारिभाषिक शब्द 'कार्यसूची' है ।

1.7 सारांश

1. वैश्वीकरण के इस दौर में पूरी दुनिया समेटकर नजदीक आ गई है । विज्ञान एवं तकनीकी विकास के साथ ही संबंधित ज्ञान की विभिन्न धाराओं को विशेष रूप से समझने-समझाने की आवश्यकता महसूस होने लगी है । अत: इस दिशा में प्रशासन, विज्ञान, सूचना एवं प्रोद्योगिकी, वाणिज्य, विधि, उद्यम, कृषि आदि क्षेत्रों की भाषागत अभिव्यक्ति हेतु, उन्हें जानने हेतु तथा व्यवहार में विशिष्ट अर्थ को लेकर, प्रयोग करने हेतु जिन विशिष्ट शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें पारिभाषिक शब्दावली कहा जाता है । किसी विशिष्ट ज्ञान के क्षेत्र में एक निश्चित, निर्धारित अर्थ में प्रयुक्त होता है, वह शब्द पारिभाषिक शब्दावली की श्रेणी में आ जाता है । ज्ञान-विज्ञान से संबंधित इन विभिन्न शाखाओं के विकास के साथ ही पारिभाषिक शब्दावली के गठन की आवश्यकता महसुस हुई और इसकी अनिवार्यता को समझकर विद्वानों ने उसका निर्माण किया ।

हिंदी राजभाषा बनने के बाद 'पारिभाषिक शब्दावली' की आवश्यकता एवं अनिवार्यता और अधिक बढ़ गई । अत: विज्ञान, प्रशासन, वाणिज्य, तकनीकी, विधि एवं जनसंचार आदि विभिन्न क्षेत्रों में इस दृष्टि से किए गए प्रयासों के परिणामस्वरूप 'हिंदी पारिभाषिक शब्दावली' का सृजन हुआ है । नए शब्दों के प्रयोग से हिन्दी की व्यावहारिक, कामकाजी और प्रशासनिक क्षेत्रो में प्रगति हुई है । पारिभाषिक शब्दावली हिन्दी के प्रयोजनीय पक्ष के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है । साथ ही आज हिंदी की समृद्धि हेतु उसके पारिभाषिक रूप को विकसित करने का काम जारी है ।

2. 'विश्व-गाँव' की कल्पना का आधार विकसित जनसंचार तंत्र ही है । मानव जीवन की ज्ञान-वृद्धि तथा विकास के साथ जन-संचार का महत्व भी निरंतर बढ़ता ही जा रहा है । 'संचार' का सामान्य अर्थ है, किसी सूचना या जानकारी को दूसरों तक पहुँचाना । किसी भाव, विचार, ज्ञान या जानकारी को दूसरों तक सामूहिक रूप में पहुँचाने की प्रक्रिया को जन-संचार के नाम से जाना जाता है । मानव-समाज में समाचारपत्र, विभिन्न पत्र-पत्रिकाएँ, दूरदर्शन, रेडियो, फिल्म, संगणक आदि विविध जनसंचार माध्यमों का स्थान अहम् है । जनकल्याण, शिक्षा, जागरूकता, मनोरंजन आदि उद्देश्यों को लेकर जनसंचार माध्यम अपना किरदार निभा रहे हैं । अत्याधुनिक तकनीक के कारण इन माध्यमों में विकसित नई-नई प्रणालियों से हम नित्य लाभान्वित हो रहे हैं ।

मनुष्य-जाति के विकास में जनसंचार-माध्यमों के साथ-साथ शिक्षा का भी अनन्यसाधारण महत्व है । शिक्षा की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है । भूमंडलीकरण के इस दौर में शिक्षा क्षेत्र भी विभिन्न ज्ञान-धाराओं में विस्तारित हो गया है । विज्ञान एवं तकनीकी क्रांति में शिक्षा की भूमिका अहम् है । मानव के उत्कर्ष हेतु शिक्षा महत्वपूर्ण मायने रखती है । शिक्षा के साथ ही जनमानस को सजग एवं सचेत बनाने में सभा एवं संमेलनों का योगदान होता है । जनमत को बनाने में सभा एवं संमेलन ठोस कार्य करते हैं । इनके माध्यम से ही विचार एवं मूल्यों का प्रचार-प्रसार प्रभावी ढ़ंग से होता है ।

आज दैनंदिन व्यवहार में जनसंचार के विभिन्न माध्यम, शिक्षा तथा सभा एवं संमेलनों का स्थान बहुतही महत्वपूर्ण है । हम इनसे नित्य जुडे रहते हैं तथा लाभान्वित होते हैं । जाहीर है, इन क्षेत्रों को जानने, परखने, समझने, समझाने तथा प्रयोग एवं कार्यसिद्धि के लिए इनसे जुडे शब्दों का अध्ययन करना आवश्यक बन गया है । इस दृष्टि से 'पारिभाषिक शब्दावली' इसमें सहायक सिद्ध हो रही है । इसकी अनिवार्यता को पहचानते हुए अंग्रेजी के साथ हिंदी विद्वानों ने भी इसका सृजन किया है । आज हररोज के व्यवहार में पारिभाषिक शब्दावली के रूढ़ होने तथा उसके प्रयोग एवं विकास के कारण हिंदी समृद्ध होती जा रही है । संक्षेप में आज हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली प्रयोजनमूलक हिन्दी का महत्वपूर्ण अंग बन गई है ।

1.8 स्वाध्याय

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए ।

1. पारिभाषिक शब्दावली के स्वरूप पर प्रकाश डालिए ।
2. पारिभाषिक शब्दावली की महत्ता विशद कीजिए ।
3. 'संचार-माध्यम' से संबंधित बीस अंग्रेजी-हिंदी पारिभाषिक शब्द लिखिए ।
4. 'शिक्षा' तथा 'सभा एवं संमेलन' से संबंधित बीस अंग्रेजी-हिंदी पारिभाषिक शब्द लिखिए ।

1.9 क्षेत्रीय कार्य

दैनिक समाचार पत्र तथा इंटरनेट से लगभग दस-दस अंग्रेजी-हिंदी शब्दों को खोजिए और उनके हिंदी-अंग्रेजी पर्यायवाची शब्दों को ढूँढ़कर सूची बनाइए ।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. प्रयोजनमूलक हिंदी : विविध परिदृश्य - डॉ. रमेश चंद्र त्रिपाठी, डॉ. पवन अग्रवाल
2. प्रयोजनमूलक हिंदी : प्रासंगिकता एवं परिदृश्य - डॉ. सु. नागलक्ष्मी
3. प्रयोजनमूलक हिंदी : डॉ. दंगल झाल्टे
4. प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयोग - डॉ. दंगल झाल्टे
5. प्रयोजनमूलक हिंदी : डॉ. विनोद गोदरे
6. प्रयोजनमूलक हिंदी : अधुनातन आयाम - डॉ. अम्बादास देशमुख
7. प्रयोजनमूलक हिंदी तथा अनुवाद - प्रा. आदिनाथ सोनटक्के
8. अंग्रेजी-हिंदी पारिभाषिक शब्दकोश - डॉ. हरदेव बाहरी
9. बृहत् अंग्रेजी-हिंदी कोश (अंग्रेजी-हिंदी पर्यायवाची कोश सहित) - बदरीनाथ कपूर
10. विश्व हिंदी शब्दकोश - राकेश नाथ
11. http://hi.wikipedia.org/w/
12. http://hi.wikibooks.org/w/

इकाई 2

संदर्भ स्त्रोतों का परिचय

शब्दकोश, विश्वकोश, मुहावरें एवं कहावतें कोश, पारिभाषिक शब्दकोश, समांतर कोश (थिसारस)

अनुक्रम

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय-विवेचन

संदर्भ स्त्रोत क्या हैं ?

स्वरूप एवं महत्त्व

'कोश' शब्द का अर्थ

कोश-लेखन की परंपरा / इतिहास

2.3.1 शब्दकोश

शब्दकोश के प्रकार

अ) भाषा के आधार पर शब्दकोश के भेद

1) एकभाषी शब्दकोश

2) द्विभाषी तथा बहुभाषी शब्दकोश

आ) विषय शब्दकोश

इ) व्यक्तिकोश / लेखक कोश / सूक्ति कोश

2.3.2 विश्वकोश

अर्थ

परिभाषा

स्वरूप

विश्वकोश के प्रकार - (1) सर्वसाधारण या सामान्य विश्वकोश

(2) विषय - विशेषनिष्ठ विश्वकोश

महत्त्व एवं विशेषताएँ

2.3.3 मुहावरें एवं कहावतें कोश

अर्थ एवं परिभाषाएँ

स्वरूप

निर्माण स्त्रोत

उपयोगिता एवं महत्त्व

अंतर

निष्कर्ष

2.3.4 पारिभाषिक शब्दकोश

अर्थ एवं परिभाषाएँ

स्वरूप

महत्त्व एवं उपयोगिता

2.3.5 समांतर कोश (थिसारस)

अर्थ एवं परिभाषाएँ

स्वरूप

समांतर कोश का इतिहास

महत्त्व

2.4 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

2.6 स्वयं-अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

2.7 सारांश

2.8 स्वाध्याय

2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने पर आप -

- संदर्भ स्त्रोतों के व्यापक स्वरूप से परिचित होंगे ।
- शब्दकोश, विश्वकोश, मुहावरें तथा कहावतें कोश, पारिभाषिक शब्दकोश, समांतर कोश, इन स्त्रोतों की विस्तृत जानकारी प्राप्त करेंगे तथा उनकी व्याख्या की क्षमता हासील कर पायेंगे ।
- अनुवाद, समीक्षा, अनुसंधान एवं अध्ययन कार्य में उनके उपयोग की प्रेरणा एवं कौशल आत्मसात कर पायेंगे ।

2.2 प्रस्तावना

आज 21 वी सदी में हिंदी भाषा ने अपनी स्वतंत्र पहचान दी है । प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी, विधी, प्रशासन, प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में उसका अभिनिवेश अभिनंदनीय है । वह रोजी रोटी की 'अर्थ' पूर्ण भाषा बन गयी है । विश्वबाजार के स्तर पर उसका व्यावसायिक रूप गतिशील है । संचार क्षेत्र में माध्यम भाषा के रूप में उसने अपनी सशक्त पहचान सिद्ध की है ।

प्रयोजनमूलक हिंदी की विशेषता है, उसकी प्रयोजनीयता, क्योंकि प्रयोजनमूलक हिंदी वर्तमान युग में उपजीविका की, रोजगार के तमाम आसारों की प्रमुख स्त्रोत बन चुकी है । आज वह राजभाषा, राष्ट्रभाषा (मुँह बोली), संपर्क भाषा, संचार-माध्यम भाषा, व्यवसाय एवं उद्योग में कार्यरत भाषा, जनभाषा, साहित्यिक भाषा, अनुवाद हेतु माध्यम भाषा के रूप में अपने बहुमुखी दायीत्व को निभा रही है । अत: हिंदी के अन्य रूपों की भाँति ही उसके प्रयोजनमूलक रूप का अध्ययन - विश्लेषण करना और इसी हेतु उसके विविध संदर्भ स्त्रोतों की जानकारी ग्रहण कर लेना आवश्यक है ।

2.3 विषय विवेचन

संदर्भ स्त्रोत क्या है ?

'शब्दकोश' के अनुसार 'संदर्भ' शब्द का अर्थ है - (1) रचना, (2) निबंध, लेख, (3) लघु किताब, (4) विस्तार, फैलाव, (5) वह पुस्तक जिस में किसी अन्य पुस्तक में आयी हुयी किसी गुढ बात का स्पष्टीकरण हो, (6) रेफरंस बुक, (7) प्रकरण, प्रसंग, (8) कॉन्टेक्स्ट, (9) वह पुस्तक जिसमें अनेक प्रकार की बातों का संग्रह है । तो, 'स्त्रोत' शब्द का अर्थ है - उगम, मूलस्थान, मार्ग, कहीं से निकलकर बराबर बहती रहनेवाली जल की छोटी धारा, झरना, नदी की शाखा, नहर ।

'संदर्भ' शब्द का सामान्य अर्थ है - 'जानकारी' और 'स्त्रोत' का अर्थ है - मार्ग । अर्थात विषय के बारें में जानकारी देनेवाला एक मार्ग, जिसके आधार पर विषय का अर्थ, परिचय एवं महत्त्व की प्रामाणिकता का मूल्यांकन किया जा सके ।

डॉ. धीरेंद्र वर्मा द्वारा संपादित 'हिंदी साहित्य कोश- भाग 1' में 'संदर्भ-साहित्य' संज्ञा को इसप्रकार स्पष्ट किया है, जो 'संदर्भ-स्त्रोत' संज्ञा के अधिक नज़दीक है । ''किसी विषय की विशेष जानकारी देनेवाली सामग्री को सन्दर्भ सामग्री कहते हैं । इस सामग्री का उपयोग सामान्य पठन-पाठन के लिए नहीं किया जाता । सन्दर्भ साहित्य को पाठ-साहित्य सम्बन्धी विशेष सूचनाएँ पाने के लिए देखा जाता है । विविध प्रकार के कोशों, थीसीसों, साहित्य के इतिहासों, परिचय ग्रंथों आदि को संदर्भ साहित्य माना जा सकता है । हिंदी में यह कार्य हिंदी प्रचार संस्थाओं के मुखपत्रों, विश्वविद्यालयों के हिंदी विभागों तथा अनेक विद्वानों द्वारा होता आ रहा है ।''

हेरॉडस् लायब्रेरिअन्स ग्लॉसरी ॲण्ड रेफरन्स बुक (संस्करण 1990) में संदर्भ स्त्रोत के अंतर्गत आनेवाले 'संदर्भ ग्रंथ' की परिभाषा इसप्रकार दी है -

"Books such as dictionries, encyclopedias, gazetteers, yearbooks, directories, concordances, indexes bibliographies and atlases which are complied to supply definite pieaces of information of verying extent and intended be referred to rather than real through."

इससे स्पष्ट होता है कि शब्दकोश, विश्वकोश, स्थल वर्णन कोश, वार्षिकी, संदर्भ सूची, निर्देश उल्लेख सूची, सूचीपत्र, ॲटलासेस, प्रबंध, साहित्य के इतिहास एवं परिचय ग्रंथ आदि ग्रंथ संदर्भ स्त्रोत हैं । पाठक को विशेष जानकारी प्रदान करना, उनकी जिज्ञासाओं का समाधान करना इनका उद्देश रहता है ।

स्वरूप एवं महत्त्व

आधुनिक युग ज्ञान-विज्ञान के व्यापक प्रचार-प्रसार का युग है । इस युग में संदर्भ-ग्रंथों का महत्त्व अनिवार्य है । वह आवश्यकता के रूप में बढ रहा है । क्योंकि, यह प्रामाणिक जानकारी का प्रामाणिक संकलन है । समयानुसार इनका संशोधन, परिवर्धन होता रहता है । समय के साथ उपलब्ध हो रही नित-नूतन सामग्री, तथ्य, इसमें समाविष्ठ होते रहते हैं । जैसे 'एनसायक्लोपीडिया ब्रिटानिका' का सूत्रपात 1768 ई. में हुआ था । 1771 ई. में उसके केवल तीन खंड थे । 1956 तक उसके 24 खंड हो गए । साथ ही वार्षिक पुस्तक तथा पुस्तकालय, शोधसेवा की योजनाएँ भी 'एनसायक्लोपीडिया ब्रिटानिका' के अंतर्गत चलती रहती है । इसी प्रकार महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे, महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कृति मंडल, काशी नागरी प्रचारिणी सभा के कई 'कोशों' तथा बृहद हिंदी कोश, नालंदा हिंदी शब्द सागर आदि पुन: प्रकाशित हो चुके हैं ।

विद्यार्थी, अध्यापक, शोधार्थी, अनुवादक, समीक्षक सभी के लिए संदर्भ स्त्रोत सहायक की भूमिका निभाते हैं । पाठ्यक्रम के अध्ययन में प्रामाणिक अर्थ निर्धारण के लिए, उत्पन्न जिज्ञासाओं-आशंकाओं का समाधान पाने के लिए संदर्भ स्त्रोत सच्चे मार्गदर्शक साबीत होते हैं ।

ज्ञान-विज्ञान एवं सूचना तकनीक के प्रगतीशील जमाने में संदर्भ स्त्रोतों का स्वरूप बहुआयामी हो गया है । श्रीपाद जोशी ने उर्दू-मराठी शब्दकोश (तीन खंड) संपादित करते हुए वृत्तपत्रों, पुस्तकों, नियतकालीक तथा भारतीय एवं पाकिस्तानी आकाशवाणी से संदर्भ सामग्री जुटाने का काम किया था ।

आज विभिन्न प्रकार के कोश लिखे जा रहे हैं । शब्दकोश, विश्वकोश, परिभाषा कोश, चरित्र कोश, व्यक्ति कोश, एक भाषी तथा बहुभाषी शब्दकोश, सामान्य तथा विशेष शब्दकोश, विषय कोश, विज्ञान-तकनीकी-विधी शब्दकोश, विभिन्न समाजशास्त्रीय शब्दकोश, संस्कृति कोश, साहित्य कोश, राज कोश, वर्णन कोश, क्रीडा एवं कृषि ज्ञानकोश, पर्यायवाची कोश, लोकोक्ति-मुहावरां कोश, समांतर कोश आदि विभिन्न प्रकार के कोश नवीनतम रूपों में निकल रहे हैं, कुछ परिवर्धीत, संशोधित कर पुनर्प्रकाशित हो रहे हैं ।

'कोश' शब्द का अर्थ

'कोश' शब्द का शब्दकोशगत अर्थ है - खजाना, संग्रह, संचित राशी, तिजोरी, खदान, विषय, संज्ञा का संकलित विवेचन करनेवाला ग्रंथ, शब्द संकलन, आवरण, पटल, विज्ञान, मन, प्राण आदि ।

उपर्युक्त विभिन्न अर्थों में से 'विषय-संज्ञा का संकलित विवेचन करनेवाला ग्रंथ' यह 'कोश' साहित्य के अधिक समीचीन है ।

अंग्रेजी में कोश के लिए सर्वप्रचलित शब्द है 'Encyclopedia', जो मूलत: ग्रीक शब्द 'Enkyklious paideia' शब्द से निर्मित है, जिसका हिंदी में अर्थ होता है - ज्ञानचक्र (a circle of knowledge or instructions), 'ज्ञानचक्र' इस संज्ञा का अर्थ है - एक या एक से अधिक विषयों की सर्वसमावेशक जानकारी ।

'ब्रिटानिका विश्वकोश' में कोश की परिभाषा इसप्रकार दी है -

'कोश एक पुस्तक है, जिसमें किसी भाषा के शब्द तथा उसके अर्थ या तो उसी भाषा में या किसी दूसरी भाषा में साधारणत: वर्णानुक्रम में दिये जाते हैं । प्राय: शब्दों के उच्चारण, उनकी उत्पत्ति और प्रयोग का विवरण उसमें होता है ।

इस परिभाषा से कोश की कुछ विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं -

1. कोश एक ग्रंथ है ।
2. उसमें किसी भाषा के शब्द और अर्थ उसी या किसी अन्य भाषा में दिए जाते हैं ।
3. ये शब्द वर्णानुक्रम से रखे जाते हैं ।
4. इन शब्दों के उच्चारण, उनकी उत्पत्ति और प्रयोग का विवरण उसमें दिया जाता है ।

कोश लेखन की परंपरा / इतिहास

मानव संस्कृति के विकास के साथ-साथ कोशविद्या भी विकसित होती गयी । शब्द-संकलन के प्रयास में 'कोश' निर्मिती की प्रक्रिया जारी रही । कोश में शब्दों का संग्रह किया जाता है । **दुनिया का सब से पहला शब्द-संकलन भारत में बना ।** यह परंपरा वेदों जितनी पुरानी है । प्रजापति कश्यप का 'निघंटु' संसार का अतीव प्राचीन शब्द संकलन है । इस में 1800 वैदिक शब्दों का संग्रह है । इसी की **महर्षि यास्क ने की हुयी व्याख्या 'निरूक्त' दुनिया का सब से पहला शब्दार्थ कोश (डिक्शनरी) तथा विश्वकोश (एनसायक्लोपीडिया)** है । इसी परंपरा में आगे चलकर छठी तथा सातवीं सदी में अमरसिंह ने 'कृतनामलिंगानुशासन' या 'त्रिकांड' नाम से लिखा, जो विश्व में 'अमरकोश' के नाम से परिचित है । **'अमरकोश' को जगत् का सर्वप्रथम 'समांतर कोश' (थिसारस) कहते हैं ।**

ईसा पूर्व सातवीं सदी में भारत के बाहर अक्कादियाई संस्कृति ने प्राचीन काल में शब्द संकलन की एक सूची बनायी थी । ईसा से तीसरी सदी के पहले की चीनी भाषा में एक कोश मिलता है 'ईर्या' ।

आधुनिक काल में आकर सन - 1755 में इग्लैंड में सैमुएल जानसन ने 'आधुनिक कोश' का प्रारंभ किया । 'सैमुएल जॉन्सन डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश लैंग्वेज' ने कोशलेखन को नया आयाम दिया । सन - 1806 में नोहा, वैन्स्टर्स की 'नोहा वैब्स्टर्स ए कंपैंडियस डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश लैंग्वेज' प्रकाशित हुयी । यह शब्दकोश विशेष रूप से मौलीक रचना सिद्ध हुयी, क्योंकि यह आज तक के कोशलेखन के इतिहास की सब से प्रथम स्तरीय एवं आश्चर्यकारक रचना थी । इसमें साहित्यिक शब्दावली के साथ-साथ विज्ञान-क्षेत्र का भी परिचय मिलता है । यह कोश विशेष सफल रहा । वैबस्टर के पश्चात अंग्रेजी कोशों में लक्षणीय संशोधन होते रहें, जिससे एक नूतन प्रकाशन की प्रक्रिया गतिमान रही ।

आधुनिक काल में आकर 'कोश विद्या' व्यापक रूप से विकसित हो गयी है । यहाँ हम अध्ययनार्थ 'विविध कोश-भेद' संदर्भ स्त्रोतों की विस्तृत चर्चा करेंगे ।

1) शब्दकोश

सामान्यत: वैविध्यपूर्ण शब्दों का एकत्रित संकलन शब्दकोश है । डॉ. महेंद्रकुमार मिश्र द्वारा संपादित 'हिंदी विश्वकोश- खंड-5' में 'शब्दकोश' का अर्थ इसप्रकार दिया है - 'अर्थ और पर्याय के साथ एकत्रित किए गए शब्द-समूह का ग्रंथ ।'

नालंदा विशाल शब्द सागर - (1) वह ग्रंथ जिसमें अक्षरक्रम से शब्दों के अर्थ या पर्यायवाची शब्दों का संग्रह किया गया हो । (2) डिक्शनरी, विकिपीडिया के अनुसार - एक बडी सूची या ऐसा ग्रंथ जिसमें शब्दों की वर्तनी, उनकी व्युत्पत्ति, नामकरण, निर्देश, अर्थ, परिभाषा, प्रयोग और पदार्थ आदि का समावेश होता है ।

'शब्दकोश' एवं 'शब्द-संकलन' दोनों वस्तुत: भिन्न शब्द हैं । अंग्रेजी 'Dictionary' का हिंदी पर्यायवाची 'शब्दकोश' है, तो अंग्रेजी 'Glossary' का हिंदी पर्याय शब्दसंग्रह है । ग्रंथ की समाप्ती के बाद दी हुई अर्थपूर्ण शब्दों की सूची शब्दसंग्रह है, तो विशिष्ट पृष्ठ का, सम्बन्धित ग्रंथ के विशिष्ट संदर्भ में उस शब्द का अर्थ शब्दकोश में दिया जाता है । 'शब्दकोश' यह संकल्पना व्यापक अर्थ की अभिव्यक्ति करती है ।

शब्दकोश की उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर शब्दकोश का स्वरूप इसप्रकार स्पष्ट किया जा सकता है ।

1) शब्दकोश में शब्दों की वर्तनी, व्युत्पत्ति, व्याकरण-निर्देश दिए जाते हैं ।

2) शब्दों के एक साथ कई अर्थ स्पष्ट किए जाते हैं ।

3) संदर्भ के अनुसार पाठक सही शब्दार्थ ग्रहण कर सकता है ।

शब्दकोश एक महत्त्वपूर्ण संदर्भ सामग्री है । विद्यार्थी, अध्यापक, अनुवादक, अनुसंधानकर्ता, समीक्षक, अध्येता सभी के लिए ये विशेष उपयोगी रहते हैं । किसी भी प्रकार के लेखन के लिए उपयुक्त एवं आवश्यक संदर्भ ग्रंथ हिंदी में 'डिक्शनरी' या तत्सम ग्रंथों के लिए 'कोश' संज्ञा ही प्रचलित है ।

शब्दकोश में शब्दांगों की चार प्रकार की जानकारी दी जाती है -

1) शब्द का लिखित रूप (Spelling), 2) उच्चारण रूप (प्रोनॉन्सिएशन), 3) व्युत्पत्तिरूप (एटिमॉलोजी) तथा 4) संक्षिप्त अर्थ या व्याख्या । इसके साथ अनेक महत्त्वपूर्ण शब्दकोशों में शब्दों के प्रयोग, प्रमाणभूत वाक्य आदि तथ्य उदाहरण के साथ दिए जाते हैं । शब्दों से सम्बद्ध इन विविध अंगों में से एक-दो को प्रधानता देकर व्युत्पत्तिकोश, उच्चारण कोश आदि शब्दकोश बनाये जाते हैं ।

शब्दकोश इतना महत्त्वपूर्ण संदर्भ है, कि उसके छोटे से छोटे संस्करण को लेकर बृहद खंड तक उसकी व्याप्ति मिलती है । वह जितना बडा, उतनी ही उसकी संदर्भवत्ता एवं महत्ता अधिक, प्रमाणभूत मानी जाती है । आजकल 'शब्दकोश' को सर्वसमावेशक बनाने का भी प्रयत्न होता है । उसमें विशिष्ट शब्दों की दो-तीन पंक्तियों में व्याख्या दी जाती है । जैसे - विख्यात व्यक्ति की चरित्रात्मक जानकारी विश्व प्रसिद्ध स्थानों, नगरों की भी जानकारी दी जाती है । इसप्रकार विश्वकोश के निकट आने लगे हैं ।

शब्दों के अर्थ-उच्चारण के साथ ही कई कोशों के अंत में विविध प्रकार की उपयुक्त एवं संदर्भात्मक जानकारी दी जाती है । जैसे - विविध संक्षिप्त रूप, भार-मापन आदि की तालिकाएँ, विविध ज्ञानक्षेत्रों में (जैसे - गणित, विज्ञान, वैद्यक, वाणिज्य, अर्थ, संगीत आदि ।) प्रयुक्त होनेवाले विभिन्न सांकेतिक चिन्ह, विभिन्न देशों के सिक्के, लम्बाई गिनने के परिमाण, साहित्यिक क्षेत्र के विख्यात व्यक्ति के चित्र आदि जानकारी भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण होती है ।

शोधकर्ता के लिए शब्दकोश की सहायता अवश्यमेव, अपरिहार्य होती है । विविध संज्ञा, अवधारणाओं की परिभाषाएँ, व्याख्याएँ,अर्थ देखने के लिए 'शब्दकोश' सच्चे मार्गदर्शक होते हैं । 'शब्दकोश' के प्रारंभ में इस दृष्टि से दिए हुए निर्देश उसके प्रयोग के संदर्भ में विशेष महत्त्वपूर्ण रहते हैं ।

अठारहवीं शती से अंग्रेजी में शब्दकोश तैयार हो रहे हैं । डॉ. जॉन्सन का शब्दकोश इस दृष्टि से प्रथम प्रयास है । भारतीय परम्परा में अमरसिंह का संस्कृत 'अमरकोश' ईसा की छठी-सातवीं शती में लिखा हुआ यह विश्व स्तर का सर्वप्रथम कोश है । इसकी रचना स्वतंत्र तथा तत्कालीन अवधारणाओं से मिलती-जुलती है । इसके अतिरिक्त 'निघंटु', 'निरूक्त' के प्रयास भी शब्दकोश ही है । वे भी उतने ही प्राचीन है । छत्रपति शिवाजी महाराज ने 'राज-व्यवहार कोश' बनवाया था ।

आधुनिक काल में 'अमर शब्दकोश' के स्वरूप में लक्षणीय परिवर्तन एवं परिवर्धन दिखाई देता है । भाषा के आधार पर एकभाषी शब्दकोश, द्वीभाषी शब्दकोश, बहुभाषी शब्दकोश आज उपलब्ध हैं । सामान्य शब्दकोश एवं विशेष शब्दकोश आदि शब्दकोश के स्थूल भेद हैं । विषय के आधार पर विभिन्न शब्दकोश जैसे - विज्ञान, विधि, प्रशासन, तकनीक, समाजशास्त्रीय आदि विषयों के शब्दकोश आज उपलब्ध हैं । कुछ शब्दकोश सचित्र, वर्णनप्रधान होते हैं । अधिकतर शब्दकोशों में शब्दों के उच्चारण भी दिए जाते हैं । अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक लिपि में, देवनागरी में तथा ऑडियो संचिका के रूप में उच्चारण की सुविधा से युक्त 'शब्दकोश' भी आज उपलब्ध हैं । ये शब्दकोश काफी मात्रा में उपयोग में लाये जा रहे हैं ।

शब्दकोश के प्रकार

अ) भाषा के आधार पर शब्दकोश के भेद

भाषा के आधार पर शब्दकोश के निम्नलिखित भेद किए गए हैं -

1) एकभाषी शब्दकोश

इसके अंतर्गत एक ही भाषा में शब्द एवं उसके अर्थ को रखा जाता है । कठिण शब्द, संज्ञा, विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित शब्दावली का अर्थ सरलता से उसी भाषा में स्पष्ट दिया जाता है । ऐसे शब्दकोश प्रत्येक भाषा में उपलब्ध हैं । प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा स्तर तक इसका अधिकतम प्रयोग किया जाता है । हिंदी भाषा में नालंदा विशाल शब्द सागर - सं. श्री. नवलजी, (शब्द संख्या 1,50,000) और बृहद हिंदी कोश - सं. कालीका प्रसाद (शब्द संख्या 1,45,000) इसके बहुप्रचलित उदाहरण हैं । ये शब्दकोश सर्वोपयोगी, बहुप्रचलित तथा अल्पप्रचलित भी होते हैं ।

2) द्विभाषी तथा बहुभाषी शब्दकोश

आज द्विभाषी तथा बहुभाषी शब्दकोशों की संख्या बढ रही हैं । अकारादी क्रम से एक भाषा के शब्दों को दूसरी भाषा में या एक से अधिक भाषाओं में उनके अर्थ के साथ रखा जाता है ।

ब्रिटिशों के आक्रमण के बाद पाश्चात्य संस्कृति, साहित्य, भाषक शिक्षा के माध्यम से भारतीय भाषाओं में वैचारीक एवं भावनिक आदान-प्रदान होने लगा है । स्वतंत्रता आंदोलन एवं राजकीय एकात्मता से भाषाएँ एक-दूसरे के समीप आ गयी । संस्कृति-साहित्य-विचार के स्तर पर, आपसी आदान-प्रदान के लिए, राष्ट्रीय एकता अधिक दृढ बनाने हेतु आपसी संवाद एवं अनुवाद की आवश्यकता बढती गयी । इसी खातीर 'द्वीभाषा कोश' अधिक मात्रा में प्रकाशित होने लगे ।

विशिष्ट भाषा एवं उसके साहित्य का अध्ययन करते हुए ये कोश मौलिक संदर्भ ग्रंथ की भूमिका निभाते हैं । अनुवाद एवं शोधकार्य में मार्गदर्शक, सहायक रहते हैं । अत: इन संदर्भ कोशों की संख्या आये दिन बढती जा रही हैं । यहाँ कुछ उदाहरण दृष्टव्य है - उर्दू, मराठी शब्दकोश सं. श्रीपाद जोशी, उर्दू-हिंदी शब्दकोश - श्रीपाद जोशी, अंग्रेजी-हिंदी-मराठी त्रैभाषिक शब्दकोश, सुलभ हिंदी-मराठी शब्दकोश सं. य. रा. दाते, पंच्चानवें भाषाओं का समेकित पर्याय शब्दकोश - सं. डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह एवं शशिकला, उर्दू-मराठी-हिंदी-त्रैभाषिक शब्दकोश, बृहद हिंदी-मराठी शब्दकोश सं. गो.प. लेने आदि ।

आ) विषय शब्दकोश

इस वर्ग में सभी विषयों के शब्दकोश समाविष्ठ होते हैं । ज्ञानशाखा के विस्तार के कारण विषय शब्दकोशों की आवश्यकता एवं माँग बढ रही हैं । साहित्य एवं भाषा के साथ ही सामाजिक शास्त्र, विज्ञान, गणित, तकनीकी, विधि, प्रशासन, वाणिज्य आदि शाखाओं में पढ रहे विद्यार्थी, अध्यापक, इन विषयों का सैद्धांतिक लेखन करनेवाले लेखक, अनुवादक, अनुसंधाता सभी के लिए ये संदर्भ कोश अत्यंत उपयोगी रहते हैं ।

'Circle of Knowledge' अर्थात 'ज्ञानचक्र' इस संकल्पना के अनुसार सभी विषय समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं । कोई एक विषय साधारण और कोई एक विषय विशिष्ट यह धारणा गलत साबित हो रही है । अत: प्रत्येक विषय का अध्ययन आवश्यक है । अत: सभी विषयों के 'शब्दकोश' प्रकाशित हो चुके हैं । समय के साथ उनकी माँग बढ रही हैं । जैसे - विज्ञान शब्दकोश, चिकित्सा शब्दकोश, विधि शब्दकोश, गणित शब्दकोश, राजकोश, शिवयुगीन उर्दू-मराठी राजव्यवहार कोश सं. अश्विनीकुमार दत्तात्रेय मराठे आदि ।

इ) व्यक्तिकोश / लेखक कोश / सूक्ति कोश

कोई विख्यात व्यक्तित्त्व, कोई विशिष्ट साहित्यकार, किसी महान या सुप्रसिद्ध कवि का मौलिक काव्यग्रंथ की संज्ञा, संकल्पनाओं, विशिष्ठ शब्दों, उक्तियों, सुक्तियों एवं साहित्य तथा साहित्यकार विशेष का परिचय देनेवाले संदर्भ ग्रंथ के रूप में इन कोशों का महत्त्व वैशिष्ट्यपूर्ण हैं ।

ये शब्दकोश प्रत्येक विद्यार्थी के लिए ज्ञान-यात्रा में एक मानचित्र एवं मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं । अध्यापकों के लिए भी साहित्य में विवेचित प्राक्कल्पनाओं (संकल्पना) संबंधी सूक्ष्म जानकारी प्राप्त होती है । कवि के पदों को, काव्यार्थ को, ठीक-ठीक समझने में ये 'शब्दकोश' अनुपम स्त्रोत सिद्ध होते हैं । पुस्तकालयों के लिए इसका अनिवार्य महत्त्व है । विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय तक के छात्रों के लिए ये उपयोगी रहते हैं । इन शब्दकोशों में कुछ-एक स्थानों पर कविता के पदों के संदर्भ भी समझा दिए जाते हैं । उदा. भूषण शब्दकोश सं. डॉ. शकुंतला पांचाल ।

विशिष्ठ काव्यग्रंथ तथा साहित्यकार के साहित्य में निर्दिष्ट सूक्तियाँ एकसाथ देखने के लिए, साहित्यकार की सर्जनशील सौंदर्य दृष्टि का आकलन, विश्लेषण करने के लिए ये सूक्तिकोश मौलिक संदर्भ ग्रंथ का काम करते हैं । किसी ग्रंथ तथा साहित्यकार की विशिष्ट रचना का विशिष्ट सूक्ति-संदर्भ देखने के लिए ये कोश बहुत उपयोगी हैं । उदा. अनिलकुमार द्वारा प्रस्तुत तुलसी सूक्तिकोश, रवीन्द्र सूक्तिकोश, प्रेमचंद सूक्तिकोश, प्रसाद सूक्तिकोश, निराला सूक्ति कोश आदि ।

2.3 विश्वकोश

अर्थ

प्राय: 'विश्वकोश' विश्वस्तरीय सभी प्रकार की जानकारी देनेवाला संदर्भ स्त्रोत है । इसके अंतर्गत कला, साहित्य, भाषा, तकनीकी, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, सामाजिक शास्त्र, संस्कृति आदि सभी विषयों एवं क्षेत्रों की प्रामाणिक जानकरी संकलित रहती हैं । विश्वस्तर के सभी विषयों एवं क्षेत्रों से सम्बन्धित शब्दों, संकल्पनाओं, विचारधाराओं, उपलब्धियों का प्रामाणिक तथ्यांकन एवं अर्थपूर्ण जानकरी देनेवाला संदर्भ ग्रंथ 'विश्वकोश' है । 'विश्वकोश', अंग्रेजी 'एन्सायक्लोपीडिया' शब्द का हिंदीकरण है । इसे 'ज्ञानकोश' भी कहते हैं ।

परिभाषा

विभिन्न संदर्भ ग्रंथों में 'विश्वकोश' को इसप्रकार पारिभाषित किया है ।

1) डॉ. महेंद्रकुमार मिश्र द्वारा संपादित 'हिंदी विश्वकोश'

'वह कोशग्रंथ जिसमें सब प्रकार के शब्दों या विषयों का सविस्तार वर्णन हो ।' (पृ,क्र. 1763 - खंड -5.)

2) श्री नवलजी द्वारा संपादित नालंदा विशाल शब्द सागर

'वह ग्रंथ जिसमें संसार के सब विषयों का विस्तृत विवरण रहता है ।' (पृ. क्र. 1286)

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर 'विश्वकोश' के स्वरूप पर प्रकाश डाला जा सकता है ।

स्वरूप

शोधकार्य करनेवाले शोधार्थी के लिए 'विश्वकोश' अपरिहार्य और अत्यावश्यक संदर्भ स्त्रोत है । अपने शोधकार्य से सम्बन्धित विशिष्ठ विषय या संदर्भ के अर्थ की जाँच-पडताल के लिए, उनकी प्रामाणिकता निर्धारित करने हेतु 'विश्वकोश' आधारभूत संदर्भ-सामग्री है । प्राथमिक जानकारी पाने के लिए 'विश्वकोश' अध्येता की विशेष सहायता करते हैं । कई प्रकार के विश्वकोशों में महत्त्वपूर्ण लेखों के अंत में उस विषय से सम्बन्धित संदर्भ-सूची भी दी जाती है । उदा. धीरेन्द्र वर्मा द्वारा संपादित 'हिंदी साहित्य कोश' भाग 1 व 2 '। अध्येता आवश्यकता के अनुसार उन्हें देख भी सकता है । वैज्ञानिक या शास्त्रीय, तकनीकी विषयों से सम्बन्धित विविध संकल्पनाओं, अवधारणाओं का स्वरूप समझने के लिए, उससे सम्बन्धित पारिभाषिक-सांकेतिक शब्दावली के लेखन एवं संप्रेषण मेंयह सामग्री विशेष रूप से उपयोगी रहती है । इस दृष्टि से भी 'विश्वकोश' सही अर्थ में ज्ञान प्राप्ति का महत्तवपूर्ण स्त्रोत है ।

नित-नूतन विकसित हो रहे ज्ञान-विज्ञान की अधुनातन शाखाओं, विविध विषयों को कैसे पारिभाषित एवं प्रस्तुत किया जा सके ? इस मूलभूत आवश्यकता ने विश्वकोश साहित्य को जन्म दिया । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शिक्षा का द्रुतगति प्रचार-प्रसार हो गया । भारत की सभी जाति-उपजातियाँ शिक्षा ग्रहण करने लगी । ज्ञान के क्षेत्र में नयी पीढी का आत्मसंबल बढने लगा । कई विश्वविद्यालयों में हिंदी उच्च शिक्षा की माध्यम बनी । अत: विभिन्न विषयों, ज्ञानशाखाओं का सूक्ष्मज्ञान पाने के लिए, उनसे सम्बन्धित संदर्भों की प्रामाणिकता जाँचने के लिए 'विश्वकोश' की निर्मिती अपरिहार्य बन गयी । प्रत्येक विषय की सामान्य, मूलभूत एवं विशिष्ट जानकारी पाने हेतु, जिज्ञासु पाठक-अध्येताओं के समाधान हेतु 'विश्वकोश निर्मिती' एक आवश्यक प्रयास है । कहा जाता है कि 'जिज्ञासा ज्ञान की जननी है ।' मनुष्य की बढती ज्ञानलालसा ने, नये-नये क्षेत्रों से सम्बन्धित जानकारी पाने की जिज्ञासा ने ही विश्वकोश का स्वरूप बढा दिया है और भविष्य में और भी बढता रहेगा ।

'विश्वकोश' की लेखन पद्धती अन्य ग्रंथों की लेखन पद्धती से बिल्कुल अलग होती है । यह लेखनशैली सर्वथा अलग एवं स्वतंत्र रहती है । 'विश्वकोश' का उपयोग कैसे करे ? इसका मार्गदर्शन कोश के आरंभ में ही रहता है । उसके आधारपर कोश की अंतर्गत शब्दावली, संकल्पनाओं, पारिभाषिक संज्ञाओं का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं । यह शब्दावली अकारादी क्रम से दी जाती है । कुछ विश्वकोशों के अंत में परिशिष्ट भी दिए गए हैं । विश्वकोशांतर्गत लेख जानकारी प्रदान करनेवाले होते हैं । आवश्यकतानुसार विविध तालिकाएँ एवं सूचियों का भी उनमें प्रयोग रहता है ।

'ब्रिटानिका विश्वकोश' सभी दृष्टियों से परिपूर्ण एवं प्रगल्भ विश्वकोश माना जाता है । देश, भाषा, सभ्यता के अनुसार विश्वकोश के स्वरूप में अंतर आता है । ज्ञानलिप्सा एवं आवश्यकता के अनुसार नये-नये विश्वकोश

निकल रहे हैं । आजकल प्रत्येक विषय के स्वतंत्र विश्वकोश उपलब्ध हैं । जैसे हिंदी विश्वकोश, मराठी विश्वकोश, अंग्रेजी विश्वकोश, समाजविज्ञान कोश, इतिहास कोश, गणित ज्ञानकोश, कृषि ज्ञानकोश, क्रीडा ज्ञानकोश, संस्कृति कोश आदि ।

विश्वकोश के प्रकार

विश्वकोशों के दो प्रकार किए गए हैं -

1) सर्वसाधारण या सामान्य विश्वकोश ।

2) विषय - विशेषनिष्ठ विश्वकोश ।

इन भेदों की विस्तृत चर्चा डॉ. दु. का. सन्तजी ने अपनी पुस्तक 'शोधविज्ञान कोश' में की है । यहाँ हम संक्षिप्त रूप में उनका परिचय प्राप्त करेंगे ।

1) सर्वसाधारण या सामान्य विश्वकोश

ये विश्वकोश प्रमुखत: सभी विषयों से सम्बन्धित होते हैं । विश्वस्तर के सभी विषयों-क्षेत्रों की मौलिक जानकारी देनेवाले उपयोगी संदर्भ ग्रन्थ होते हैं । इनके अंतर्गत कोई एक विषय खास या महत्त्वपूर्ण नहीं होता । साधारण तथा सभी विषयों-क्षेत्रों को लेकर आवश्यक तथ्य-संकलन के लिए संदर्भ-स्त्रोत के रूप में इन्हे देखा जा सकता है । जैसे आंतर्राष्ट्रीय ज्ञानकोश - सं. मंगलदेव शर्मा एवं रामनारायण यादवेन्दु (1943), हिंदी विश्वभारती ज्ञान-विज्ञान का प्रमाणित कोश सं. कृष्ण वल्लभ द्विवेदी (1950), ज्ञान सरोवर सं. शिक्षण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली (1958) आदि ।

2) विषय-विशेषनिष्ठ विश्वकोश

वर्तमान युग में इन कोशों की संख्या बढती जा रही है । बढती हुयी ज्ञानलालसा, जीजिविषा एवं प्रत्येक विषय का सूक्ष्मज्ञान हासिल करने की कोशिश ने विषय के अनुसार ज्ञानकोशों की प्रस्तुति हो रही है । संदर्भ ग्रंथ के रूप में इनकी महत्ता एवं माँग भी बढ रही हैं । साहित्य, विज्ञान, वाणिज्य, विधि, प्रशासन, सामाजिक विज्ञान, गणित, कला, व्यवहार आदि लगभग सभी विषयों के ज्ञानकोश आज उपलब्ध हैं । जैसे, कुछ उदाहरण देखे जा सकते हैं ।

गणित ज्ञानकोश - संपादक, प्रा. ल. वा. गुर्जर - इसके अंतर्गत गणितीय पारिभाषिक परिचय, संज्ञा-संकल्पनाओं के सूत्र, आकृतियाँ आदि की विश्लेषणात्मक जानकारी उपलब्ध है ।

भारतीय साहित्य कोश - डॉ. सुरेश एवं डॉ. वीणा गौतम - इसके अंतर्गत सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य का अभ्यासपूर्ण विवेचन प्रस्तुत किया गया है ।

भारतीय संस्कृति कोश - सं. महादेवशास्त्री जोशी एवं पद्मजा होडारकर - मराठी भाषा में प्रस्तुत इस कोश में समग्र भारतीय संस्कृति का सर्वांग परिचय, महत्त्व एवं सचित्र जानकारी उपलब्ध है ।

स्वतंत्रतता सैनिक चरित्रकोश - महाराष्ट्र राज्य पश्चिमी विभाग (कोल्हापुर, पुणे, सातारा, सांगली एवं सोलापुर) - इसके अंतर्गत आधुनिक महाराष्ट्र के सामाजिक, राजनीतिक आंदोलनों का प्रबोधनात्मक परिचय, स्वतंत्रता सेनानियों का समग्र परिचय, स्वतंत्रता आंदोलन में उनका योगदान, पूरे तपशील के साथ दिया गया है ।

महत्त्व / विशेषताएँ

विश्व के स्वरूप एवं प्रकार के आधार पर 'विश्वकोश' की विशेषताएँ इस प्रकार स्पष्ट होती हैं ।

1) विश्वकोश एक मौलिक संदर्भ स्त्रोत है ।

2) वैश्विक स्तर की प्रामाणिक जानकारी पाने का विश्वसनीय मार्ग है ।

3) विश्वकोश की उपयोगिता बहुमूल्य एवं बहुआयामी है ।

4) विषय एवं क्षेत्र के आधार पर उसके अत्याधुनिक, विकसित तथा स्वतंत्र संस्करण उपलब्ध हैं ।

निष्कर्षत: हम कह सकते है कि 'विश्वकोश' मनुष्य की बढती हुयी ज्ञानलालसा की सार्थक उपलब्धि है । संदर्भ स्त्रोत के रूप में उसकी उपयोगिता एवं अनिवार्यता सर्वोपरी है ।

2.3.3 मुहावरें एवं कहावतें कोश

अर्थ एवं परिभाषाएँ

'मुहावरा' शब्द अरबी भाषा का है, जिसका अर्थ है - अभ्यास । आकार में अत्यंत छोटा या लघु होते हुए भी जो बडी बात या विचार की अभिव्यक्ति करता है, ऐसा ही वाक्यांश 'मुहावरां' कहलाता है । 'कहावत' छोटी मगर सम्पूर्ण वाक्य होती है, जो जीवन की साररूपात्मक अभिव्यक्ति होती है । 'विशिष्ट अर्थ' को प्रकट करनेवाले 'वाक्यांश' को मुहावरों कहते हैं । मुहावरां पूर्ण वाक्य नहीं होता । शब्दकोश के अनुसार 'मुहावरां' शब्द का अर्थ है - लाक्षणिक अर्थ में रूढ वाक्य या प्रयोग, अभ्यास आदि । जीवनानुभूति के सार से युक्त ये मुहावरें एवं कहावतें हमारे जातीय जीवन की, जनबोली की अनुभवजन्य धरोहर हैं ।

वस्तुत: कहावतें एवं लोकोक्तियाँ एक ही हैं । ये एक ही चीज के दो नाम हैं । 'नालंदा विशाल शब्द सागर' में 'कहावत' का अर्थ है -

1) बोलचाल में बहुत बार आनेवाला ऐसा बंधा चमत्कारपूर्ण वाक्य जिसमें कोई अनुभव या तथ्य की बात संक्षेप में कही गई हो।

2) लोकोक्ति । मसल ।

3) कही हुयी बात । उक्ति । (पृ.क्र. 220)

विकिपीडिया - 'कोई भी ऐसा वाक्यांश जो अपने साधारण अर्थ को छोडकर किसी विशेष अर्थ को व्यक्त करें, उसे 'मुहावरा' कहते हैं ।

लोकोक्ति-लोक-अनुभव से बनती है । किसी समाज ने जो कुछ अपने लंबे अनुभव से सीखा है, उसे वाक्य में बांध दिया है, ऐसे वाक्यों को ही लोकोक्ति कहते हैं । इसे कहावत, जनश्रुती आदि भी कहते हैं ।

हिंदी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश - सं. डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त

'अपने कथन की पुष्टि में किसी को शिक्षा या चेतावनी देने के उद्देश्य से, किसी बात को किसी की आड में कहने के उद्देश्य से अथवा किसी पर व्यंग्य कसने आदि के लिए स्वतंत्र अर्थ रखनेवाली जिस लोकप्रचलित तथा सामान्यत: सारगर्भित, संक्षिप्त एवं चटपटी उक्ति का लोग प्रयोग करते हैं, उसे 'लोकोक्ति' अथवा 'कहावत' नाम दिया जा सकता है ।'' ..... 'मुहावरा' अरबी भाषा का शब्द है । इसका अर्थ है - परस्पर बातचीत और सवाल-जवाब करना । अरबी में 'मुहावरां' शब्द का अर्थ संकुचित है, परन्तु हिंदी एवं उर्दू में यह अधिक व्यापक हो गया है । यहाँ लक्षणा अथवा व्यंजना द्वारा सिद्ध वाक्य को ही 'मुहावरां' कहते हैं ।''

भारतीय साहित्य कोश - भाग 3

लेखक **अजयकुमार ओझाजी** ने लोकोक्ति को इसप्रकार व्याख्यायित किया है -

'लोकोक्ति' शब्द बडा ही व्यापक अर्थ रखता है । लोक की किसी भी उक्ति को 'लोकोक्ति' कह सकते है । चाहे वह कहावत हो, चाहे पहेली अथवा सूक्ति । लोकोक्तियाँ - जीवन की अनुभूतियों से संचित, जो व्यक्ति विशेष की न होकर पूरे मानव समाज की भावाभिव्यक्ति होती हैं । भले ही उसका सृष्टा कोई एक व्यक्ति ही हो, किन्तु उस पर अधिकार सभी का होता है । सभी इन्हें लोकमानस की अनुभूति मानते हैं । ये युग-युग के अनुभवों की संचित अक्षय निधि हैं । किसी बडी बात को हृदयंगम कराने के लिए एक छोटी सी लोकोक्ति पर्याप्त होती है । (पृ.क्र.7, सं. डॉ. सुरेश एवं डॉ. वीणा गौतम)

'Advanced Learners Dictionary' में **A. S. Hornby** ने कहा है कि, 'मुहावरां' शब्दों का वह क्रम या समूह है जिसमें सब शब्दों का अर्थ एक साथ मिलाकर किया जाता है ।

Chamber's Twentieth Century Dictionary के अनुसार किसी भाषा की विशिष्ट अभिव्यंजन - पध्दति को 'मुहवरा' कहते हैं ।

Oxford Concise Dictionary के अनुसार किसी भाषा की अभिव्यंजना से विशिष्ट रूप को 'मुहावरां' कहते हैं ।

'मुहावरा' की सबसे अधिक व्यापक एवं सन्तोषजनक परिभाषा डॉ. ओमप्रकाश गुप्त ने इसप्रकार की है -

''प्राय: शारिरीक चेष्टाओं, अस्पष्ट ध्वनियों, कहानियों और कहावतों अथवा भाषा के कतिपय विलक्षण प्रयोगों के अनुकरण या आधार पर निर्मित और अभिधेयार्थ से भिन्न कोई विशेष अर्थ देनेवाले किसी भाषा के गढे हुए रूढ वाक्य, वाक्यांश या शब्दसमूह को 'मुहावरा' कहते हैं ।''

जिसप्रकार अलंकारों के प्रयोग से कविता में सुंदरता, सरसता निर्माण होती है, उसीप्रकार लोकोक्ति, मुहावरों के प्रयोग से भाषा में जान आ जाती है । भाषा का सौंदर्य, उसकी अभिव्यंजन क्षमता, भावप्रवणता बढ जाती है । किसी भाषा में प्रयुक्त लोकोक्तियों एवं मुहावरों को देखकर उस भाषिक समाज के विकास के स्तर का अनुमान लगाया जा सकता है । ये मनुष्य के प्रदीर्घ अनुभव एवं ज्ञान के सूत्र हैं ।

स्वरूप

जनमानस में रूढ, लोकजीवन में प्रचलित इन्ही कहावतों एवं मुहावरों का संकलित रूप ही 'मुहावरें-कहावतें कोश' हैं । हिंदी भाषा एवं साहित्य के अंतर्गत यह संकलन समय-समय पर होता रहा है । कुछ संकलन संयुक्तिक अर्थात, मुहावरें एवं कहावतों के मिलते हैं, तो कुछ संकलन स्वतंत्र रूप से (कहावतें एवं मुहावरों के) भी पाये जाते हैं । जैसे, डॉ. भोलानाथ तिवारी का 'हिंदी मुहावरा कोश', 'राजपाल मुहावरा कोश' - सं. हरिवंश राय शर्मा, राजपाल लोकोक्ति कोश - सं. हरिवंश राय शर्मा, लोकोक्ति एवं मुहावरां कोश - सं. राजकुमार सिंह आदि ।

इन कोशों में अकारादी क्रम से मुहावरों तथा लोकोक्तियों का विवरण दिया जाता है । कुछ कोशों में मुहावरों के अर्थ के साथ वाक्य में उपयोग भी प्रस्तुत किए हैं । जैसे किताब महल प्रकाशन का डॉ. भोलानाथ तिवारी द्वारा संपादित 'हिंदी मुहावरां कोश' देखा जा सकता है । यह हिंदी का एक बृहद मुहावरा कोश है । इसमें मुहावरों की संख्या प्राय: 12,000 हैं । इसीतरह उपर्युक्त अन्य कोश भी इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं ।

लोकोक्तियों और मुहावरों में भाषा की लक्षणा एवं व्यंजना शक्ति काम करती है । अत: दोनों में ही अभिधात्मक अर्थ गौण रहता है और लक्ष्यार्थ एवं व्यंग्यार्थ प्रधान बन जाता है । मुहावरों के प्रयोग वाक्यों तथा लोकोक्तियों दोनों में चमत्कार, अंभिव्यंजन कौशल तथा प्रभावात्मकता होती है । फिर भी लोकोक्तियाँ किसी बात के समर्थन, खंडन तथा पुष्टि के लिए प्रयुक्त की जाती हैं । लोकोक्तियों का प्रयोग जनमानस में उस कालसे होता आया हैं, जब लेखनकला का उदय तक नहीं हुआ था । अधिकतर लोकोक्तियाँ ग्रामीण जन-जीवन के अनुभवों के आधार पर बनी है । कुछ कहावतें कवियों, लेखकों तथा मनीषियों की उक्तियाँ होती हैं, जो अपनी शब्द-योजना के सौष्ठव, अभिव्यंजनपटुता या अर्थ-गुरूता आदि की वजह से जनता में प्रचलित हो जाती हैं । कहावतें एवं मुहावरें दोनों में ही अलंकारों का प्रयोग किया जाता है । कहावतों में विशेष रूप से 'लोकोक्ति' अलंकार होता है । इनमें कई अलंकारों का प्रयोग किया जाता है । मुहावरों में अलंकार का प्रयोग अनिवार्य नहीं है ।

निर्माण स्त्रोत

मुहावरों के संकलन के कई स्त्रोत हैं । मुख्यत: मुहावरें मौखिक परंपरा से प्राप्त होते हैं । दैनिक बोली एवं व्यवहार में प्रचलित कई मुहावरें मौखिक परंपरा से संग्रहित किए जाते हैं । इनकी संख्या काफी है । दुसरा स्त्रोत शब्दकोश, विश्वकोश एवं मुहावरों की पुरानी पुस्तकों का है । तीसरा स्त्रोत अन्य भाषाओं से हिंदी में रूपांतरित मुहावरों का है । अंग्रेजी, फारसी तथा उर्दू भाषाओं से भी काफी मात्रा में मुहावरें आए हैं ।

उपयोगिता एवं महत्त्व

भारत बहुभाषी राष्ट्र है । एक भाषा के अंतर्गत कई बोलियाँ और अबोलियाँ होती रहती हैं । स्वाभाविकतया इन बोलियों में, लोकव्यवहार में आनेवाली कई प्रकार की कहावतें, मुहावरें प्रयुक्त होती है । लोकसाहित्य के अध्ययन में, भाषा-अध्ययन में विशेषत: प्रादेशिक भाषाओं का अध्ययन करते हुए कई कहावतें तथा मुहावरों का अर्थबोध करना कठिन हो जाता है । ऐसे समय मुहावरों एवं कहावतों का संकलन हमारी मदद करता है । साहित्य, लोकसाहित्य

एवं अनुवादन में भी यह संकलन अनुवादक के लिए मार्गदर्शक रहता है । किसी भी भाषा के सूक्ष्म अध्ययन के लिए, भाषागत सौंदर्य के आस्वादन के लिए कहावतें-मुहावरा कोश, सही अर्थ में आवश्यक संदर्भ स्त्रोत साबीत होते हैं ।

साहित्य में मुहावरों एवं कहावतों का प्रयोग सटीक रूप में होता है । ये साहित्य के अनूठे अलंकार हैं । साहित्यिक सौंदर्य के अक्षय भंडार हैं । इनके प्रयोग से साहित्य एवं भाषा की अर्थवत्ता बढ जाती हैं । 'गागर में सागर' लोकोक्ति की तरह इनका प्रयोग होता है । भाषा में छिपे व्यंग्यार्थ तथा लक्ष्यार्थ को समझने के लिए ये संकलन विशेष उपयुक्त होता हैं ।

मुहावरें एवं कहावतें भाषा में सहजता से घुले-मिले होते हैं । उन्ही के कारण भाषा प्रवाही, संप्रेषणीय बनती है । कोई घटना या लम्बे-चौडे प्रसंग को समझने-समझाने के लिए लम्बी भूमिका बाँधने की जरूरत नहीं पडती । उसके स्थान पर किसी कहावत या मुहावरें के प्रयोग से काम आसान बनता है ।

अंतर

कहावतें तथा मुहावरें दोनों लोकजीवन से निर्मित एवं लोकजीवन में प्रचलित होकर भी दोनों में एक विशिष्ट अंतर है । मुहावरां पूर्ण वाक्य न होकर वाक्यांश होता है, जबकि कहावत या लोकोक्ति सम्पूर्ण वाक्य होती है । मुहावरां वाक्य से जुडकर भाव की अभिव्यक्ति करता है, तो लोकोक्ति के प्रयोग के लिए वाक्य या वाक्यांश की आवश्यकता नहीं होती । मुहावरों का प्रयोग भाव को उद्धीप्त करने के लिए किया जाता है, जबकि लोकोक्ति का प्रयोग श्रोता पर अमिट प्रभाव डालने हेतु किया जाता है । मुहावरों का प्रयोग भाषा का सौंदर्य बढाने के लिए, भाव संप्रेषण के लिए होता है, तो लोकोक्तियों का प्रमुखत: किसी को उपदेश देने के लिए, उपालम्भ या व्यंग्य की अभिव्यक्ति के लिए, बात को संक्षेप में समझाने के लिए किया जाता है ।

निष्कर्ष

मुहावरें तथा कहावतें बोलचाल में प्रचलित चमत्कारपूर्ण वाक्यांश तथा वाक्य होते हैं ।

- वे अनुभवसिद्ध तथ्यकथन होते हैं ।
- वे उपदेशात्मक या नैतिक शिक्षा से युक्त होते हैं ।
- वे लक्षणा या व्यंजना शब्दशक्ति से मर्म तक पहुँचकर विशिष्ट अर्थ की अभिव्यक्ति करते हैं ।

2.3.4 पारिभाषिक शब्दकोश

अर्थ एवं परिभाषाएँ

पारिभाषिक शब्दावली का संकलन ही 'परिभाषा कोश' या 'पारिभाषिक शब्दकोश' कहलाता है । यह संकलन आम शब्दों से अलग होता है । दैनिक व्यवहार या बोली में प्रयुक्त सभी प्रकार के शब्द इसमें नहीं आते । भाषा या साहित्य के अंतर्गत प्रयुक्त सैद्धांतिक, आलोचनात्मक शब्दावली, विज्ञान, तकनीकी, विधि, वाणिज्य, प्रशासन के अंतर्गत प्रयुक्त होनेवाली सांकेतिक शब्दावली प्राय: पारिभाषिक शब्दावली कहलाती है ।

मूलत: पारिभाषिक शब्दावली या 'परिभाषा कोश' यह शब्द अंग्रेजी के 'Glossary' (ग्लॉसरी) शब्द का हिंदी पर्यायवाची रूप है । 'ग्लॉसरी' शब्द मुलत: ग्रीक भाषा के शब्द 'Glossa' से निर्मित है । ग्रीक भाषा में 'ग्लॉस' शब्द का प्रारंभिक अर्थ 'वाणी' था, जो बाद में 'भाषा' या 'बोली' का वाचक बना । आगे चलकर इसमें अर्थपरिवर्तन होकर किसी भी प्रकार के शब्द अर्थात् पारिभाषिक, सामान्य, क्षेत्रिय, प्राचीन, अप्रचलित आदि के लिए इसका प्रयोग होने लगा । ऐसे शब्दों का संग्रह ही 'ग्लॉसरी' या 'परिभाषा कोश' कहलाता है ।

कुछ परिभाषाओं के आधार पर सामान्य शब्द एवं पारिभाषिक शब्दों में होनेवाला अंतर स्पष्ट हो जाएगा -

1) विकिपीडिया -

ऐसे शब्द जो किसी विशेष ज्ञान के क्षेत्र में एक निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, वे 'पारिभाषिक शब्द' होते हैं और जो शब्द एक निश्चित अर्थ में प्रयुक्त नहीं होते वे 'सामान्य शब्द' होते हैं ।

2) डॉ. रघुवीर सिंह

पारिभाषिक शब्द का अर्थ है, जिसकी सीमाएँ बाँध दी गयी हो और जिनकी सीमा नहीं बांधी जाती, वे साधारण शब्द होते हैं । पारिभाषिक शब्द वह होता है, जिसका प्रयोग किसी विशेष अर्थ में संकेत रूप से होता है ।

3) डॉ. भोलानाथ तिवारी

पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्दों को कहते हैं, जो सामान्य व्यवहार की भाषा के शब्द न होकर भौतिकी, रसायन, प्राणिविज्ञान, दर्शन, गणित, इंजीनियरी, विधि, वाणिज्य, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, भूगोल आदि ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के विशिष्ट शब्द होते हैं और जिनकी अर्थ-सीमा सुनिश्चित और परिभाषित होती है । क्षेत्र विशेष में इन शब्दों का विशिष्ट अर्थ होता है ।

स्वरूप

पारिभाषिक शब्दावली प्रमुखत: शास्त्र या विज्ञान, तकनीकी, विधि, प्रशासन, वाणिज्य आदि क्षेत्रों में तथा उन से सम्बन्धित विषयों में प्रयुक्त होती हैं । उस क्षेत्र-विशेष के संदर्भ में उनका विशिष्ट अर्थ एवं संकेत होता हैं । जो शब्द दैनिक व्यवहार में, बोली में रूढ होता है, लेकिन वैज्ञानिक 'विशिष्ट शब्द' के माध्यम से विशिष्ट अर्थ एवं यथार्थ कल्पना की अभिव्यक्ति का प्रयास करते हैं । ऐसे ही 'विशिष्ट शब्द' पारिभाषिक संज्ञा कहलाते हैं । विज्ञान एवं तत्सम विषयों में इन शब्दों के प्रयोग से पहले उनकी परिभाषा स्पष्ट की जाती है । अत: पारिभाषिक संकल्पना एक विशिष्ट अर्थ की ही अभिव्यक्ति करती है । जैसे "Problem" शब्द वाणिज्यशास्त्र में 'प्रश्न' शब्दार्थ को ध्वनित करता है तो समाजविज्ञान में 'समस्या' शब्दार्थ को ध्वनित करता है । इसीप्रकार 'रस' शब्द दैनिक व्यवहार में पेय, औषधि द्रावण का बोध करता है, तो वही 'रस' शब्द साहित्यशास्त्र में 'आत्मानंद' अर्थ का बोध करता है ।

सामान्य जीवन की आवश्यकताओं के लिए नित्यप्रचलित एवं मर्यादित शब्दसंकलन से काम चल जाता है, लेकिन विज्ञान-तकनीकि आदि शाखांतर्गत विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तथा उनके वास्तविक अभिधेयार्थ की अभिव्यक्ति हेतु नित्यप्रचलित शब्दों से भिन्न एवं स्वतंत्र शब्दसंकलन निर्मिती की आवश्यकता होती है । ऐसी स्वतंत्र रूप से निर्मित परिभाषा लेखन रूप में बार-बार प्रयुक्त होकर समय के साथ विकसित होती है और कालांतर से रूढ बन जाती है ।

पारिभाषिक संज्ञाओं में शुद्ध पारिभाषिक शब्द, अर्ध पारिभाषिक शब्द तथा परिभाषा में प्रयुक्त होनेवाले 'सामान्य शब्द' आदि का अंतर्भाव होता है । भाषा संचालनालय की केंद्रीय भाषा-नीति के अनुसार पारिभाषिक शब्दकोश मुख्यत: विज्ञान, तकनीकी, विधि, वाणिज्य, प्रशासन आदि विषयों का ज्ञान प्रमुखत: अंग्रेजी से प्रादेशिक भाषाओं में, मातृभाषाओं में देने की व्यवस्था हेतु पारिभाषिक शब्दावली की निर्मिती की गयी हैं । सभी भारतीय भाषाओं में विज्ञान-तकनीकी, साहित्य, भाषा से सम्बन्धित सभी विषयों के परिभाषा कोश बनाये गए हैं । उदाहरण के तौर पर हिंदी साहित्यशास्त्र में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली का विवेचन कर सकते हैं ।

हिंदी साहित्यशास्त्र में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली के तीन स्त्रोत हैं -

1) संस्कृत स्त्रोत

हिंदी में संस्कृत से आनेवाले पारिभाषिक शब्द सबसे अधिक हैं । ये शब्द संस्कृत से सीधे उसी अर्थ में और कुछ समय-संदर्भ एवं परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित होकर रूढ हो गए हैं । जैसे - 'रससिद्धांत' में प्रयुक्त उत्पत्ति, रस, आलम्बन, उद्दीपन, आश्रय, ब्रह्मानंद, सहोदर, रसनिष्पति आदि ।

2) पाश्चात्य स्त्रोत

पाश्चात्य जगत् से हिंदी भाषा में आनेवाले पारिभाषिक शब्दों की संख्या अधिक हैं । उन्नीसवीं सदी तथा उसके बाद स्वतंत्रतापूर्व काल में ये शब्द हिंदी में आए । उनकी सहायता से अंग्रेजी शासन के साथ ही ब्रिटीश साहित्य एवं सभ्यता का आगमन भी हुआ । इनमें से कई शब्द बांगला नवजागरण के समय प्रथम बांगला साहित्य में और फिर उसके माध्यम से हिंदी नवजागरण के समय अंग्रेजी से सीधे हिंदी में आए । ये ज्यादातर लैटिन, फ्रेंच, ग्रीक मूल के शब्द थे, जो अंग्रेजी में अपनी अंशीक मूल पहचान को कायम रखे हुए थे । हिंदी ने इन्हें अंग्रेजी से ग्रहण किया । 20 वीं सदी के अंतिम दशक में इसी वर्ग के कुछ शब्द हिंदी में तेजी से प्रयुक्त हुए - जैसे Globalization -वैश्वीकरण या भूमंडलीकरण । Global Village 'विश्वग्राम' आदि । इसके मूल में वर्तमान पाश्चात्य साम्राज्यवादी संस्कृति की विचार-परंपरा है, जो दुनियाभर में अर्थ-व्यापार-वैश्वीकरण के प्रभाव को फैला रही है ।

3) हिंदी का अपना समीक्षाशास्त्र

यह तीसरा स्त्रोत है । पारिभाषिक शब्दों का यह स्त्रोत हिंदी साहित्य के इतिहास इतना ही पुराना हैं, यह पहले संस्कृत से प्रभावित और बाद में आधुनिक काल में स्वतंत्र रूप से विकसित है । आधुनिक हिंदी साहित्य के समीक्षक आ. रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, मुक्तिबोध, रामविलास शर्मा, नामवरसिंह आदि ने पारिभाषिक शब्द दिए हैं। डॉ. रामचंद्र तिवारी द्वारा प्रस्तुत 'आधुनिक हिंदी आलोचना : संदर्भ और दृष्टि' यह संदर्भ ग्रंथ इस दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है । इसी तरह अन्य पारिभाषिक कोश भी उदाहरण के तौर पर देखे जा सकते हैं । जैसे - हिंदी साहित्य कोश भाग-1 एवं 2 - पारिभाषिक शब्दावली - डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, प्रशासनिक अंग्रेजी हिंदी कोश - सं. डॉ. नारायणदत्त पालीवाल, राजभाषा तकनीकी शब्दावली - बलबीर सक्सेना, अंग्रेजी-मराठी वैज्ञानिक पारिभाषिक व्याख्यासंग्रह, गणित परिभाषा कोश, रसायनशास्त्र परिभाषा कोश, वनस्पतीशास्त्र पारिभाषिक कोश आदि । इस संदर्भ में पुणे विश्वविद्यालय द्वारा, अंग्रेजी पारिभाषिक संज्ञाओं की कई विज्ञान विषयक कोश पुस्तिकाएँ देखी जा सकती हैं ।

इसप्रकार के कोश-लेखन के लिए विश्वविद्यालय, उनके विषय-विभाग, समीक्षक, अनुसंधाता के साथ ही विश्वकोश से भी सहायता ली जाती है । स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के विज्ञान एवं तत्सम विषयों के अध्ययन-अध्यापन में 'पारिभाषिक कोश' उपयोगी सिद्ध हुए हैं ।

महत्त्व एवं उपयोगिता

पारिभाषिक कोश के उपर्युक्त विवेचन से 'कोश' की उपयोगिता इसप्रकार निर्देशित की जा सकती है -

विद्यार्थी, अध्यापक, जिज्ञासू पाठक, अनुसंधाताओं को पारिभाषिक संज्ञाओं का तुरंत अर्थबोध हो सकता हैं । पाठ्यक्रम एवं अन्य ग्रंथों में प्रयुक्त संज्ञाओं की यथार्थ एवं विस्तृत जानकारी के लिए पारिभाषिक व्याख्यासंग्रह विशेष उपादेय साबित होते हैं ।

आधुनिक समय में शिक्षा संस्थाओं, तकनीकी पाठ्यक्रम, पदविकाएँ, विज्ञान शाखाधिष्ठित पाठ्यक्रम पढनेवाले आदि विद्यार्थियों की मात्रा काफी बढ गयी है । सामान्य-सुबुद्ध पाठक भी वैज्ञानिक संकल्पनाओं से अधिक जुड रहा है । समग्र मानवी जीवन-व्यवहार में विज्ञाननिष्ठ सोच एवं तद्नुरूप जीवनप्रणाली का आग्रह बढ रहा है । इस स्थिति में तुरंत एवं सहजता से अर्थबोध करानेवाले वैज्ञानिक पारिभाषिक संज्ञाओं के व्याख्यासंग्रहों का समाज में स्वागत ही है ।

ये 'परिभाषा कोश' स्नातक, स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के लिए प्रादेशिक स्तर के साथ ही सर्वभाषिक पाठक के लिए विशेष उपयोगी हैं ।

समांतर कोश

अर्थ एवं परिभाषा

विभिन्न संदर्भ स्त्रोतों में से आधुनिक एवं महत्त्वपूर्ण संदर्भ स्त्रोत हैं - 'समांतर कोश' । यह अपने स्तर पर एक वैशिष्ट्यपूर्ण संदर्भ ग्रंथ है । लेखन एवं पठनविधी में हमें कभी-कभार विशिष्ट शब्द की तलाश होती है । सटीक शब्द की खोज में हम विविध शब्दकोश भी देख लेते हैं, फिर भी वह शब्द नहीं मिल पाता । तब, हम 'समांतर कोश' की सहायता लेते हैं ।

'समांतर कोश' शब्दकोश का ही एक भेद है । यह अपेक्षित शब्द-खोज की दिशा में एक सार्थक प्रयास है । जब किसी विशिष्ट शब्द के संदर्भ में अन्य पर्यायवाची, वैकल्पिक, समानार्थी, विपरीत तथा उस दिशा के विविध शब्दों को जानने के लिए, हमें समांतर कोश से काम लेना पडता है ।

'समांतर कोश' एक साथ शब्दकोश, पर्यायवाची कोश, समानार्थी शब्दकोश, संदर्भ कोश होता है । उसके अंतर्गत विशिष्ट शब्द के संदर्भ में वैकल्पिक, समानार्थी, विपरीत, उससे सम्बन्धित, अन्य शब्दों की व्यापक सूची हम देख सकते हैं ।

सटीक शब्द की तलाश में मनोवांछित शब्द की उपलब्धि करनेवाला एक संदर्भ ग्रंथ 'समांतर कोश' है । इस कोश में एक शब्द के समानार्थी, पर्यायवाची, विपरीत तथा उससे सम्बन्धित अन्यान्य शब्द एक साथ समांतर रूप से प्रस्तुत रहते हैं । अत: यह समांतर कोश कहलाता है ।

स्वरूप

समांतर कोश को अंग्रेजी में 'थिसारस' कहते हैं । 'थिसारस' शब्द यूनानी 'थैजोरस' का हिंदी रूप है, जिसका अर्थ है - कोश । वास्तव में समांतर कोश में शब्दों का संकलन ही होता है । इस दृष्टि से यह एक प्रकार का शब्दकोश ही है । मगर, समांतर कोश एवं शब्दकोश में अंतर यह है कि शब्दकोश में एक शब्द के अलग-अलग अर्थ दिए होते हैं और 'समांतर' कोश में एक शब्द के बहुत सारे वैकल्पीक, समानार्थी, विपरीत एवं उससे सम्बन्धित अन्यान्य शब्द एक साथ दिए जाते हैं । मनोवांछित शब्द की तलाश में जहाँ शब्द कोश अनुपयोगी रहता है, वहाँ 'थिसारस' हमारे लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होता है । जैसे - समांतर कोश में कोई भी एक शब्द बहुविकल्पी के रूप में प्रस्तुत होता है । अर्थात् हम किसी एक शब्द के द्वारा किसी अनजान, अनदेखे शब्द तक तत्काल पहुँच सकते हैं । इन बहुविकल्पी शब्दों के आधार पर समांतर कोश अध्येता के लिए 'पर्याय कोश' का काम करता है । लेकिन, समांतर कोश में बहुविकल्प से आगे बढकर उससे सम्बन्धित अन्यान्य अर्थोवालें ढेर सारे शब्द मिल जाते हैं । ये शब्द अर्थ के स्तर पर विविध होते हैं । जैसे विपरित अर्थोंवाले, सम्बन्धित, अन्य आदि । जैसे 'समांतर कोश' में से 'विवाह' शब्द का उदाहरण लिया जा सकता है - उसमें 'विवाह' के साथ-विवाह विच्छेद, विवाह की सगाई, घुडचडी आदि रस्मों के अर्थ भी मिल जाते हैं । विवाह एक संस्कार है - अत: मुंडन, उपनयन आदि सोलह संस्कारों की जानकारी भी मिल जाती है । विवाह गृहस्थ आश्रम का प्रवेश बिंदु है - अत: गृहस्थ आश्रम के साथ-साथ संन्यास, वानप्रस्थ और ब्रह्मचर्य आश्रम का परिचय भी प्राप्त होता है । फिर दो-चार पृष्ठों के बाद आप विवाह निष्ठ, अनिष्ठ, परनारी, परपुरूष आदि शब्दसमूहों की जानकारी भी प्राप्त कर सकते हैं ।

इससे स्पष्ट होता है कि अध्येता किसी भी ज्ञात शब्द के द्वारा अज्ञात या विस्मृत शब्द तक तुरंत ही पहुँच सकते हैं ।

समांतर कोश का इतिहास

'समांतर कोश' लेखन की परंपरा अत्यंत प्राचीन है । दुनिया का सबसे पहला थिसारस भारत में बना । ईसा की छठी-सातवीं सदी में अमरसिंह द्वारा लिखा गया 'नामलिंगानुशासन' या 'त्रिकांड' विश्वस्तर का सर्वप्रथम 'समांतर कोश' है, जो 'समरसिंह' नाम से भी विख्यात है । यह ग्रंथ 'कोश लेखन' परंपरा का एक सशक्त प्रयास है । आधुनिक काल में इसीप्रकार का प्रयास अंग्रेजी में रौजेट ने किया है । उसका सही नाम है - पीटर मार्क राँजे । 'थिसारस ऑफ इंग्लीश वर्डस' यह ग्रंथ उसने 1852 में प्रकाशित किया, इसके बाद उन्हीके जीवनकाल में करीब 28 पुर्नसंस्करण निकले हैं ।

आधुनिक काल में हिंदी भाषा में अरविंदकुमार एवं कुसुमकुमार दोनों का यह अभिनंदनीय प्रसाय है । इन लेखकद्वय ने लगातार 20 साल अथक परिश्रम कर हिंदी का प्रथम समांतर कोश प्रस्तुत किया । इसके अंतर्गत 5,40,000 से अधिक शब्द संकलित हैं । इसमें सभी तरह के शब्द हैं ।

समांतर कोश के भेद -

(1) अनुक्रम खंड (2) संदर्भ खंड ।

1) अनुक्रम खंड

'अनुक्रम खंड' में अकारादि क्रम से सभी शब्दों की सूची दी है, जिसका समावेश समांतर कोश में किया गया है । अनुक्रम खंड आप के लिए तत्काल कोश का काम भी करता है । इसमें प्रत्येक खोज शब्द के नीचे दिए गए विकल्प, उसके अर्थ भी है । साथ ही, प्रत्येक अर्थ स्वतंत्र पंक्ति में दिया गया है । अत: हर अर्थ तुरंत ग्रहीत हो जाता है ।

'समांतर कोश' देखने की विधी कुछ इसप्रकार है - सबसे पहले आप अनुक्रम खंड में अपने भाव या विचार के निकटस्थ कोई एक शब्द देखिए । उस शब्द के सामने संख्याओं में पता लिखा हुआ है । फिर आप उस पते के अनुसार संदर्भ खंड में तलाश कीजिए और आप अपने मनोवांछित शब्द तक पहुँच जायेंगे । जैसे, मान लीजिए आप 'निकाह' शब्द खोजना चाहते है, मगर आप को 'विवाह' शब्द याद है । 'अनुक्रम खंड' में 'खोज' शब्द 'विवाह' के नीचे कई गंतव्य हैं । उनमें से एक है विवाह 799.1 निकाह के लिए आप स्वभावत: संदर्भ खंड में इसी पते पर जायेंगे । संदर्भ खंड में आप देखेंगे कि 799 शीर्षक ही विवाह का है । इसमें उपशीर्षक 1 में विवाह के 37 पर्याय हैं, जिन में से एक है निकाह ।

समांतर कोश प्रत्येक शब्द के बहुविस्तार में जाने की सार्थक कोशिश हैं । उद. 'राशिचक्र' यह शब्द ले लेते हैं । इसमें राशिचक्र के अनेक पर्यायवाची और फिर राशियों के विविध समूहों के नाम, तत्पश्चात प्रत्येक राशी के अंतर्गत उसके अपने पर्यायवाची, हिंदी, उर्दू, अरबी, लैटीन आदि नाम दिए गए हैं ।

महत्त्व

'समांतर कोश' सचमुच एक विराट प्रयास है । 20 वर्षो से इस कार्य में जुडे अरविंद एवं कुसुम कुमार की यह एक सार्थक उपलब्धि है । लेखन-पठन-अनुसंधान-अनुवाद आदि कार्य में लगे हुए प्रयोक्ताओं के लिए यह एक सुअवसर है, कि मनचाहे शब्द की तलाश इसके द्वारा तत्काल पूर्ण होती है । भाषा अध्येताओं एवं विशेषज्ञों के लिए यह सबल माध्यम है । भाषा प्रभुत्त्व पाने का यह एक महत्त्वपूर्ण संदर्भ स्त्रोत है । कवि, लेखक, अनुवादक, पत्रकार, अध्यापक, छात्र, अनुसंधाता सभी के लिए यह विशेष उपयोगी है । आवश्यकतानुरूप यह तत्काल कोश, पर्याय कोश, संदर्भ कोश, शब्दकोश, वैकल्पिक शब्दकोश का समांतर रूप है । इसकी सभी विशेषताएँ समांतर रूप से इसमें देखी जा सकती हैं । खोजी-अध्येताओं के लिए 'समांतर कोश' बहुआयामी संदर्भ स्त्रोत है । यह भाषा का नित-नूतन शक्तिशालि उपकरण है । अध्येताओं के लिए विपुल शब्द भंडार पाने का सहज स्त्रोत है ।

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

अ) निम्नलिखित वाक्यों में दिए-गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए ।

1. किसी विषय की विशेष जानकारी देनेवाली सामग्री को ..... कहते हैं ।

क) विशेष सामग्री ख) संदर्भ सामग्री ग) संदर्भ स्त्रोत घ) स्त्रोत सामग्री

2. पाठक को ..... प्रदान करना संदर्भ स्त्रोत का उद्देश्य रहता है ।

क) जानकारी ख) विशेष जानकारी

ग) सामान्य जानकारी घ) महत्त्वपूर्ण जानकारी

3. 'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' का सूत्रपात ..... ई. में हुआ था ।

क) 1956 ख) 1771 ग) 1768 घ) 1856

4. प्रजापति कश्यप का ..... संसार का अतिप्राचीन 'शब्द संकलन' है ।

क) निघंटु ख) निरूक्त ग) अमरकोश घ) त्रिकांड

5. हिंदी में 'डिक्शनरी' या तत्सम ग्रंथों के लिए ..... संज्ञा प्रचलित है ।

क) शब्दकोश ख) विश्वकोश ग) कोश घ) संदर्भ ग्रंथ

6. 'शब्दकोशों' की पाश्चात्य परम्परा में ..... का शब्दकोश प्रथम प्रयास है ।

क) डॉ. जॉन्सन ख) डॉ. जोहान्सन ग) वैब्स्टर्स घ) रौजेट

7. ..... ने 'राज-व्यवहार कोश' बनवाया था ।

क) छत्रपति राजर्षि शाहुजी ख) छत्रपति शिवाजी महाराज

ग) शहाजी घ) ब्रिटिशों

8. ..... 'विश्वस्तर' की सभी प्रकार की जानकारी देनेवाला संदर्भ स्त्रोत है ।

क) शब्दकोश ख) विश्वकोश ग) विषयकोश घ) व्यक्तिकोश

9. ..... 'विश्वकोश' सभी दृष्टियों से परिपूर्ण एवं प्रगल्भ 'विश्वकोश' माना जाता है ।

क) साहित्य ख) संस्कृति ग) ब्रिटानिका घ) कुमार

10. 'मुहावरा' शब्द ..... भाषा का है ।

क) अरबी ख) फारसी ग) उर्दू घ) हिंदी

11. कहावतों में विशेष रूप से ..... अलंकार होता है ।

क) लोकोक्ति ख) अन्योक्ति ग) पुनरूक्ति घ) सूक्ति

12. डॉ. भोलानाथ तिवारी के 'हिंदी मुहावरा कोश' में मुहावरों की संख्या ..... है ।

क) 7,000 ख) 12,000 ग) 10,000 घ) 2,000

13. 'परिभाषा कोश' यह शब्द अंग्रेजी के ..... शब्द का हिंदी पर्यायवाची रूप है ।

क) Glossary ख) Glossa ग) Globa घ) Glass

14. 'समांतर कोश' ..... का ही एक भेद है ।

क) थिसारस ख) शब्दकोश ग) विश्वकोश घ) शब्दार्थकोश

15. 'थिसारस' शब्द ..... 'थैजोरस' का हिंदी रूप है ।

क) इटाली ख) यूनानी ग) विदेशी घ) अंग्रेजी

16. 'समांतर कोश' प्रत्येक शब्द के ..... में जाने की सार्थक कोशिश है ।

क) बहुविस्तार ख) विस्तार ग) बहुविकल्प घ) बहुपर्याय

17. पाश्चात्य जगत् से हिंदी भाषा में आनेवाले 'पारिभाषिक शब्द' ..... सदी तथा उसके बाद आए हैं।

क) 18 वी ख) 19 वी ग) 20 वी घ) 17 वी

18. 'भारतीय साहित्य कोश' के संपादक ..... है ।

क) डॉ. वीणा गौतम ख) डॉ. सुरेश गौतम

ग) डॉ. सुरेश एवं डॉ. वीणा गौतम घ) पंडित महादेवशास्त्री जोशी

19. ..... 'विश्वकोश' सभी विषयों से सम्बन्धित होते हैं ।

क) विषय ख) सामान्य ग) विशेष घ) विषय-विशेष निष्ठ

20. किसी भी कोश में 'शब्दावली' ..... क्रम से दी जाती है ।

क) अनुक्रम ख) विषयक्रम ग) अकारादी घ) शब्दक्रम

आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए ।

1. 'ज्ञानचक्र' संकल्पना क्या है ?
2. 'कोश' शब्द का शब्दकोशगत अर्थ बताइए ।
3. शब्दकोश किसे कहते है ?
4. 'शब्दकोशों' की भारतीय परम्परा किस कोश से आरंभ होती है ?
5. भाषा के आधार पर शब्दकोश के प्रकार बताइए ।
6. 'विश्वकोश' कौनसे अंग्रेजी शब्द का हिंदीकरण है ?
7. 'विश्वकोशों' के कौनसे दो प्रकार अक्सर देखे जाते हैं ?
8. 'कहावत' किसे कहते है ?
9. लोकोक्ति एवं मुहावरों में भाषा की कौनसी शक्ति काम करती है ?
10. भाषा में मुहावरों का प्रयोग किस हेतु से किया जाता है ?
11. 'पारिभाषिक शब्दकोश' किसे कहते है ?

12. पारिभाषिक संज्ञाओं में कौनसे शब्दों का अंतर्भाव होता है ?
13. हिंदी साहित्यशास्त्र में प्रचलित 'पारिभाषिक शब्दावली' के तीन स्त्रोत बताइए ।
14. हिंदी का प्रथम 'समांतर कोश' किसने प्रस्तुत किया ?
15. विश्वस्तर का सर्वप्रथम 'थिसारस' कौनसा है ?
16. 'समांतर कोश' के दो प्रकार बताइए ।
17. 'समांतर कोश' एक साथ कितने सारे कोशों का समन्वित रूप है ?
18. मनुष्य की नित-नूतन बढ रही ज्ञानलालसा की सार्थक उपलब्धि क्या है ?
19. मुहावरा एवं कहावत में क्या अंतर है ?
20. कहावतें एवं मुहावरों का निर्माणस्त्रोत क्या है ?

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.	सन्दर्भ सामग्री	-	किसी विषय की विशेष जानकारी देनेवाली सामग्री
2.	सन्दर्भ स्त्रोत	-	जानकारी तक पहुँचाने वाले मार्ग
3.	कोश	-	संग्रह, संज्ञा का संकलित विवेचन करनेवाला ग्रंथ
4.	शब्दकोश	-	वैविध्यपूर्ण शब्दों का एकत्रित संकलन
5.	डिक्शनरी	-	शब्दकोश
6.	ग्लॉसरी	-	शब्दसंग्रह, शब्दों की सूची
7.	ज्ञानचक्र	-	एक या एक से अधिक विषयों की सर्वसमावेशक जानकारी
8.	विश्वकोश	-	विश्वस्तर की सभी प्रकार की जानकारी देनेवाला संदर्भ स्त्रोत
9.	मुहावरां	-	विशिष्ट अर्थ प्रकट करनेवाला वाक्यांश
10.	कहावत	-	कही हुअी बात, लोकोक्ति, उक्ति
11.	थिसारस	-	समांतर कोश

2.6 स्वतं-अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

अ)

1) संदर्भ सामग्री	2) विशेष जानकारी	3) 1768
4) निघंटु	5) कोश	6) डॉ. जॉन्सन
7) छत्रपति शिवाजी महाराजजी	8) विश्वकोश	9) ब्रिटानिका
10) अरबी	11) लोकोक्ति	12) 12,000
13) Glossary	14) शब्दकोश	15) यूनानी
16) बहुविस्तार	17) 19 वी	
18) डॉ. सुरेश एवं डॉ. वीणा गौतम	19) सामान्य	20) अकारादी

आ) एक वाक्य में उत्तर ।

1. 'ज्ञानचक्र' इस संल्पना के अनुसार सभी विषय समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं । अत: वर्तमान समय में सभी विषयों का अध्ययन आवश्यक है । सभी ज्ञानशाखाएँ एक वर्तुल में लगी हुअी है । वर्तुल के मध्य में हम है । इसलिए प्रत्येक शाखा की ओर हम जा सकते है ।
2. 'कोश' शब्द का शब्दकोशगत अर्थ है - खज़ाना, संग्रह, संचित राशी, तिजोरी, खदान, विषय, संज्ञा का संकलित विवेचन करनेवाला ग्रंथ, शब्द संकलन, आवरण, पटल, विज्ञान, मन, प्राण आदि ।
3. शब्दकोश अकारादी क्रम से एकत्रित किए गए शब्द-समूह का संकलन है, जो शब्दों की वर्तनी, व्युत्पत्ति, व्याकरण, निर्देश, अर्थ, परिभाषा, प्रयोग, पर्याय की प्रामाणिक जानकारी देता है ।
4. शब्दकोशों की भारतीय परम्परा ईसा की छठी-सातवीं शती में अमरसिंह कृत संस्कृत 'नामलिंगानुशासन' से आरंभ होती है । यह भारतीय एवं विश्वस्तर का प्रथम कोश है, जो 'अमरकोश' नाम से भी विख्यात है ।
5. भाषा के आधार पर शब्दकोश के प्रकार हैं - एकभाषी शब्दकोश, द्विभाषी शब्दकोश, त्रैभाषी शब्दकोश, बहुभाषी शब्दकोश आदि ।
6. 'विश्वकोश' अंग्रेजी 'एन्सायक्लोपीडिया' (Encyclopedia) शब्द का हिंदीकरण है ।
7. विश्वकोशों के दो प्रकार हैं - (1) सर्वसाधारण या सामान्य विश्वकोश (2) विषय-विशेषनिष्ठ विश्वकोश।
8. बोलचाल में बहुत आनेवाला ऐसा बंधा चमत्कारपूर्ण वाक्य जिसमें कोई अनुभव या तथ्य की बात संक्षेप में कही गई हो, कहावत कहलाती है । यह अपने कथन की पुष्टि के लिए, चेतावनी देने के, व्यंग्य कसने के तथा किसी बात को किसी की आड में कहने के उद्देश्य से प्रयुक्त होती है ।
9. लोकोक्ति तथा मुहावरों में भाषा की लक्षणा तथा व्यंजना शब्दशक्ति काम करती है । वे लक्षणा तथा व्यंजना शब्द शक्ति से मर्म तक पहुँचकर विशिष्ट अर्थ की अभिव्यक्ति करते हैं ।

10. भाषा में मुहावरों का प्रयोग भाषा का सौंदर्य बढाने हेतु तथा भाव-संप्रेषण के उद्देश्य से किया जाता है । इनके प्रयोग से भाषा में 'गागर में सागर' की भांति अर्थवत्ता आ जाती है ।

11. जो शब्दावली किसी विशेष ज्ञान के क्षेत्र में एक निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होती है और जो दैनिक व्यवहार या बोली में प्रयुक्त शब्दों से बहुत-कुछ अलग होती है, पारिभाषिक शब्दावली कही जाती है । ऐसी पारिभाषिक शब्दावली का संकलन ही परिभाषा कोश या पारिभाषिक शब्दकोश कहलाता है ।

12. पारिभाषिक संज्ञाओं में शुद्ध पारिभाषिक शब्द, अर्धपारिभाषिक शब्द तथा परिभाषा में प्रयुक्त होनेवाले 'सामान्य शब्द' आदि का अंतर्भाव होता है ।

13. हिंदी साहित्यशास्त्र में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली के तीन स्त्रोत है - (1) संस्कृत स्त्रोत, (2) पाश्चात्य स्त्रोत, (3) हिंदी का अपना समीक्षाशास्त्र ।

14. हिंदी का प्रथम समांतर कोश अरविंदकुमार एवं कुसुम कुमारजी ने प्रस्तुत किया ।

15. श्री. अमरसिंह कृत संस्कृत में लिखा 'नामलिंगानुशासन' नामक भारतीय ग्रंथ विश्वस्तर का प्रथम थिसारस है । यह 'अमरकोश' नाम से भी जाना जाता है ।

16. 'समांतर कोश' के दो प्रकार हैं - (1) अनुक्रम खंड, (2) संदर्भ खंड ।

17. 'समांतर कोश' एक साथ शब्दकोश, तत्काल कोश, संदर्भ कोश, वैकल्पिक शब्दकोश, समानार्थी कोश, पर्यायवाची कोश का समन्वित रूप है ।

18. मनुष्य की नित-नूतन बढ रही ज्ञानलालसा की सार्थक उपलब्धि है 'विश्वकोश' । इसे ज्ञानकोश भी कहते है ।

19. मुहावरां एवं कहावत में विशिष्ट अंतर होता है - मुहावरां वाक्यांश होता है । कहावत पूर्ण वाक्य होता है । मुहावरा वाक्य से जुडकर भावाभिव्यक्ति करता है, तो कहावत के प्रयोग के लिए वाक्य की जरूरत नहीं होती । मुहावरे का प्रयोग भाषा का सौंदर्य बढाता है, तो कहावत के प्रयोग से बात, व्यंग्य उपदेश की संक्षिप्त अभिव्यक्ति सुकर होती है ।

20. दोनों का निर्माणस्त्रोत लोकजीवन की मौखिक परंपरा, कवियों, साहित्यिकों की उक्तियाँ, शब्दकोश, विश्वकोश एवं मुहावरें, कहावतों की पुरानी पुस्तकें हैं । अन्य भाषाएँ अरबी, फारसी, उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषाओं से भी हिंदी में काफी मात्रा में मुहावरें आए हैं ।

2.7 सारांश

1. विभिन्न वि षयों की सर्वांग परिपूर्ण जानकारी देनेवाले साधन संदर्भ स्त्रोत कहलाते हैं । संदर्भ स्त्रोत विविध होते हैं । शब्दकोश, विश्वकोश, स्थलवर्णन कोश, वार्षिकी, संदर्भसूची, निर्देश, उल्लेख सूची, सूचीपत्र, नक्शे, प्रबंध, साहित्य के इतिहास एवं परिचय ग्रंथ आदि सभी संदर्भ स्त्रोत हैं ।

2. 'कोश' शब्द का अर्थ है - संग्रह, संज्ञा का संकलित विवेचन करनेवाला ग्रंथ, शब्द संकलन आदि । भारत में कोश लेखन की परंपरा अतीप्राचीन है । कोश लेखन का सूत्रपात सर्वप्रथम भारत में छठी तथा सातवी सदी में हुआ ।

3. शब्दकोश अत्यंत महत्त्वपूर्ण संदर्भ स्त्रोत है । भाषा एवं विषय के आधार पर शब्दकोश के विभिन्न भेद हैं । व्यक्ति या लेखक कोश, लेखन-शुद्धी कोश, व्युत्पत्ति कोश आदि उसके अन्य भेद हैं ।

4. विश्वकोश, विश्वस्तर की सभी प्रकार की जानकारी देनेवाला प्रामाणिक संदर्भ स्त्रोत है । विश्वकोश यह शब्द अंग्रेजी 'एनसायक्लोपीडिया' शब्द का हिंदीकरण है । इसे ज्ञानकोश भी कहते हैं । विश्वकोश के दो प्रकार प्रमुखत: देखे जाते हैं - (1) सर्वसाधारण या सामान्य विश्वकोश और (2) विषय विशेषनिष्ठ विश्वकोश ।

5. लोकजीवन में प्रचलित तथा जनमानस में रूढ मुहावरें एवं कहावतों का संकलित रूप मुहावरें एवं कहावतें कोश हैं । लोकोक्ति एवं कहावत एक-दुसरे के पर्यायवाची है । भाषिक सौंदर्य बढाने तथा भाव-संप्रेषण के लिए मुहावरों का प्रयोग किया जाता है । व्यंग्य, उपदेश, मर्मकथन की अभिव्यक्ति के लिए कहावत का प्रयोग होता है ।

6. 'पारिभाषिक शब्दकोश' प्राय: 'पारिभाषिक शब्दावली' का संकलन है । शास्त्र या विज्ञान, तकनीकि, विधि, प्रशासन, वाणिज्य आदि विषयों से सम्बन्धित शब्दावली का इसमें समावेश रहता है । हिंदी साहित्य एवं आलोचना से सम्बन्धित पारिभाषिक कोश भी विशेष उल्लेखनीय हैं । पारिभाषिक संज्ञाओं में शुद्ध पारिभाषिक शब्द, अर्ध पारिभाषिक शब्द, तथा परिभाषा में प्रयुक्त 'सामान्य शब्द' आदि अंतर्भूत रहते हैं । ये 'परिभाषा कोश' स्नातक, स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के लिए प्रादेशिक स्तर के साथ ही सर्वभाषी पाठक के लिए बहुउपयोगी है ।

7. 'समांतर कोश' शब्दकोश का ही एक भेद है, इसे अंग्रेजी में 'थिसारस' कहते हैं । यह अपने स्तर का वैशिष्ट्यपूर्ण संदर्भ ग्रंथ है । यह एक साथ तत्काल कोश, संदर्भ कोश, पर्यायवाची कोश, समानार्थी तथा वैकल्पिक शब्दकोश होता है । भारतीय कोशकार अमरसिंह का 'नामलिंगानुशासन' विश्वस्तर का सर्वप्रथम थिसारस है । हिंदी में सर्वप्रथम यह प्रयास अरविंदकुमार एवं कुसुमकुमार ने किया है । हिंदी समांतर कोश के दो खंड हैं - (1) अनुक्रम खंड (2) संदर्भ खंड । खोजी-अध्येताओं के लिए 'समांतर कोश' बहुआयामी संदर्भ स्त्रोत है ।

8. छात्र, अध्यापक, अनुसंधाता, अनुवादक, लेखक आदि के लिए सभी कोश उपयोगी तथा मौलिक संदर्भ सामग्री है ।

2.8 स्वाध्याय

टिप्पणियाँ लिखिए -

1. शब्दकोश
2. विश्वकोश
3. मुहावरें एवं कहावतें कोश
4. पारिभाषिक कोश
5. समांतर कोश

2.9 क्षेत्रीय कार्य

1. किसी ग्रंथालय में जाकर उपलब्ध 'कोश साहित्य' का वर्गीकरण कीजिए ।
2. विविध कोशों की उपयोगिता, महत्त्व एवं विशेषताओं का अंकन करते हुए प्रकल्प बनाइए ।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. शोधविज्ञान कोश - डॉ. दुर्गादास काशीनाथ सन्त (अनुवाद - डॉ. सुधाकर गोकाककर, डॉ. गो. रा. कुलकर्णी)
2. कोशवाङ्मय : विचार आणि व्यवहार - डॉ. सदाशिव गजानन देव
3. भाषा विज्ञान के अधुनातन आयाम एवं हिंदी भाषा - डॉ. अंबादास देशमुख
4. लोक साहित्य - डॉ. इन्दु यादव
5. प्रयोजनमूलक हिंदी - डॉ. अंबादास देशमुख

इकाई 3

जनसंचार माध्यम : सामान्य परिचय (मुद्रित)

अनुक्रम

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय-विवेचन

3.3.1 समाचारपत्र सामान्य परिचय

3.3.1.1 समाचार प्रसारण की आवश्यकता

3.3.1.2 समाचारपत्र से तात्पर्य

3.3.1.3 समाचारपत्र : सामूहिक गतिविधियाँ

3.3.1.4 समाचारपत्र : समाचारों का खजाना

3.3.1.5 समाचारपत्र का प्राणतत्व - भाषा

3.3.1.6 समाचारपत्र और विज्ञापन

3.3.2 पत्र - पत्रिकाएँ

3.3.2.1 पत्र पत्रिकाएँ - स्वरूप, व्याप्ति

3.3.2.2 पत्र पत्रिकाएँ - बहुविध आयाम

3.3.2.3 हिंदी-मराठी पत्र-पत्रिकाओं का वर्तमान स्वरूप

3.3.2.4 पत्र-पत्रिकाएँ-भाषा का सामर्थ्य एवं सौंदर्य

3.3.2.5 पाक्षिकोंका सामर्थ्य

3.3.3 विज्ञापन

3.3.3.1 विज्ञापन - स्वरूप, परिभाषा

3.3.3.2 विज्ञापन-मुद्रित विज्ञापनों का स्वरूप, प्रकार

3.3.3.3 मुद्रित विज्ञापनों का मसौदा लेखन

3.3.3.4 मुद्रित विज्ञापन और भाषा

3.3.3.5 मुद्रित विज्ञापनों की विशेषताएँ

3.3.4 रिपोर्ताज

3.3.4.1 रिपोर्ताज : स्वरूप, परिभाषा औार व्याप्ति

3.3.4.2 रिपोर्ताज : उपयुक्तता और विशेषताएँ

3.3.4.3 रिपोर्ताज : मसौदा लेखन

3.3.4.4 रिपोर्ताज : भाषा

3.3.4.5 रिपोर्ताज का हिंदी स्वरूप

3.3.5 उद्घोषणा

3.3.5.1 उद्घोषणा : स्वरूप, परिभाषा

3.3.5.2 उद्घोषणा : व्याप्ति और सीमाएँ

3.3.5.3 उद्घोषणा : मसौदा लेखन

3.3.5.4 उद्घोषणा : प्रकार

3.3.5.5 उद्घोषणा : भाषा और विशेषताएँ

3.4 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ।

3.5 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न ।

3.6 स्वयं-अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर ।

3.7 सारांश

3.8 स्वाध्याय

3.9 क्षेत्रीय कार्य।

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए ।

3.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

- मुद्रित जनसंचार माध्यमों से परिचित होंगे ।
- समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, विज्ञापन, रिपोर्ताज तथा उद्घोषणा का महत्त्व समझ पायेंगे ।
- समाचार पत्र की आवश्यकता, बदलता स्वरूप और आशय समझ पायेंगे ।
- पत्र-पत्रिकाओं का स्वरूप एवं सामर्थ्य से परिचित होंगे ।
- विज्ञापन का स्वरूप, प्रकार तथा विज्ञापनों की विशेषताओं का परिचय पायेंगे ।

- रिपोर्ताज का स्वरूप, उपयुक्तता, विशेषताएँ तथा मसौदा लेखन से परिचित होंगे ।
- उद्घोषणा का स्वरूप, प्रकार, मसौदा लेखन तथा विशेषताओं से परिचित होंगे ।

3.2 प्रस्तावना

जनसंचार मनुष्य जीवन का अभिन्न अंग है । मनुष्य जनसंचार के माध्यम से अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है । साथ ही उसकी जिज्ञासाओं का समाधान भी संचार माध्यमों से होता है । जनसंचार माध्यम समाज को जाग्रत करतें हैं, उसे सजग रखकर उसमें चेतना और उत्साह निर्माण करतें हैं । संचार साधनों की उपलब्धता ने मानव को सक्षम बना दिया है । इनकी सहाय्यता से वह अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करता है । हर विषय के गहराई में जा सकता है । नये-नये ज्ञान से परिचित होता है । साथ ही समाज को विकारों से मुक्त कर, उसे विचार करने की शक्ति, जनसंचार माध्यमों से मिलती है । ये मानव का मनोरंजन भी करते हैं ।

सृष्टि के आरंभ से मानव एक दूसरों से सम्पर्क करता आ रहा है । आवश्यकता के अनुसार माध्यम चुनता व खोजता आ रहा है । प्राचीन भारत में नारद मुनि देवताओं और मानवों के बीच सम्बन्ध स्थापन करने का कार्य करते थे । वैदिक युग में सामन्तों के यहाँ वाद-विवाद हुआ करते थे और आमलोग उनके श्रोता होते थे । भाट-चारण आदि बिरूदावलियाँ सुनाकर सन्देश पहुँचाते थे । साधु-संत जनसाधारण को उपदेश देते थे । तीर्थस्थल तथा मन्दिर संचार के प्रमुख केन्द्र बने थे । सम्राट अशोक के शासन काल में तो शिलालेखों ने संचार का कार्य किया है । लोकनाट्य, लोकगीत, लोककथाएँ, लोककलाएँ आदि माध्यम संचार के वाहक माने जाते थे । आधुनिक काल में विज्ञान ने अनेक नये साधनों का आविष्कार किया है । जो आज के युग में गतिमान माध्यम माने जाते हैं ।

3.3 विषय विवेचन

3.3.1 जनसंचार माध्यम - अर्थ, स्वरूप और प्रकार

अर्थ

'संचार' से 'जन' विशेषण जोड़कर 'जनसंचार' शब्द बना है । 'संचार' संस्कृत के 'चर' धातु से बना है । जिसका अर्थ 'चलना' है । आज यह 'कम्युनिकेशन' (Communication) शब्द का पर्याय है । 'जन' (Mass) का अर्थ है - 'बड़ी संख्या में लोगों से प्रभावित करना या सम्मिलित करना । 'जनसंचार' का अर्थ स्पष्ट करते हुए डॉ. अम्बादास देशमुख ने लिखा है कि, ''जब संचार की प्रक्रिया बड़े पैमाने पर होती है, तो वह 'जनसंचार' कहलाता है । दूसरे शब्दों में जब हम किसी भाव, विचार या जानकारी को दूसरों तक पहुँचाते हैं और यह प्रक्रिया सामूहिक पैमाने पर होती है तो इसे 'जन-संचार' कहते है ।'' एडविन एमरी का मानना है कि, ''जनसंचार एक व्यक्ति से दूसरे को सूचनाओं, विचारों और दृष्टिकोणों को संप्रेषित करने की एक कला है ।'' डी.एस. मेहता लिखते है कि,''जनसंचार का अर्थ है, जनसंचार माध्यमों (जैसे रेडिओ, दूरदर्शन, प्रेस और चलचित्र) द्वारा सूचना, विचार और मनोरंजन का प्रचार-प्रसार करना ।'' अत: संचार में भावों और विचारों को अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति मिलती है ।

जनसंचार निरंतर गतिमान रहने वाली प्रक्रिया है । यह प्रेषक, प्राप्तकर्ता और संदेश के बीच सामंजस्य स्थापित करने की प्रक्रिया है । इसमें माध्यम, प्रेषक तथा प्राप्तकर्ता आदि का समावेश महत्त्वपूर्ण है । जनसंचार का अर्थ संप्रेषण करने वाली एक गतिशील प्रक्रिया है । विकास की प्रक्रिया में जनसंचार एक महत्त्वपूर्ण सीढ़ी का काम करते है ।

जनसंचार का स्वरूप

संचार साधनों की उपलब्धता ने मानव को सक्षम बना दिया है । संचार के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए लुमिक लिखते है कि, ''संचार में सामाजिक व्यवस्था के द्वारा सूचना, निर्णय और निर्देश दिये जाते हैं और यह एक मार्ग है जिसमें ज्ञान, विचारों और दृष्टिकोणों को निर्मित अथवा परिवर्तित किया जाता है ।'' जनसंचार माध्यम से मनुष्य आपस में विचारों का आदान-प्रदान करता है । साथ ही उसकी जिज्ञासाओं का समाधान भी संचार माध्यमों से होता है । जनसंचार माध्यम समाज को जाग्रत करते हैं, उसे सजग रखकर, उसमें चेतना और उत्साह निर्माण करते हैं ।

जनसंचार माध्यमों के कारण विश्वभर में हो रही घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है । साहित्य, संगीत आदि क्षेत्रों में जनसंचार माध्यमों द्वारा काम किया जाता है । राष्ट्र निर्माण, राष्ट्रीय सुरक्षा तथा राष्ट्र कल्याण के लिए जन समुदाय के सहयोग की आवश्यकता होती है । यह आवश्यकता जनसंचार माध्यमों के द्वारा पूरी की जाती है ।

3.3.1 समाचार पत्र : सामान्य परिचय

3.3.1.1 समाचार पत्र : आवश्यकता, उपयुक्तता और बदलता स्वरूप

'समाचार पत्र' दैनंदिन जीवन का अनिवार्य अंग है । इस की सहायतात से पाठक विश्व की गतिविधि, स्वराष्ट्र के उत्थान-पतन तथा क्षेत्र विशेष की ज्वलंत समस्याओं से परिचित हो जाते हैं । समाचार पत्रों से उज्ज्वल सामाजिक चेतना निर्माण करने की दिशा प्राप्त होती है । अन्याय को मिटाने, आदर्शों को फैलाने और व्यक्तिगत जीवन को सुखमय बनाने का मंत्र समाचार-पत्र देते हैं । समाचार पत्रपर राष्ट्र की उन्नति निर्भर रहतीहै । इसलिए समाचार पत्र प्रसारण की आवश्यकता रहती है ।

समाचार पत्रों की उपयुक्तता के संदर्भ में प्रसिद्ध शायर अकबर इलाहाबादी ने समाचार पत्रों को तोप से भी अधिक शक्तिशाली बनाते हुए लिखा है -

'खींचो न कमान, न तलवार निकालो जब तोप मुकबिल हो तो अखबार निकालों'

समाचार पत्र लोकतंत्र के पहरेदार माने जाते हैं । प्रसिद्ध विचारक बर्क ने समाचार पत्रों को चौथी सत्ता कहा है । समाचार पत्रों से प्रतिदिन की नूतनतम घटनाओं की जानकारी मिलती है ।

वर्तमान युग में समाचार पत्र अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है । भारत जैसे लोकतांत्रिक राष्ट्र में समाचार पत्रों की उपयुक्तता और अधिक बढ़ जाती है । इस सन्दर्भ में डॉ.रमेशकुमार जैन 'हिंदी पत्रकारिता का आलोचनात्मक इतिहास में लिखते हैं कि - ''लोकतंत्र में समाचार पत्रों का महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि जनता को देश-विदेश की

गतिविधियों से परिचित कराने के लिए वही एकमात्र साधन है । इसके अतिरिक्त जनमत और जन-दृष्टिकोण को प्रकट करने का भी वह सर्वोत्कृष्ट स्त्रोत है ।''

आज समाचार पत्रों का स्वरूप बदल रहा है । समाचार पत्र पहले 'मिशन' के रूप में कार्य करते थे, अब वे प्रोफेशनल बन गये हैं । इस बात को ध्यान में रखते हुए प्रा. राजेन्द्र इंगोले ने कहा है कि, ''आजादी के बाद लगभग 25-30 वर्षों तक पत्र-पत्रिकाएँ मिशन के रूप में कार्यरत थी । उसके बाद वह प्रोफेशनल बनी, पर अपने मूल से उसने रिश्ता नहीं तोड़ा । प्रोफेशनल बनने के बावजूद वह मिशन बनी रही, यह हम सब लोगों का सौभाग्य है । लेकिन दुर्भाग्यवश कुछ पत्र-पत्रिकाएँ ऐसी हैं, जो आज न मिशन रही, न प्रोफेशनल, वह मात्र कमिशन बन गई है ।''

'समाचार पत्र' चलाना आज एक उद्योग भी माना जाता है । समाचार पत्रों का काम केवल समाचार देना नहीं रहा है । उसका कार्य क्षेत्र बहुत बढ़ गया है । इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के बढ़ते हुए प्रभाव के कारण समाचार पत्रों ने जिन्दा रहने के लिए अपने आप में परिवर्तन किया है । समाचार पत्रों के अंतरंग एवं बाह्यअंग में बहुत ही परिवर्तन हो गया हैं । उसका पृष्ठ विन्यास, पृष्ठ सज्जा, रंगीन फोटो, आकर्षक छपाई, डिझाईन, ले आऊट सभी में परिवर्तन हुआ है । समाचार पत्रों का ये आकर्षक रूप देखकर पाठक फिर से समाचार पत्रों की ओर मुड़ रहे हैं ।

3.3.1.2 समाचार पत्र प्रसारण का आशय

समाचार पत्र जनसंचार के विभिन्न माध्यमों से एक है । समाचार पत्र यदि एक ओर सूचनाओं और समाचारों का संकलन, सम्पादन, प्रकाशन और प्रेषण है तो दूसरी ओर वह वर्तमान समय की धड़कनों को महसूस करने का साधन भी है । समाचारपत्र लोगों की सेवा करते हैं, अन्याय और दमन का प्रतिरोध करते हैं तथा रचनात्मक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित करते हैं । व्यापक अर्थों में समाचारपत्र समाज में उच्च मूल्यों और आदर्शों की प्रतिष्ठा में सहयोग देते हैं ।

समाचारपत्रों के उद्देश्य एवं कर्त्तव्य के बारे में महात्मा गांधीजी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है, ''समाचारपत्र का पहला उद्देश्य जनता की इच्छाओं, विचारों को समझना और उन्हें व्यक्त करना है । दूसरा उद्देश्य जनता में वांछनीय भावनाओं को जागृत करना है । तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक निर्भयतापूर्वक प्रकट करना है ।'' अनन्त गोपाल शेवडे ने 'समाचार व्यवस्थापन' किताब में लिखा है, ''प्रथम, वह ताजे से ताजे समाचार दें । दूसरे, वह संपादकीय टिप्पणियों या विशिष्ट लेखों द्वारा उन समाचारों की समीक्षा करके लोकमत को शिक्षित एवं जागृत करें । तीसरे, स्वास्थ, आनन्द और मनोरंजन के साधन उपलब्ध करे और चौथे, उस क्षेत्र के आर्थिक और औद्योगिक विकास के प्रति जागरूक रहें, योगदान दे ।''

समाचार पत्र समाज को सूचनाओं के साथ-साथ उसके बहुमुखी विकास के लिए आवश्यक विविध विषयों पर बहुत सामग्री भी देते हैं । समाचारपत्र देश की ज्वलंत समस्याओं पर सरकार के विचार प्रस्तुत करके देशवासियों को उनके प्रति जागरूक बनाने का कार्य करते हैं । समाचार पत्रों के संपादक विदेश नीति, अर्थनीति, धर्मनीति, राजनीति आदि सभी क्षेत्रों पर अपनी टिप्पणी प्रस्तुत करते रहते हैं ।

3.3.1.3 समाचारपत्र : सामूहिक गतिविधि

समाचारपत्र का कार्य व्यक्तिगत न होकर सामूहिक होता है । यह 'टीम वर्क' है । समाचारपत्र के प्रकाशन में कई व्यक्तियों के श्रम की आवश्यकता होती है । सम्पादक, उप-सम्पादक, संवाददाता, रिपोर्टर, प्रुफ रीडर, अग्रलेख लेखक, मुद्रणालय के कर्मचारी और अंत में विक्रेता इन सभी का समाचारपत्र व्यवसाय में सहभाग होता है ।

संपादक

सम्पादक का स्थान समाचार पत्रों में महत्त्वपूर्ण होता है । सम्पादक समाचार पत्र के संपादकीय कार्य का निर्देशन और निरीक्षण करता है । समाचार पत्र में प्रकाशित होनेवाली प्रत्येक सामग्री के लिए वह उत्तरदायी होता है । सम्पादक के कार्य के बारे में प्रो. रमेश जैन 'संपादन, पृष्ठ सज्जा और मुद्रण' इस किताब में लिखते है कि ''संपादक का कार्य एक प्रधान सेनापति का कार्य है । जिस प्रकार प्रधान सेनापति अपनी सेना का संचालन करता रहता है, उसी प्रकार संपादक को अपने समाचार पत्र का संचालन करना पड़ता है । जिस प्रकार सेना के चलने-फिरने, खाने-पीने, लडने-भिडने आदि पर सेनापति अपनी निगाह रखता है, उसी प्रकार सम्पादक सेनापति भी अपने रिपोर्टर, संवाददाता, उपसम्पादक आदि पर अपनी निगाह रखता है ।''

सम्पादक, समाचार सम्पादक तथा सहाय्यक सम्पादक से प्रतिदिन विचार-विमर्श करता है । इसमें समाचार, अन्य समाचार पत्रों की अपने समाचार पत्र से तुलना, त्रुटियाँ आदि पर विचार-विमर्श होता है ।

उपसम्पादक

मुख्य सम्पादक के पश्चात सबसे मुख्य पद उपसम्पादक का होता है । नेहा वर्मा 'पत्रकारिता एवं सम्पादन कला' किताब में उपसम्पादक के कार्य के बारे में लिखती है कि, ''समाचारों के संकलन में इसकी ही सबसे महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी होती है । समाचार प्राप्त करने के सूत्रों की देखभाल करने का दायित्व भी इनका ही होता है । विविध विषयों के संवादों को छाँटकर उनकी नकल तैयार करके सम्पादक के पास भेजने का काम भी उसी का है ।''

समाचार पत्र जितना बड़ा होगा, उसमें उपसम्पादकों की संख्या उतनी ही अधिक होगी । उपसम्पादक का सामान्य काम होता है - समाचारों के सभी विवरणों को प्राप्त करना, समाराचों में कांट-छांट करना, उनकी भाषा सम्बन्धी गलतियों को ठीक करना, शीर्षक लगाना और उन्हें समाचार पत्र में प्रकाशित होने योग्य बनाकर प्रेस में भेजना ।'' (संपादन, पृष्ठ सज्जा और मुद्रण - प्रो. रमेश जैन पृ. 35)

प्रमुख संवाददाता

शाखा कार्यालय के सभी प्रतिनिधि संवाददाताओं का यह प्रमुख होता है । प्रमुख संवाददाता स्वयं भी समाचार संकलन का कार्य करता है । अपने सहयोगियों में कार्य विभाजन करता है । किसी महत्त्वपूर्ण समाचार संकलन के अवसर पर वह अपने सहयोगियों का नेतृत्व करता है । अपने सहयोगियों ने दिया हुआ कार्य समय पर पूरा किया है या नहीं यह भी वह देखता है ।

संवाददाता

संवाददाता ''वह व्यक्ति है, जो प्रकाशन स्थल से दूर रहकर समाचारों को एकत्र कर, उन्हें तार, डाक या अन्य किसी संचार साधन के माध्यम से समाचार पत्र के कार्यालय में भेजता है ।'' (प्रिन्ट मीडिया लेखन - प्रो. रमेश जैन, पृ. 58) संवाददाता समाचारपत्र के आँख-कान तथा हाथ के समान होता है । समाचारों को एकत्रित करने के लिए सड़कों, गलियों तथा मोहल्लों का निरीक्षण करता हुआ घूमता है ।

संवाददाता को नगर निगम, नगरपालिका, विधानसभाओं, संसद भवनों और विविध संस्थाओं की बैठकों की कार्यप्रणाली के समाचार प्रस्तुत करने के लिए भेजा जाता है ।

हत्या, दुर्घटना, आग, डकैती, चोरी, बलात्कार आदि समाचारों के लिए संवाददाता को पुलिस स्टेशन, बस स्टैंड, रेल्वे स्टेशन, अग्निशामक दल, अस्पताल आदि जगहों पर जाना होता है । वहाँ से वह समाचार प्राप्त करके कार्यालय में भेजता रहता है ।

संवाददाता लेखनी का धनी होता है । साथ ही उसमें धैर्य, सहनशीलता, गोपनीयता, परिश्रम, वाक्पटुता, चातुर्य तथा दूरदर्शिता आदि गुण होना आवश्यक है ।

प्रुफ रीडर

प्रुफ रीडर का कार्य अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है । प्रुफ रीडर दो प्रकार के होते हैं -(1) कॉपी होल्डर, (2) प्रुफ रीडर। कॉपी होल्डर का काम प्रेस कॉपी को पढ़ना होता है । प्रुफ होल्डर के अनुसार प्रुफ रीडर को प्रुफ संशोधन करना पडता है ।

प्रुफ रीडर को भाषा की अच्छी जानकारी होनी चाहिए । गलत-सही का विवेक होना चाहिए । समाचार पत्र में गलतियों के लिए संपादकीय विभाग का जितना उत्तरदायित्व है उतनी ही जिम्मेदारी प्रुफ रीडर की भी होती है ।

अग्रलेख लेखक

प्रो. रमेश जैन अग्रलेख लेखक के संदर्भ में लिखते है, ''वह व्यक्ति जो समाचार पत्र के लिए नियमित रूप से अग्रलेख लिखता है उसे लीडर राइटर कहा जाता है । यह समीक्षा, प्रतिक्रिया या आलोचना से संबंधित समाचार भी लिखता है ।

मुद्रणालय कर्मचारी

समाचार पत्र के कम्पोजिंग तथा मुद्रण का जो कार्य करते है, उन्हें मुद्रणालय कर्मचारी कहते है । इसमें लाइनों मैकेनिक्स, मोनो मैकेनिक्स, मोटर मैकेनिक्स, लाइनों ऑपरेटर, मोनो ऑपरेटर, कलर एचर, प्रिंटर, इलेक्ट्रीशियन, कटर, कारपेण्टर, फिटर, बाइन्डर आदि आते हैं ।

विक्रेता

समाचार पत्र ने आज उद्योग का रूप लिया है । समाचार पत्र तैयार होने के पश्चात उसकी विक्री होना जरूरी है । इनकी बिक्री करने के लिए शहर, गाँव, मोहल्ले, चौराहे तथा नीजि वितरक के रूप में व्यवस्था होती है । समाचार पत्र विक्रेता को उचित कमिशन देकर उसको बिक्री के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ।

संक्षेप में समाचार पत्र का निर्माण करना एक सामूहिक कार्य है । उसमें समाज के विविध स्थरों से कार्य करने वाले लोग होते हैं । तभी समाचार पत्र बनता है ।

3.3.1.4 समाचार पत्र : समाचारों का खजाना

वर्तमान काल में समाचारपत्रों में समाचारों का खजाना भरा हुआ दिखाई देता है । इन समाचार पत्रों में स्थानिय समाचारों के साथ-साथ प्रांतीय, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय समाचारों का खजाना भरा हुआ मिलता है । समाचार पत्रों में जो समाचार देखने को मिलते हैं वे विभिन्न प्रकार के होते हैं । उनको निम्न वर्गों में बाँटा जा सकता है ।

राजनीतिक समाचार

राजनीतिक समाचारों में राजनीतिक गतिविधियों के समाचार होते हैं । इसमें राजनीतिक दलों की बैठकों, गुटबन्दियों, समझौतो आदि समाचार होते हैं । देश की वर्तमान तथा भावी राजनीति पर, घटनाओं और तथ्यों के साथ व्याख्यात्मक समाचार होते हैं ।

संसदीय समाचार

संसद तथा विधान मण्डल इन सदनों की कार्यवाही के दौरान समाचार पत्रों के पृष्ठ संसदीय समाचारों से भरे रहते हैं । देश तथा राज्य की राजनीतिक, सामाजिक आदि गतिविधियाँ सदनों की कार्यवाही से प्रकट होती रहती हैं । इन्हें समाचार पत्र ही जनता तक पहुँचाकर उनका मार्गदर्शन करते हैं ।

कानूनी समाचार

इसमें विभिन्न फैसलें, अदालती कार्यवाही, आरोप-प्रत्यारोप, याचिकाएँ, समन्स आदि से जुडे समाचार होते हैं ।

अपराध समाचार

अपराध समाचार में चोरी, डकैती, अपहरण, बलात्कार, हत्या, भ्रष्टाचार, तस्कर-व्यापार, घूसखोरी, चोरबाजारी तथा अनेक समाज विरोधी घटनाओं से जुडे समाचार होते हैं ।

वाणिज्य समाचार

समाचार पत्रों में वाणिज्य समाचारों के लिए विशिष्ट पृष्ठ का नियोजन रहता है । इसमें बाजार के उतार-चढ़ाव, शेयर की खबरें, नये व्यापार क्षेत्र, व्यापारिक संस्थानों की गतिविधियाँ, भविष्य में उनकी संभावनाएँ आदि के संदर्भ में समाचार होते हैं ।

खेल समाचार

खेल समाचार, पाठकों के प्रमुख आकर्षण का केन्द्र होते हैं । इसमें स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्थर पर आयोजित होनेवाली खेल प्रतियोगिता के समाचार होते हैं । जीत-हार, रिकॉर्डों का बनना-टूटना, खेल से जुड़ी प्रमुख हस्तियाँ, खेल-कौशल आदि के संदर्भ में समाचार होते हैं ।

कृषि समाचार

भारत कृषि प्रधान देश है । कृषि से संबंधित समाचार अनेक समाचार पत्रों में होते हैं । इसमें कृषि संबंधित चीजों की, फसलों, सब्जियों आदि के बाजार भाव दिए जाते हैं ।

सांस्कृतिक समाचार

विभिन्न विचार गोष्ठियाँ, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, साहित्यकारों के सम्मेलनों, उत्सव, नाटक, नृत्य, संगीत आदि से संबंधित समाचार होते हैं ।

इसके साथ-साथ औद्योगिक, रोजगार तथा मौसम की खबरें भी समाचार पत्रों में होती है ।

3.3.1.5 समाचार पत्र का प्राणतत्त्व : भाष शैली

समाचार पत्र में भाषा महत्त्वपूर्ण है । समाचार पत्र की भाषा कैसी हो इस संदर्भ में डॉ. माणिक मृगेश 'समाचार पत्रों की भाषा' इस किताब में लिखते है, ''समाचार पत्रों की भाषा एक अलग 'प्रोक्ति' है । जिस प्रकार साहित्य की अलग भाषा होती है, कार्यालयों की अलग भाषा होती है, फिल्मों की अलग भाषा होती है । ठीक उसी प्रकार समाचार पत्रों की भी एक अलग भाषा होती है । जो उसे भाषा की अन्य प्रयुक्तियों से अलगाती है । जहाँ एक ओर साहित्य की भाषा में तत्मस शब्दों की भरमार होती है और कार्यालयीन हिंदी में पारिभाषिक शब्दावली की अधिकता होती है । वहीं समाचार पत्रों की भाषा में आम बोलचाल के और देशज शब्दों का बाहुल्य होता है ।''

समाचार पत्र का दायरा बड़ा होता है । समाचार पत्र चरवाहे से लेकर प्रोफेसर तक पढ़े जाते हैं । सभी के समझ में आने के लिए समाचार पत्रों की भाषा बोलचाल की और रपटीली भाषा होनी चाहिए । साफ, सुलझी हुई, स्पष्ट और एक अर्थ वाली भाषा चाहिए । फीचर, समीक्षा, लेख, अग्रलेख आदि में साहित्यिक शैली का प्रयोग हो सकता है लेकीन समाचार लेखन में नहीं ।

समाचार पत्रों की भाषा निश्चयात्मक होनी चाहिए । अगर भाषा अनुमान पर होगी तो पाठक दुविधा में पड सकता हैं । जब किसी समाचार के बारे में निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता तब संवाददाता को कहा जाता है, बताया जाता है, विश्वस्त सूत्रों से पता चलता है, समझा जाता है, आदि वाक्यों से समाचार की स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए ।

संपादकीय

संपादकीय या अग्रलेख संपादकीय पृष्ठ में नियमित लिखा जाने वाला लेख है । समाचार पत्रों में संपादकीय का अपना विशेष महत्त्व है । संपादकीय का महत्त्व विशद करते हुए प्रो. रमेश जैन 'संपादन, पृष्ठ सज्जा और मुद्रण' इस किताब में लिखते हैं, '''संपादकीय' समाचार पत्र की आत्मा है, उसकी वाणी है । बिना संपादकीय के समाचार पत्र ऐसे ही है जैसे आत्मा - विहित शरीर । संपादकीय न केवल संपादक के व्यक्तित्व का द्योतक होता है, समस्त समाचार पत्र की झाँकी प्रस्तुत करता है ।

'संपादकीय' सामाजिक घटनाओं या विशेष समाचारों पर संपादक की टिप्पणी है । इस में समाचार से संबंधित तथ्य, समाचार की पृष्ठभूमि, समाचार का दूरगामी प्रभाव, घटनाओं के कारणों की व्याख्या, आलोचना, प्रशंसा, मार्गदर्शन, चेतावनी तथा सुझाव होता है ।

३.३.१.६ समाचार पत्र और विज्ञापन

समाचार पत्र में विज्ञापन उसके आय का एक प्रमुख स्त्रोत है । इसलिए समाचार पत्र को अधिकाधिक आकर्षक करना पड़ता है । तथा महत्त्वपूर्ण ढंग से नियमित विज्ञापन-दाताओं की खोज भी करनी पड़ती है । विज्ञापन के बिना समाचार पत्र का जीवित रहना मुश्किल है ।

विज्ञापन के बिना समाचार पत्र का प्रभाव कम हो सकता है । समाचार पत्र विज्ञापन के विभिन्न माध्यमों में सशक्त माध्यम है । इस संदर्भ में एन. सी. पन्त 'हिन्दी पत्रकारिता का विकास' इस किताब में लिखते हैं, 'विभिन्न प्रकार के विज्ञापन साधनों में समाचार पत्रों का स्थान सबसे ऊंचा माना जाता है क्योंकि समाचार पत्रों में कुछ विशेष गुण होते हैं, इसलिए समाचार पत्रों में विज्ञापन को सर्वोच्च तथा लाभप्रद माना जाता है ।''

समाचार पत्र में छपे विज्ञापनों को पाठक कभी भी पढ़ सकते हैं । इन विज्ञाापनों में विस्तृत जानकारी देने की सुविधा होती है । समाचार पत्र में विज्ञापित विज्ञापन लोगों की रूचि को स्मरण में रखकर दिया जाता है । ये विज्ञापनवर्गीकृत होने के कारण उन्हें पढ़ना सरल हो जाता है ।

समाचार पत्रों में विज्ञापन देते समय उसके गुणों को परखा जाता है । एन-सी-पन्त लिखते हैं, ''समाचार पत्रों के चुनाव का मुख्य मानदण्ड यद्यपि उनकी प्रचार संख्या, किन्तु वस्तु के लिए पाठक कौनसा समाचार पत्र अधिक पढ़ते हैं, इसकी भी जानकारी दी जाती है । इसके लिए कुछ एजेंसिया पाठकीय सर्वेक्षण भी करती हैं । महंगी चीजों के विज्ञापन बड़े-बड़े समाचार पत्रों में और सस्ती चीजों के विज्ञापन सस्ते समाचार पत्रों में दिए जाते हैं ।''

इसप्रकार विज्ञापन से समाचार पत्र स्वावलंबी बनते हैं । समाचार पत्रों में विज्ञापन देने के लिए खर्चा कम आता है, लेकिन उसका प्रसार बहुसंख्य लोगों तक हो जाता है । अत: समाचार पत्र में छपे विज्ञापन से हम अपनी संवेदना को सही आवाज दे सकते हैं ।

समाचार पत्र और विज्ञापन

समाचार पत्रों को लोकतन्त्र का चौथा स्तंभ माना जाता है । जनसंचार माध्यमों में समाचार पत्र की अपनी महत्ता है । देश भर में अनेक भाषाओं में प्रकाशीत करोड़ों लोगों के हाथ में समाचार पत्र जातें हैं । विविध घटनाओं की जानकारी के अतिरिक्त समाचार पत्र वस्तुओं, सेवाओं, बाजारों, दुकानदारों, उपभोक्ताओं, उत्पादकों के बीच निरन्तर अच्छे सम्बन्ध बनाने के लिए दिन-प्रतिदिन अनेकानेक विज्ञापन प्रकाशित करते हैं । इन विज्ञापनों के गुण इस प्रकार होते हैं -

1. समाचार पत्र रोज छपते हैं । अब विज्ञापन भी रोज दिया जाता है । इसका पाठकों पर स्थायी प्रभाव पड़ सकत हैं ।
2. समाचार पत्रों में मुद्रित सामग्री स्थायी है जिसे पाठक बार-बार पढ़ सकता है ।
3. समाचार पत्रों में विज्ञापन देकर अधिक से अधिक उपभोक्ताओं तक पहुँचना सरल है क्योंकि इनका वितरण क्षेत्रीय, राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किया जा सकता है ।
4. शीघ्रातिशीघ्र विज्ञापन प्रकाशित करवाने का समाचार पत्र एक सुलभ साधन है ।

5. समाचार पत्र अपनी आवश्यकता के अनुरूप चुना जा सकता है । जैसे भाषा, आर्थिक विज्ञापन, खेल-कुद आदि के विशेष पृष्ठ उपलब्ध होते हैं ।

6. समाचार पत्रों में पर्व विशेष, धार्मिक, सामाजिक उत्सव या राजनीतिक गतिविधियाँ, चुनाव आदि के अवसर पर तत्सम्बन्धी विज्ञापन सुविधा के अनुसार प्रकाशित किए जा सकतें हैं ।

7. समाचार पत्र में प्रकाशित विज्ञापन में शाब्दिक सम्प्रेषण के अतिरिक्त चिह्न, प्रतीक या चित्र का प्रयोग करके और टाइप की विभिन्नता द्वारा आकर्षक सम्प्रेषण भी सम्भव है ।

8. समाचार पत्रों को केवल कुछ ग्राहक ही नहीं अपितु उनके परिवार के सदस्य, पडोसी और कभी-कभी तो राह चलते लोग भी चाय या पान की दुकान पर पढ़ लेते हैं । अत: प्रसार से कहीं अधिक पाठक समाचार पत्रों में प्रकाशित विज्ञापनों को देखते और पढ़ते हैं ।

9. सहकारी विज्ञापनों के लिए भी समाचार पत्र का माध्यम उपयुक्त है । बार-बार विज्ञापन प्रकाशित होते रहने से उपभोक्ताओं में विश्वसनीयता बढ़ती है ।

3.3.2 पत्र-पत्रिकाएँ

3.3.2.1 पत्र-पत्रिकाएँ - स्वरूप, व्याप्ति

मुद्रित माध्यमों के अन्तर्गत पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं । ये पत्र-पत्रिकाएँ साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्विमासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक, वार्षिक आदि रूपों में प्रकाशित होती रहती हैं । एन. सी. पन्त 'हिन्दी पत्रकारिता का विकास' किताब में लिखते है कि - ''पत्र-पत्रिकाएँ सामान्य रूप से दैनिक जीवन की गतिविधियों, राजनैतिक घटनाचक्र और सामाजिक जीवन के विविध पक्षों को प्रस्तुत करती रहती हैं ।'' ये पत्र-पत्रिकाएँ मानवीरूचि पर आधारित होती हैं । इनमें अधिक से अधिक जानकारी के साथ जीवन की बहुरंगी झलकियाँ दिखाई देती हैं । के. पी. आर्य 'समाचार लेखन' किताब में लिखते है कि, ''देश के निर्माण में भूमिका, नित्य परिवर्तित हो रहे घटनाक्रम और समाज के विकास में पत्र-पत्रिकाओं का बहुत बड़ा योगदान है । समाचार पत्र; पत्रिकाएँ न केवल आम लोगों के लिए मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि ये उनके व्यक्तित्व के विकास में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं ।

व्याप्ति

मानवी जीवन में पत्र-पत्रिकाओं का विशेष महत्त्व है । समाचार पत्रों से पत्र-पत्रिकाओं की आयु अधिक होती है ।

पत्र-पत्रिकाओं में बहुत सी जानकारी के साथ दैनिक जीवन की गतिविधियाँ, सामाजिक जीवन, राजनीति आदि विविध पक्ष रहते हैं । इसलिए मानवी जीवन में पत्र-पत्रिकाओं का विशेष महत्त्व है ।

3.3.2.2 पत्र और पत्रिकाएँ - बहुविध आयाम

मुद्रित माध्यमों के अन्तर्गत पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं । ये पत्र-पत्रिकाएँ साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक, वार्षिक रूप में प्रकाशित होती रहती हैं । समाचार पत्रों से पत्र-पत्रिकाओं की आयु अधिक होती है । इन पत्रिकाओं में विभिन्न विषय तथा विविध विधाएँ रहती हैं । ये पत्र-पत्रिकाएँ मानवी रूचि पर आधारित होती हैं । इनमें अधिक से अधिक जानकारी के साथ जीवन की बहुरंगी झलकियाँ दिखाई देती हैं । जिसे रूचि से पाठक पढ़ता है ।

पत्र-पत्रिकाएँ - वर्गिकरण

मनुष्य अपने जीवन में अनेक विषयों में रूचि रखता है । इस रूचि के अनुसार पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है । उनका वर्गिकरण निम्न प्रकार से किया गया है -

1) साहित्यिक पत्रिकाएँ

इन पत्रिकाओं में विभिन्न विधाओं की रचनाएँ छपती हैं । जैसे कविता, कहानी, उपन्यास अंश, आलोचना, व्यंग्य, निबंध, यात्रा वर्णन, रेखाचित्र, रिपोर्ताज आदि । कुछ पत्रिकाएँ शिक्षा विषय को लेकर चलती हैं । जैसे व्यंग्य पत्रिका में सिर्फ व्यंग्य छपते हैं । 'कहानी' पत्रिका में सिर्फ कहानियाँ छपती हैं । इन पत्रिकाओं में साहित्य की नवीनतम सूचनाएँ होती हैं । विविध साहित्यिक आन्दोलनों की चर्चा होती है । साहित्य की नवीनतम प्रवृत्तियाँ नये हस्ताक्षरों को स्थान देकर साहित्यिक पत्रिका साहित्य की धारा को नया मोड़ देती हैं ।

2) राजनीतिक पत्रिकाएँ

विभिन्न राजनीतिक दल लोकसम्पर्क के साधन के रूप में अखबार तथा पत्रिकाएँ प्रकाशित करते हैं । इन पत्रिकाओं में अपने पक्ष को बल देने तथा विपक्ष को कमजोर करनेवाले लेख छापते हैं । सत्ता के खिलाफ अपने नीतिगत या दलगत विचार भी इसमें प्रकाशित किये जाते हैं । वास्तव में राजनीतिक पत्रिका का पहला एवं अंतिम लक्ष्य प्रोपोगंण्डा करना होता है ।

3) सांस्कृतिक पत्रिकाएँ

पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से संस्कृति की रक्षा एवं उसका प्रचार-प्रसार किया जाता है । ये पत्रिकाएँ संस्कृति के अंतरंग को समझने के लिए मददगार होती हैं ।

4) धार्मिक पत्रिकाएँ

विश्व में अनेक धर्म हैं । अपने-अपने धर्म के प्रचार हेतु प्रत्येक धर्म के अनुयायियों द्वारा पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता है । इन पत्रिकाओं में श्रद्धा तथा अंधश्रद्धा का खंडन-मंडन रहता है । धार्मिक विषयों की सामग्री का निरंतर प्रकाशन होता रहता है ।

5) उद्योग व वाणिज्य पत्रिकाएँ

बैंकिंग, उद्योग, वस्त्रोद्योग आदि उद्योगों की जानकारी तथा 'बाजार' को लेकर आवश्यक सूचनाएँ, जानकारियाँ, संबंध्द व्यक्तियों, व्यापारियों तथा ग्राहकों को देने के लिए इन पत्रिकाओं का प्रारम्भ हुआ है ।

6) विज्ञान-विषयक पत्रिकाएँ

औद्योगिकता के साथ-साथ दुनिया में वैज्ञानिकशक्ति का प्रभाव बढ़ा है । उपभोक्तावादी संस्कृति ने आज के जीवन में विज्ञान की अहम भूमिका स्वीकार की है । उद्योग धन्धों को गति देने तथा स्वास्थ्य संबंधी मामलों में विज्ञान अनिवार्य हो गया है । अंतरिक्ष के रहस्य, ग्रह-नक्षत्रों का महत्त्व तथा विश्व के हवामान भी विज्ञान की आँखें हमें दिखाती हैं । इन सभी की जानकारी विज्ञान विषयक पत्रिकाओं में होती है ।

7) महिला विषयक पत्रिकाएँ

इन पत्रिकाओं में महिलाउपयोगी लेख, उनकी समस्याओं का समाधान, तरह-तरह के पकवान्न बनाने की विधियाँ, पारिवारिक सन्दर्भ की कहानियों के साथ फिल्म जगत, छींटे और बौछार आदि रोचक स्तंभों से ये पत्रिकाएँ मनोरंजन के क्षण भी जुटाती हैं । महिलाओं के जीवन में समाज एवं गृहोपयोगी वस्तुओं के निर्माण के लिए इन पत्रिकाओं की अत्यंत आवश्यकता है ।

8) शिक्षा-संबंधी पत्रिकाएँ

इन पत्रिकाओं में शिक्षा संबंधी विविध पहलुओं पर जानकारी होती है । सरकार की शिक्षानीति, आयोगों की रिपोर्ट, अध्यापन की बदलती पद्धति, शिक्षक एवं विद्यार्थियों की समस्याएँ एवं उनका समाधान आदि विवरण इनमें होता है ।

9) खेल-पत्रिकाएँ

खेल संबंधी पत्रिकाओं में खेल की टेकनीक तथा खिलाडियों के खिलाडी जीवन के विविध पहलूओं को प्रकाशित किया जाता है । राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित खेल प्रतियोगिताएँ, ऑलम्पिक, वर्ल्ड कप क्रिकेट, टेंविटी-टेंविटी क्रिकेट, हॉकी, फुटबाल, शतरंज, बिलियर्ड आदि मैचों की जानकारी इनमें होती है ।

10) कृषि विषयक पत्रिकाएँ

भारत कृषि प्रधान देश है । इसलिए कृषि की उन्नति दृष्टि में रखकर कृषि विषयक पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है । फसलें अधिक से अधिक कैसे पैदा की जा सकती हैं, फसल को बर्बाद करनेवाले कीड़ों से कैसे बचाया जाए, खाद में कौनसे सत्व मिलाने से उत्पादन बढ़ेगा, बीज कौन सा डालना उपयुक्त होगा, आदि पर विचार विमर्श इन पत्रिकाओं में किया जाता है ।

11) बाल-पत्रिकाएँ

बाल पत्रिकाओं ने बालकों के मनोरंजन एवं उनके जीवन निर्माण से संबंधित विषयों का प्रकाशन होता है । इन पत्रिकाओं में बालकोपयोगी नाटक, कहानी, उपन्यास, हास्य-व्यंग्य आदि का भी प्रकाशन होता है ।

12) सरकारी पत्र-पत्रिकाएँ

ये पत्रिकाएँ सरकारी खर्च से सरकार की विकास यात्रा से साधारण जन का परिचय कराने के लिए प्रकाशित की जाती हैं । इसलिये इन्हें सरकारी पत्र-पत्रिकाएँ कहा जाता है । सरकार के विविध मंत्रालय, जैसे-सूचना एवं प्रसारण, रेल, रक्षा, कृषि, संचार, समाज कल्याण आदि अपनी पत्रिकाएँ प्रकाशित करते हैं ।

मानव जीवन में पत्र-पत्रिकाओं ने महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है । आज देश के हर प्रांत, क्षेत्र और भाषा में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन तेजी से हो रहा है । हर वर्ष इनकी संख्या बढ़ रही हैं । आज के इंटरनेट युग में पत्र-पत्रिकाओं की इंटरनेट कापी भी प्रकाशित हो रही है । रोचक लेआऊट, सुरूचिपूर्ण साज-सज्जा और श्रेष्ठ मुद्रण के कारण पत्र-पत्रिकाओं के प्रति लोगों का आकर्षण बढ़ता जा रहा है ।

3.3.2.3 हिंदी-मराठी पत्र-पत्रिकाओं का वर्तमान स्वरूप

वर्तमान युग में पत्र-पत्रिकाएँ जीवन का एक अंग बन गई हैं । पत्र-पत्रिकाएँ अनेक साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों की प्रसारक व विश्लेषिका हो गयी हैं । हिंदी तथा मराठी पत्र-पत्रिकाओं में कई विषयों में समानता दिखाई देती है ।

भूमण्डलीकरण और निजीकरण के इस दौर में पत्र-पत्रिकाएँ अंदर और बाहर दोनों ओर से बदल गई हैं । प्रा. राजेन्द्र इंगोले 'मुद्रित माध्यम' इस किताब में लिखते है कि, ''मुद्रित माध्यमों का यह बदलता स्वरूप जहाँ एक ओर सकारात्मक है, वहाँ दूसरी ओर वह नकारात्मक भी है । जैसे उसका बहिरंग का परिवर्तन सकारात्मक और नकारात्मक है, वैसे अंतरंग का परिवर्तन भी सकारात्मक और नकारात्मक है ।''

वर्तमान युग में पत्रिका का स्तर, सामग्री एवं नीति में काफी परिवर्तन हो गया है । आज प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी में पर्याप्त विकास हो जाने से पत्रिका का मुद्रण, साज-सज्जा, मुखपृष्ठ आदि आकर्षक हो गया है ।

पत्रिका में साज-सज्जा में काफी बदलाव हुआ है । इस सज्जा में पत्रिका का आकार, कागज, पाठ्य सामग्री में चित्र या रेखांकन का प्रयोग आकर्षक रूप में होने लगा है । पत्रिका का मुखपृष्ठ आर्ट पेपर या मोटे कागज पर छपने लगा है । यह मुखपृष्ठ रंगीन, चकाचक एवं पाठकों को आकर्षित करनेवाला होता है ।

पत्रिका में मुद्रित रचनाओं को विशिष्ट आकार में कंपोज किया जाता है, उसका शीर्षक आकर्षक होता है । पाठकों का ध्यान आकृष्ट करने के उद्देश्य से बॉक्स या इंट्रो दिया जाता है ।

पत्रिका में चित्रों का प्रयोग आकर्षक करने के लिए किया जा रहा है । चित्रों का चयन, उनका आकार-प्रकार, उसका रंग यह पत्रिका के उद्देश्य एवं स्वरूप को ध्यान में रखकर तय किया जाता है ।

वर्तमान युग में पत्र-पत्रिकाओं की भरमार हुई है, जिससे प्रतियोगिता बढ़ गई है । अपनी पत्रिका को सबसे बिकाऊ करने के उद्देश्य से उसमें हिंसा व कामुकता, ग्लैमर युक्त रचना व चित्रों का प्रकाशन बढ़ा है । संभवत: फिल्मी समाचार पत्र, पत्रिकाओं में यह अधिक दिखाई देता है ।

3.3.2.4 पत्र-पत्रिकाएँ : भाषा सामर्थ्य

पत्र-पत्रिकाओं में उसके विषय, प्रकाशन, उद्देश्य तथा उसकी नियतकालिकता पर भाषा का स्वरूप अवलंबित होता है । प्रो. रमेश जैन 'संपादन, पृष्ठ सज्जा और मुद्रण' इस पुस्तक में लिखते हैं कि, ''पत्रिका की भाषा सरल, सहज, सुबोध रखनी आवश्यक है । बाल-पत्रिकाओं की भाषा, खेल पत्रिकाओं की भाषा, सहित्य पत्रिकाओं की भाषा,

इंजीनियरी, फिल्मी, कानून, धर्म-दर्शन, अर्थ इन पत्रिकाओं की भाषा स्वभावत: अलग ही होती है । हर विषय की विशिष्ट शब्दावली होती है । पाठकों का मानसिक स्तर भी अलग होता हैं, इसलिए हर विषय की पत्रिका की भाषा अलग होगी ।''

भाषा की सरलता को अपनाने के लिए छोटे-छोटे किंतु आकर्षक वाक्यों का प्रयोग पत्र-पत्रिकाओं में होने लगा है । वर्तमान युग में हिंदी पत्रिकाओं में भाषिक स्वरूप सरल, बोधगम्य और सम्प्रेषण की क्षमता से परिपूर्ण है । इन पत्रिकाओं में बोलचाल के शब्दों का प्रयोग, नित नवीन शब्दों का निर्माण और दिन-प्रतिदिन घटित होने वाले विविध प्रकार की घटनाओं के परिप्रेक्ष में निर्मित नई शब्दावली का प्रयोग होने लगा है ।

एन.सी. पन्त 'हिंदी पत्रकारिता का विकास' किताब में लिखते है, ''पत्रकारिता ने साहित्यिक शैलियों की अपेक्षा रोचक, सरस और कौतुहलवर्धक शैलियों का प्रयोग करना आरम्भ कर दिया है । दैनिक समाचार पत्रों में या साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक पत्रों में ऐसी शैलियाँ विकसित हुई हैं, जो पाठक की ऊब को भी समाप्त करती हैं और शैलीगत जड़ता को भी तोड़ती हैं । पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होनेवाले लेख एवं रचनाएँ पूर्णतया सरस और कौतुहलवर्धक शैली में ही लिखे जाते हैं । शैली के ये गुण इतने अधिक विकसित हुए हैं कि इनसे छोटे-छोटे वाक्यों को लिखने की रूचि बढ़ी है । वर्तमान समय में सरस और रोचक शैली, केवल उपन्यासों तक ही सीमित नहीं रही, वरन-उसका प्रयोग पत्र-पत्रिकाओं में भी किया जाता है ।''

3.3.2.5 पत्र-पत्रिकाएँ : सामर्थ्य

कानपुर निवासी पं. जुगल किशोर शुक्ल ने 30 मई, 1826 को कलकत्ता से 'उदन्त मार्तण्ड' नामक प्रथम हिंदी पत्र प्रकाशित किया था । उन्होंने यह पत्र भारतियों के हितों की सुरक्षा के लिए निकाला था । उसके पश्चात समय-समय पर हिंदी भाषा के अनेक पत्र निकले । इन पत्रों में इतना सामर्थ्य था कि स्वाधीनता संग्राम में ये हथियार के रूप में कार्यरत रहें । जो उनकी बहुत बड़ी उपलब्धी थी ।

भारत जैसे विशाल देश में विभिन्न भाषाओं की हजारों पत्र-पत्रिकाएँ निकलती हैं । एन. सी. पन्त 'हिंदी पत्र-पत्रिकारिता का विकास' ग्रंथ में लिखते हैं ''आज संपूर्ण पत्र-पत्रिकाएँ आम जनता के बीच अपना विशिष्ट महत्त्व स्थापित कर चुकी हैं । समय के साथ बदलते प्रतिमानों और मूल्यों का अवलोकन करके, प्रत्येक पत्र अपनी विषय वस्तु को लोगों के सामने प्रस्तुत करते हैं ।''

पत्र-पत्रिकाएँ सामान्य रूप से दैनिक जीवन की गतिविधियों, राजनैतिक घटनाचक्र और सामाजिक जीवन के विविध पक्षों को प्रस्तुत करती रहती हैं । पत्र-पत्रिकाओं में हर किस्म की सामग्री उपलब्ध रहती हैं । अनेक प्रकार का साहित्य इन पत्रिकाओं में मिलता है । वे अनेक साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों की प्रसारक और विश्लेषिका का बन गयी हैं । पत्र-पत्रिकाओं ने हमारी सांस्कृतिक अभिरूचि को विकसित किया है ।

3.3.3 विज्ञापन

3.3.3.1 स्वरूप, परिभाषा

स्वरूप

आज का युग विज्ञापन का युग है । विज्ञापन अंग्रेजी शब्द 'Advertising' का हिंदी रूपांतरण है । एडवरटाइजिंग की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द 'एडवर्टर' (Advertor) से हुई है । जिसका अर्थ है 'टू टर्न टू' यानी किसी ओर मुड़ना-अर्थात किसी के प्रति लोगों को आकर्षित करना ।

हिंदी में 'विज्ञापन' शब्द का अर्थ 'विशेष ज्ञान' अथवा 'विशेष सूचना' देना है । जैसा कि जॉन एस. राइट का मानना है कि, '' विज्ञापन जनसंप्रेषण माध्यम द्वारा नियंत्रित, पहचान, योग्य सूचना प्रदान करने तथा मनाने का कार्य करता है ।''

विज्ञापन सामान्यत: किसी वस्तु, विधा या सेवा से उपभोक्ताओं को जानकारी देता है । उनमें खरीदने की इच्छा जाग्रत करता है । अथवा अनेक उपलब्ध वस्तुओं में से एक का चयन करने में मदद करता है । किसी वस्तु के ब्रांड विशेष के प्रति उनकी प्रतिबद्धता बढ़ाता है ।

शिक्षा के प्रचार व औद्योगिकरण के प्रभाव के परिणाम स्वरूप व्यक्ति उपभोक्ता बन कर रह गया है । अब उपभोक्ता की प्रत्येक गतिविधि का निर्णय विज्ञापन करता है । जैसे आप क्या खाएँगे, क्या पहनेंगे, कौनसे घर में रहेंगे, कहाँ पढेंगे, कहाँ प्रशिक्षण लेंगे, कहाँ नौकरी करेंगे, कहाँ व्यवसाय करेंगे, विवाह कहाँ करेंगे, आर्थिक स्त्रोत कहाँ से उपलब्ध होंगे इन सबका निर्णय करने में विज्ञापन मदद करता है ।

जनसंचार के क्षेत्र में विज्ञापन की महत्त्वपूर्ण भूमिका है । विज्ञापन वाणिज्यिक और व्यावसायिक क्षेत्रों के संवर्धन के लिए जनमत बनाता है । इसलिए आज के प्रचार माध्यम की भाँति विज्ञापन एक सशक्त माध्यम बन गया है । विज्ञापन सामग्री की जरिये उपभोक्ताओं तथा विज्ञापित वस्तुओं के बारे में संदेश आदि पहुँचाए जाते हैं । यह विज्ञापन सामग्री घर, कार्यालय तथा बाहर विभिन्न स्थानों पर हर समय उपलब्ध करायी जाती हैं ।

विज्ञापन की परिभाषा

वर्तमान समय में विज्ञापन ने बहुआयामी और बहुपक्षीय स्वरूप प्राप्त कर लिया है । भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानोंने विज्ञापन को परिभाषित करने का प्रयास किया है ।

1) 'ब्रिटेनिका' विश्वकोश

''विज्ञापन विज्ञापक द्वारा इच्छित भुगतान द्वारा दी गई वह घोषणा है जो किसी वस्तु अथवा सेवा के विक्रय, प्रोत्साहन, किसी विचार के विकास अथवा कोई अन्य प्रभाव उत्पन्न करने के उद्देश्य से दी गई हो ।''

2) शैल्डन

'विज्ञापन' को छवि निर्माण का साधन मानते हुए लिखते हैं, ''विज्ञापन वह व्यावसायिक शक्ति है, जिसके अन्तर्गत मुद्रित शब्दों द्वारा विक्रय वृद्धि में सहायता मिलती है । ख्याति का निर्माण होता है एवं साख बढ़ती हैं ।''

3) स्टार्च

विज्ञापन के अंतर्गत मुद्रित शब्दों द्वारा स्वपक्ष में लोगों को प्रेरित करने की बात 'स्टार्च' मानते है । उनके विचारों के अनुसार - ''विज्ञापन सामान्यत: मुद्रण के रूप में किसी प्रस्ताव को लोगों के समक्ष प्रस्तुत करता है, ताकि उन्हें उसके अनुरूप कार्य करने को प्रेरित किया जा सके ।''

4) जॉन वी-ल्युंड

''विज्ञापन बिक्रीकारी के किसी अन्य प्रकार की भाँति लोगों के विचारों और क्रियाओं को प्रभावित करने का प्रयास है ।''

5) लीच

लीच 'विज्ञापन' को प्रतिष्ठावृद्धि का साधन मानते हुए लिखते हैं, ''उत्पादित वस्तु का संबंध मात्र उपभोक्ता वस्तुओं के विज्ञापनों से है, जिसका उद्देश्य संस्थान की प्रतिष्ठा वृद्धि से होता है, या सार्वजनिक सेवा प्रस्तुत करना या सूचना देना होता है ।''

6) एस. रोनाल्ड हॉल

ये 'विज्ञापन' को 'विक्रय कला' की प्रणाली के रूप में परिभाषित करते हैं, ''विज्ञापन 'विक्रय कला' की एक ऐसी प्रणाली है, जिसमें वस्तु के लेखन, मुद्रण तथा चित्रण से सूचनाएँ दी जाती हैं ।''

7) गोपाल सरकार

'''विज्ञापन' एक तरह से किराये के वाहन के माध्यम से किया गया जनसम्प्रेषण है । यह विज्ञापन में दी गयी वांछित सूचना के माध्यम से पाठक में रूचि निर्माण करता है ।''

उपर्युक्त परिभाषाओं पर विचार करने से लगता है कि ये परिभाषाएँ विज्ञापन के संपूर्ण पक्षों और विशेषताओं को उद्घाटित नहीं करती । जैसे किसी परिभाषा में भुगतान परकता पर बल है, किसी में व्यावसायिक हित की बात कही गई है, तो कही छवि निर्माण की । इन सभी परिभाषाओं के निचोड़ के रूप में कुमुद शर्मा 'विज्ञापन की दुनिया' इस किताब में दी हुयी परिभाषा का उल्लेख किया जा सकता है । उन्होने लिखा है कि, ''विज्ञापन 'विक्रय कला' का एक भुगतानपरक, नियंत्रित और निर्धारित अवैयक्तिक संचार है, जिसमें उपभोक्ता या लक्षित जनसमूह को दृष्टि में रखकर मौखिक, लिखित तथा दृश्यात्मक सूचनाओं द्वारा विज्ञापनदाताओं के हक में जनसहमति और जन-स्वीकृति का आधार तैयार किया जाता है ।''

3.3.3.2 मुद्रित विज्ञापनों का स्वरूप

विज्ञापन मुख्यत: मुद्रित, श्रव्य तथा दृश्य-श्रव्य रूप में प्रेषित होते हैं । इसमें 'मुद्रित विज्ञापन' समाचारपत्र, पत्र-पत्रिकाएँ, पुस्तिकाएँ, हैन्डबील, होर्डिंग्ज, साइन बोर्ड आदि साधनों में प्रकाशित होते हैं ।

मुद्रित विज्ञापनों में छायाचित्र, रेखांकन, चित्र दृश्य तथा लोगों आदि होते हैं । मुद्रित विज्ञापनों में शीर्षक तथा छायाचित्र महत्त्वपूर्ण होते हैं । डी. के. राव 'आधुनिक विज्ञापन और जनसम्पर्क' इस किताब में लिखते हैं'' एक विज्ञापन कापी में शब्दों के द्वारा सन्देश दिया जाता है, या वह कोई छायाचित्र या नारा (स्लोगन) के माध्यम से सन्देश दिया जा सकता है । ये दोनों एक दूसरे के पूरक होते हैं । छायाचित्र विज्ञापन में सहज ही पाठक को अपनी तरफ आकर्षित करते हैं । इन विज्ञापनों में शब्दों के सही चयन के द्वारा भावनाओं को दृश्य रूप में उभारा जाता है । प्रभावशाली शीर्षक से उत्पाद की विशेषताओं को स्पष्ट किया जाता है । उपशीर्षक उत्पाद के महत्व से परिचित हो जाता है । शेष कलेवर में ब्राण्ड विशेष को क्यों खरीदे, इसके तर्कसंगत कारण दिये जाते है । इसमें उत्पाद के सम्बन्ध में तथ्य और आँकडे उसके परिक्षण, परिणाम, प्रमाण, गारन्टी, प्रदर्शन आदि होते है । अन्त में उपसंहार के माध्यम से सूचना तथा प्रेरणा दी जाती है । जिससे खरीददार उत्पाद खरीदने हेतु क्रियाशील हो सके ।

समाचारपत्रों में प्रकाशित विज्ञापन जनसंचार का एक अंग है । ये विज्ञापन विभिन्न उत्पादों के संबंध में जानकारियाँ देते हैं । इसके साथ ही जनजागरण का संदेश भी देते हैं । जैसे घातक रोगों से बचाव, टीकाकरण, स्वच्छता अभियान, स्वच्छ पेयजल को अपनाना आदि ।

समाचारपत्रों में प्रकाशित विज्ञापन उपभोक्ताओं को उत्पाद खरीदने के लिए प्रेरित करते हैं । विज्ञापन के कारण उपभोक्ता मोहित होकर उत्पाद की ओर आकर्षित होता है । 'विज्ञापन की दुनिया' इस किताब में कुमुद शर्मा लिखती है कि, ''प्रिंट मीडिया में विज्ञापन की माया कबीर की 'माया महाठगिनी हम जानी' से होड़ लेती दिखाई देती है, जो उपभोक्ता की संवेदना के सूक्ष्म तारों से इस तरह खिलवाड करती है, ऐसी छेड़खानी करती है कि उसे उद्वेलित किए बिना नहीं रहती । उपभोक्ता का उत्पाद खरीदने का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष आमंत्रण बड़ी कुशलता से देती है । उसमें उत्पाद खरीदने की अभूतपूर्व ललक पैदा कर देती है ।''

मुद्रित विज्ञापनों के प्रकार

मुद्रित विज्ञापन प्राय: समाचारपत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तिकाएँ, हैण्डबील, होर्डिंग्स, साइन बोर्ड आदि साधनों में प्रकाशित होते हैं । अत: मुद्रित विज्ञापनों के मुख्य रूप से निम्न प्रकार किए हैं । जैसे -

1) वर्गीकृत विज्ञापन, 2) सजावटी विज्ञापन, 3) विचित्र विज्ञापन

1) वर्गीकृत विज्ञापन

वर्गीकृत विज्ञापन मुख्यत: समाचारपत्रों तथा पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं । यह विज्ञापन विभिन्न वर्गों जैसे, 'किराए के लिए', 'खोया-पाया', 'कार-सेल', 'वधु-वर', जमीन-जायदाद, ज्योतिष आदि शीषर्कों के अन्तर्गत प्रकाशित होते हैं । राज्य व केंद्र सरकारों के विभिन्न विभागों से संबंधित नियुक्तियाँ, निविदा, सूचना, नीलामी सूचना आदि के विज्ञापन भी वर्गीकृत विज्ञापन के अन्तर्गत प्रकाशित किए जाते हैं ।

2) सजावटी विज्ञापन

सरकारी, गैर-सरकारी या व्यावसायिक प्रतिष्ठानों द्वारा पत्र-पत्रिकाओं के पृष्ठों पर बड़े आकार में सजावटी विज्ञापन प्रकाशित किए जाते हैं । इसतरह के विज्ञापन, चित्र, संदेश निर्माण और रंग संयोजन की दृष्टी से आकर्षक होते

हैं । राष्ट्रीय पर्वों, विशिष्ट समारोहों, महत्त्वपूर्ण घटनाओं के सजावटी विज्ञापन समाचारपत्र एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित किए जाते हैं ।

3) वित्तीय विज्ञापन

बैंक, जीवन बीमा निगम, शेयर मार्केट आदि वित्तीय संस्थानों को अपनी सेवाओं की ओर आकर्षित करने के लिए विज्ञापन देना पड़ता है । विभिन्न कम्पनियाँ अपनी कंपनी के शेयरों की बिक्री के लिए, चिकित्सा बीमा, वाहन बीमा, जीवन बीमा आदि बीमा कम्पनियाँ लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए, अपने विज्ञापन मुद्रित माध्यमों में प्रसारित करवाती हैं । वित्तीय विज्ञापन का उद्देश्य आर्थिक लाभ के लिए संस्थान का प्रचार-प्रसार करना होता है ।

4) सूचनाप्रद विज्ञापन

सूचनाप्रद विज्ञापनों का प्रयोग प्राय: जनता को शिक्षित करने, जागरूकता फैलाने तथा बौद्धिक व सांस्कृतिक चेतना व्याप्त करने के उद्देश्य से किया जाता है । यातायात, सुरक्षा, पुलिस व्यवस्था आदि से संबंधित आवश्यक सूचनाओं को प्रसारित, प्रचारित करने के लिए सूचनाप्रद विज्ञापनों का सहारा लिया जाता है ।

5) प्रमाणीकृत विज्ञापन

प्रमाणीकृत विज्ञापनों में किसी प्रसिद्ध खिलाडी, अभिनेता, अभिनेत्री या किसी क्षेत्र की विशिष्ट हस्ती से उत्पाद की प्रशंसा की जाती है या किसी उत्पाद की आवश्यकता बताई जाती है ।

6) पैनल

ये विज्ञापन, समाचारपत्र के शीर्षक, टाइटल या फोलियो के दोनों ओर के किनारों पर प्रकाशित किए जाते हैं ।

7) राष्ट्रीय विज्ञापन

जो विज्ञापन राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित किए जाते हैं, वे राष्ट्रीय विज्ञापन होते हैं । कार, मोटार साइकिल, टायर, खाद्य पदार्थों के ब्राण्ड आदि के विज्ञापन राष्ट्रीय समाचारपत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित किए जाते है ।

8) सहकारी विज्ञापन

जब एक वस्तु के अनेक उत्पादक मिलकर विज्ञापन देते हैं तब उसे 'सहकारी विज्ञापन' कहा जाता है । इसमें प्राय: मुख्य उत्पादक के साथ, स्थानीय विक्रेता मिलकर विज्ञापन देते हैं । कुछ उत्पादक अपने उत्पाद के साथ-साथ अपने वितरकों तथा एजेंटों का भी विज्ञापन देते हैं । यह भी सहकारी विज्ञापन का ही रूप हैं ।

9) उपहार विज्ञापन

जिन विज्ञापनों में अनेक उत्पादनों और लोगों के ध्यानाकर्षण के लिए व्यापारिक कंपनियाँ या औद्योगिक संस्थान 'उपहार योजना' का प्रयोग करते हैं, उन्हें 'उपहार विज्ञापन' कहा जाता है । विज्ञापनदाता इस तरह के विज्ञापन के माध्यम से उपहार पाने की लालसा में उपभोक्ताओं में उत्पाद खरीदने की आकांक्षा पैदा करते हैं ।

10) व्यापारिक विज्ञापन

इस विज्ञापनों के माध्यम से थोक या फुटकर व्यापारियों तथा अन्य इसी प्रकार के विक्रयकर्ताओं को कंपनी का माल खरीदकर बेचने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ।

3.3.3.3 मसौदा लेखन

विज्ञापनों का मसौदा लेखन निम्न भागों में विभाजित किया गया है -

1) शीर्ष पंक्ति (Headline)

2) अनुपुरक शीर्ष पंक्ति (Sub-Headline)

3) विषय वस्तु (Text)

4) विज्ञापनकर्ता का व्यापारी चिह्न (Monogram या Signature)

5) घोष वाक्य (Slogan या Baseline)

1) शीर्ष पंक्ति (Headline)

विज्ञापन के लिए उसकी शीर्ष पंक्ति (Headline) की विशेष महत्ता होती है । इससे पाठकों का ध्यानाकर्षण होकर उनके मन में कौतुहल तथा उत्सुकता जागृत होती है । जैसे -

'चलो पढ़ाये ..... कुछ कर दिखायें' (साक्षरता आंदोलन का विज्ञापन)

'घंटों का काम मिनटों में' (मिक्सर-ग्राइंडर का विज्ञापन)

2) अनुपूरक शीर्ष पंक्ति (Sub-Headline)

अनुपूरक शीर्षपंक्ति वाक्य के पूरक के रूप में विषय विस्तार हेतु प्रयोग में लायी जाती है । जैसे -

शीर्ष पंक्ति - ऐश्वर्या की खूबसूरती का राज

पूरक शीर्ष पंक्ति - नया इंटरनेशनल लक्स.

शीर्ष पंक्ति - ठंडे गरम की क्या है बात

पूरक शीर्ष पंक्ति - जब रूह अफजा है आपके साथ

3) विषय वस्तु (Text)

विज्ञापन की सफलता में मुख्य विषय वस्तु तथा उसके आकर्षक प्रस्तुतीकरण का बहुत बड़ा हाथ होता है । आकर्षक प्रस्तुतीकरण में ग्राहकों की मानसिकता, फैशन तथा तेजी से बदलते समयचक्र को ध्यान में रखना पड़ता है । विषयवस्तु के अन्तर्गत उत्पादित वस्तु की उपयोगिता, उसमें निहित गुण, अन्य उत्पादनों से हटकर उसमें अधिक गुणों का होना तथा कभी-कभी उसमें समाहित उत्कृष्ट तकनीकी बातों की जानकारी भी दी जाती हैं । जिससे ग्राहक उस वस्तु को खरीदने के लिए प्रेरित हो ।

4) विज्ञापनकर्ता का व्यापारी चिह्न (Monogram या Signature)

समाचारपत्रों के विज्ञापनों में विज्ञापनकर्ता कम्पनी अथवा फर्म का व्यापारी चिह्न अंकित करता है । जिससे सम्बन्धित की पहचान ग्राहकों को हो सके । यह बोध चिह्न अत्यंत संक्षिप्त और आकर्षक होने का प्रयास किया जाता है । इस व्यापारी चिह्न को सम्बन्धित संस्था, कम्पनी या फर्म का दर्पण कहा जा सकता है ।

'झुके हुए पलड़े का तराजू'

मफतलाल ग्रुप -

'कंधे पर पृथ्वी रखा, उठने के लिए तैयार आदमी'

मोटर कम्पनियों के अक्षरों का बोध चिह्न आदि देखे जा सकते हैं ।

5) घोष-वाक्य (Slogan या Baseline)

विज्ञापनों में बोधवाक्य या घोषवाक्यों का भी बखूबी प्रयोग किया जाता है । ऐसे वाक्य अत्यंत संक्षिप्त एवं आकर्षक होने के साथ सम्बन्धित कम्पनी की एक अच्छी खासी झाँकी प्रस्तुत कर देते हैं । ग्राहकों का कौतुहल, कल्पनाशक्ति तथा क्रय इच्छा को तीव्रता से जागृत करने के लिए तथा विश्वसनीयता निर्माण करने के लिए घोष या बोध वाक्यों का प्रयोग विज्ञापन में किया जाता है । जैसे -

खेतान -

'शिर्फ नाम ही काफी है'

पेप्सी कोला -

'ये है राइट चॉइस बेबी'

विज्ञापन का माध्यम चाहे कोई भी हो विज्ञापन में चित्रों, दृश्य बिंबों और प्रस्तुतीकरण के साथ विज्ञापन की भाषा को कलात्मक स्वरूप देकर उसे जीवंत और शक्तिसंपन्न बनाने का प्रयास किया जाता है ।

3.3.3.5 मुद्रित विज्ञापन और भाषा

मुद्रित विज्ञापनों में भाषा का लिखित रूप होता है । यह उत्पादन प्रक्रिया के वितरण से जुड़ी होने के कारण अन्य विधाओं से अलग, विशिष्ट होती है । विज्ञापन की भाषा जितनी आकर्षक, जीवन्त, पठनीय, प्रभावकारी व सहज होगी, उतना ही उत्पाद-वृद्धि में सहायक होगी । कुमुद शर्मा ने 'विज्ञापन की दुनिया' इस किताब में विज्ञापन की भाषा के निम्नांकित गुण निर्धारित किए हैं -

1) ध्यानाकर्षण

ध्यानाकर्षण के लिए संदेश रचना की भाषिक संरचना में, कथा तत्व, जिज्ञासा, नाटकीयता होनी चाहिए । शब्दों की पुनरावृत्ति या ऊटपटाँग शब्दों के प्रयोग से भी ध्यानाकर्षण निर्माण किया जा सकता है । एक नमकीन के विज्ञापन में 'खा ले नालायक' शब्दों के प्रयोग से ध्यानाकर्षण किया गया है । इस तरह सहज ही ध्यान आकर्षित होता है कि क्या खाने के लिए कहा जा रहा हैं । उपभोक्ता सबसे पहले विज्ञापन की भाषा को पढ़ता है । उसके बाद वह उस वस्तु की ओर ध्यान देता है । विज्ञापन की भाषा को लोकप्रिय बनाने के लिए लोकप्रिय मुहावरें, कहावतें, लोकोक्तियाँ, समाज में प्रचलित उपमा, रूपक आदि अलंकारों का आश्रय लेकर आकर्षक बनाया जाता है ।

2) कलात्मकता

विज्ञापन को कलात्मक रूप देने के लिए काव्यात्मक भाषा का प्रयोग किया जाता है । काव्यात्मकता से विज्ञापन की भाषा में विशिष्ट लय और तुकबंदी पैदा होती है । व्याकरण के अनुशासन को तोड़ते हुए काव्यात्मक स्वरूप में भाषा को ढालकर उसका प्रयोग किया जाता है । जैसे -

ठंडे गरम की क्या है बात

जब रूह अफजा है आपके साथ ।

3) स्मरणीयता

विज्ञापन की भाषा चुस्त, संक्षिप्त, सूत्रात्मक एवं प्रभावशाली होगी तो वह उपभोक्ता के मन-मस्तिष्क पर अमिट प्रभाव छोड़ देती है । ऐसा विज्ञापन लोगों को शीघ्र याद हो जाता है । सैंकडों विज्ञापनों की भीड़ में जिसकी भाषा सहज ग्राह्य एवं प्रभावशाली होगी वही विज्ञापन स्मरण में रहता है । जैसे -

सण्डे हो या मण्डे

रोज खाएँ अण्डे ।

4) सरलता, बोधगम्यता और जीवंतता

मुद्रित विज्ञापन पढ़े जाते हैं । लेकिन यह पढ़ना भी तब संभव होता है, जब विज्ञापन की भाषा सरल, बोधगम्य और जीवंत हो । कठिण शब्दों का प्रयोग न हो । वाक्य छोटे-छोटे हों । जो आम बोलचाल में, प्रचलन में हों । गुढ़, गंभीर, बोझिल शब्दों से बचना चाहिए ।

भाषा में जीवंतता लाने के लिए विज्ञापन लेखक संदेश रचना को नाटकीयता का पुट दे देता है, लेकिन नाटकीय तत्त्वों का सहारा इलेक्ट्रॉनिक मिडिया में प्रसारित होनेवाले विज्ञापनों में अधिक होता है । मुद्रित माध्यमों के विज्ञापनों में इसका प्रयोग कम किया जाता है ।

5) विक्रयशीलता

उत्पादित माल की माँग उपभोक्ताओं में पैदा की जाए, उपभोक्ता उत्पाद के प्रति ऐसे आकर्षण में बँध जाए कि उसे खरीदे बिना चैन न आए, यह भूमिका विज्ञापन की भाषा निभा सकती है । उत्पाद की श्रेष्ठता और गुणवत्ता को सिद्ध करने के लिए विज्ञापन की भाषा ही अपना कमाल दिखाती है । विशेषण, क्रियाविशेषण, विस्मयादिबोधक चिह्नों, निश्चयार्थक, आज्ञार्थक वाक्यांशो के प्रयोग द्‌वारा विक्रमशीलता का गुण पैदा किया जाता है ।

6) विश्वसनीयता

विज्ञापन की संदेश रचना में ऐसी भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए जिसमें उपभोक्ता वर्ग को संप्रेषित संदेश अतिशयोक्ति पूर्ण न लगे, बल्कि विश्वसनीय लगे । भ्रामक भाषा का प्रयोग भी विज्ञापन में नहीं करना चाहिए ।

7) आँचलिकता

भाषा को भावपूर्ण बनाने के लिए लेखक आँचलिक शब्दों का प्रयोग करता है । लोकगीतों की पंक्तियों, लोकोक्तियों को विज्ञापन की संदेश रचना में शामिल किया जाता है ।

8) हिंदी-अंग्रेजी का मिलाप

भूमंडलीकरण के दौर में अंग्रेजी का सिक्का चल रहा हैं । इस दौर में विज्ञापनों की भाषा को अंग्रेजी का सहारा लेना पड़ रहा है । विज्ञापनों में अंग्रेजी शब्दों की भरमार रहती हैं । जैसे -

- ♦ धुलाई का Hero मैल या अहा !
- ♦ No रूखापन, No चिपचिपाहट ।
- ♦ I love you रसना ।
- ♦ यही है Right choice baby ।
- ♦ डिटॉल The hundred percent sure
- ♦ ठंडा-ठंडा cool-cool ।

3.3.3.5 मुद्रित विज्ञापनों की विशेषताएँ

विज्ञापन लेखन एक सर्जनात्मक और मौलिक कार्य है । अंग्रेज विद्‌वान जेफ्रे लीच ने विज्ञापन को एक विशेष शैली के रूप में स्वीकारा है । विज्ञापन में निम्नांकित विशेषताएँ होनी चाहिए -

1) आकर्षण तत्त्व

2) श्रव्य तथा सुपाठ्‌यता

3) स्मरणीयता

4) विक्रय शक्ति

1) आकर्षण तत्त्व

विज्ञापन का आवश्यक गुण ध्यानाकर्षण की क्षमता है । ध्यानाकर्षण के लिए संदेश रचना की भाषिक संरचना में कभी कथा तत्त्वों या कथा चित्रों को पिरोकर, कभी जिज्ञासा की प्रवृत्ति जगाकर, कभी नाटकीयता पैदा करके, तो कभी शब्दों की पुनरावृत्ति करके, कभी ऊटपटाँग शब्दों के प्रयोग से ध्यानाकर्षण की क्षमता निर्माण की जाती है ।

जैसे -

'कुछ खास है हम सभी में' (कैडबरी)

'अब आप समझे, मैंने यह टिकिया क्यों ली ?' (रिन साबुन)

उपर्युक्त विज्ञापनों में 'कुछ खास है', 'अब आप समझे' जैसे शब्दों के प्रयोग से आकर्षण शक्ति निर्माण होती है ।

2) श्रव्य तथा सुपाठ्यता

विज्ञापन यदि श्रव्य या श्रव्य-दृश्य इन माध्यमों से संबंधित हो, तो उसकी भाषा में कोमलता, मधुरता और सांगीतिकता का गुण समाहित होना चाहिए । विज्ञापन समाचार पत्र-पत्रिका, बॅनर, होल्डर आदि पर प्रकाशित करना हो तो सुपाठ्य हो । सुपाठ्यता सुंदर और विविध प्रकार के मुद्रणाक्षरों के प्रयोग से आती है । इस प्रयोग में कलात्मकता होनी चाहिए । साथ ही सरल, रोचक और सुबोध भाषा का प्रयोग करना भी आवश्यक होता है ।

जैसे -

'जर्मनी की नई पेंट तकनीक का कमाल,

अब हीरो साइकिल रहे नई साल दर साल ।'

3) स्मरणीयता

विज्ञापन का लोगों को शीघ्र ही याद हो जाए, या लोग उसे गुनगुनाने लगें तो यह उसकी बहुत बड़ी शक्ति है । यह शक्ति प्राय: भाषा से निर्माण होती है । काव्यात्मकता के समावेश से विज्ञापन में प्रभावोत्पादकता के साथ-साथ स्मरणीयता भी आ जाती है । कुछ विज्ञापनों में स्मरणीयता तत्त्व से भरपूर नारों का प्रयोग किया गया है । जैसे -

'आई लव यू रसना ।'

'ठंडा मतलब ? कोका कोला ।'

'ताजा माँगो, माजा माँगो ।'

'ये दिल माँगे, मोअर ।'

'बी.एस.एन.एल. अपनों को अपनों से जोड़ो ।'

4) विक्रय शक्ति

विज्ञापन में उत्पाद की विक्रय शक्ति बढ़ाने के लिए आंतरिक ऊर्जा आवश्यक है । इसके लिए विज्ञापन लेखक में सृजनशील कलाकार की क्षमता होनी चाहिए । उत्पाद की विक्रय शक्ति की वृद्धि के लिए विज्ञापन को आकर्षक होने के साथ-साथ भाषिक स्तर पर संप्रेषणीय होना भी आवश्यक है । विक्रयशीलता बढ़ने के लिए बाजार में उपलब्ध अन्य उत्पाद के मुकाबले प्रदर्शित उत्पाद की श्रेष्ठता और गुणवत्ता को सिद्ध करने के लिए विज्ञापन की भाषा ही अपना कमाल दिखाती है ।

3.3.3.5 मुद्रित विज्ञापनों की विशेषताएँ

1. विज्ञापन की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि वह उपभोक्ता का ध्यानाकृष्ट करने में सक्षम हो ।
2. उसमें विश्वसनीयता हो ।
3. वह उत्पाद या विचारों की गुणवत्ता बताने में सक्षम हो ।
4. विज्ञापन की प्रस्तुति में मौलिकता और आकर्षण हो ।
5. वह रूचिकर, मनोरम और उपभोक्ता की स्मृति को कुरेदने में सक्षम हो।
6. विज्ञापन की भाषा तार्किक, सरल और सुबोध हो ।
7. विज्ञापन में किसी वस्तु, विचार का सकारात्मक संदेश हो ।
8. उसके चित्र लिखित तथ्य, ट्रेडमार्क और शीर्षक इत्यादि में ऐसा तालमेल हो जिसका प्रभाव पाठकों पर पड़े ।
9. विज्ञापन में गतिशीलता हो ।

3.3.4 रितोर्पाज

3.3.4.1 स्वरूप

'रिपोर्ताज' विधा का जन्म द्वितीय विश्व-युद्ध के समय हुआ । डॉ. हरदयाल लिखते है कि, ''रिपोर्ताज का जन्म द्वितीय विश्व-युद्ध के समय हुआ । जब साहित्यकारों ने युद्ध भूमिका के दृश्यों और घटनाओं की रिपोर्ट समाचारपत्रों में दी । इन रिपोर्टों में पेशेवर पत्रकारों की रिपोर्ट से स्वाभाविक भिन्नता आ गई थी । यह भिन्नता इनकी साहित्यिकता, कलात्मकता और उस उत्साह में थी जो युद्ध भूमि पर उपस्थित साहित्यकार, सैनिकों के हृदय में विद्यमान था । इस प्रकार अनायास ही 'रिपोर्ताज' का जन्म हो गया ।''

'रिपोर्ताज' मूलत: फ्रेंच (फ्रांसीसी) भाषा का शब्द है । 'रिपोर्ताज' शब्द अंग्रेजी के रिपोर्ट (Report) से बना है । पर 'रिपोर्ताज' तथा 'रिपोर्ट' में भिन्नता है । 'रिपोर्ट' का आशय किसी घटना, खबर, आँखों देखा हाल का यथातथ्य वर्णन है । जिसमें सारा विवरण दृश्यमान हो जाय । इसका सीधा संबंध समाचार पत्र से होता है। इसमें तथ्य चयन पर विशेष बल रहता है । जब किसी विषयका आँखों देखा या कानों सुना वर्णन इतने कलात्मक, साहित्यिक और प्रभावशाली ढंग से किया जाता है कि उसकी अमिट छाप हृदय पटल पर अंकित हो जाती है । तब उसे 'रिपोर्ताज' कहा जाता है ।

डॉ. संतोष गोयल 'जनसंचार माध्यम लेखन कला' इस किताब में लिखते है कि, ''रिपोर्ताज का लेखक रिपोर्टर की भाँति घटना से निर्लिप्त नहीं होता अपितु उसका हृदय उससे जुड़ा होता है ।'' 'रिपोर्ताज' में लेखक के व्यक्तित्व के साथ संवेदना और भावना निहित रहती है । रिपोर्ट का साहित्यिक रूप ही 'रिपोर्ताज' है । हिंदी में 'रिपोर्ताज' को 'सूचनिका', 'रूपनिका', और 'वृत्त निवेशन' भी कहा जाता है । फिर भी प्रचलित शब्द 'रिपोर्ताज' ही है ।

परिभाषा

रिपोर्ताज की कतिपय परिभाषाएँ इसप्रकार हैं -

1) डॉ. नगेन्द्र

''रिपोर्ताज फ्रांसीसी भाषा का शब्द है । जिस रचना में वर्ण्य-विषय का आँखों देखा, या कानों सुना ऐसा विवरण प्रस्तुत किया जाए कि पाठक की हृदयतंत्री के तार झंकृत हो जाए, वह उसे भूल न सके, उसे रिपोर्ताज कहते है ।''

2) डॉ. भगीरथ मिश्र

''किसी घटना या दृश्य का अत्यन्त विवरणपूर्ण, सूक्ष्म, रोचक वर्णन इसमें इस प्रकार किया जाता है कि वह हमारी आँखों के सामने प्रत्यक्ष हो जाय और हम उससे प्रभावित हो उठे ।''

3) गुलाबराय

''रिपोर्ट की भाँति रिपोर्ताज में घटना या घटनाओं का वर्णन तो अवश्य होता है, किन्तु इसमें लेखक के हृदय का निजी उत्साह रहता है । जो वस्तुगत सत्य पर बिना किसी प्रकार का आवरण डाले उसको प्रभावमय बना देता है ।''

4) डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया

''यह अंग्रेजी शब्द की बजाय 'फ्रांसीसी' शब्द 'रिपोर्ताज' से विकसित है । जिसमें किसी घटना का यथातथ्य वर्णन किया जाता है । घटना का यथा तथ्य विवरण कलात्मक तथा रस संवेदनात्मक रूप में दिया जाता है । शैली कथात्मक अवश्य होती है, पर यह कथा नहीं । विवरण डायरी पर आधारित हो सकता है, पर यह डायरी नहीं है ।''

5) डॉ. रामचंद्र तिवारी

''जब सफल पत्रकार या साहित्यकार वास्तविक घटना को अपनी भावना में रँगा कर बिम्बधर्मो भाषा के माध्यम से सजीव बनाकर प्रस्तुत करता है, तब वह 'रिपोर्ताज' की कला-सृष्टि करता है ।''

6) डॉ. जीवन प्रकाश जोशी

''संवाददाता की रिपोर्ट जब अपनी शैली में कुछ साहित्यिकता का समावेश कर लेती है, तब वह रिपोर्ताज कहलाती है ।''

उपर्युक्त परिभाषाओं के अध्ययन के पश्चात सार रूप में कहा जा सकता है कि संघर्ष के क्षणों को तत्काल शब्दों में प्रस्तुत करना रिपोर्ताज है । युगचेतना, युगसंघर्ष और जीवन की साधारणता को कला में स्थापित करने की प्रवृत्ति से ही इसे साहित्यिकता प्राप्त होती है । घटनाओं की तत्कालीन मार्मिक प्रतिक्रिया ही आकर्षक शैली का परिधान ग्रहण कर 'रिपोर्ताज' बनती है । (मीडिया और प्रसारण - डॉ. रमेश मेहरा)

व्याप्ति

'रिपोर्ताज' संचार तथा साहित्य की नई विधा है । साहित्य की पत्र-पत्रिकाओं, उपन्यासों, ललित निबंध संग्रहों, में रिपोर्ताज छपते हैं । संचार माध्यमों के लिए इस विधा में बहुत सारी संभावनाएँ हैं । इसका कथा तत्व श्रोताओं को बाँधता है और नाटकीयता, रोचकता, उत्सुकता पैदा करता है । तथ्यपरकता इसे वर्तमान से जोड़कर इतिहास का दस्तावेजी उद्घोषक बना देती है । इसमें कल्पना प्रस्तुत अभिव्यंजना होती है, परंतु तथ्यों पर आधारित होने के कारण यह प्रामाणिक रिपोर्ट भी होता है ।

'रिपोर्ताज' मानवीय संवेदनाओं से संबंधित होता है । 'रिपोर्ताज' में घटना का विवरण, घटना स्थल का वातावरण तथा घटना का अंतश्चेतन होता है । रिपोर्ताज किसी विशिष्ट घटना, दृश्य, उत्सव, युद्ध, अकाल, बाढ़ आदि का होता है ।

3.3.4.2 रिपोर्ताज : उपयुक्तता

'रिपोर्ताज' एक नयी विधा के रूप में सामने आया है । मीडिया के लिए 'रिपोर्ताज' में काफी संभावनाएँ हैं । 'रिपोर्ताज' की माँग मुद्रित माध्यम में है, तथा रेडिओ के साथ दूरदर्शन पर भी । रांगेय राघव, फणीश्वरनाथ रेणु, शिवदान सिंह चौहान, अमृतराय आदि लेखकों ने मुद्रित माध्यमों के लिए अच्छे रिपोर्ताज लिखे हैं ।

'रिपोर्ताज' रेडियो के लिए बहुत उपयोगी है । मधुकर गंगाधर 'रेडियो लेखन' इस किताब में लिखते है, ''रेडियो में दृश्य नहीं होता । रिपोर्ताज शब्दों के द्वारा उस कमी को पूरा करता है । अत: अपनी चित्रमयता के कारण एक अच्छा 'रिपोर्ताज' रेडियो की अन्य विधा को मात कर सकता है, इसकी बड़ी संभावना है ।''

दूरदर्शन पर रिपोर्ताज ने अपना सामर्थ्य और उपादेयता सिद्ध कर दी है । डॉ. जितेंद्र वत्स ने 'हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार माध्यम' किताब में लिखा है, ''दूरदर्शन पर भी इस विधा ने बहुत ही सकारात्मक प्रभाव दिखलाया है । सी.एन.एन. द्वारा अफगानिस्तान पर अनेक मार्मिक रिपोर्ताज आए हैं । इनकी बहुत ही सराहना हुई है । कॅमरे द्वारा दृश्यात्मकता कैद कर, उसे मार्मिकता के साथ जिस कुशलतापूर्वक टी.वी. पर रिपोर्ताज प्रस्तुत किए गए, इससे इस विधा ने अपनी सामर्थ्य और उपादेयता सिद्ध कर दी है ।''

रिपोर्ताज की विशेषताएँ

1. रिपोर्ताज के तथ्य कथन में कलात्मकता और साहित्यिकता का पुट रहता है ।
2. रिपोर्ताज वर्तमान से संबंधित होने के कारण यह सामयिक होता है ।
3. रिपोर्ताज में कथात्मकता होती है ।
4. रिपोर्ताज में तथ्यपरकता होने के कारण इसमें लेखक तटस्थ रहता है ।
5. इसमें घटना या दृश्य की प्रधानता होती है । इसीकारण इसमें परिस्थिति और वातावरण के चित्रण का महत्व अधिक है ।
6. रिपोर्ताज में घटनाओं का सहज मनोवैज्ञानिक रूप रहता है ।
7. रिपोर्ताज में वर्णित घटना या घटनाएँ बड़ी तीव्रता से आँखों के सामने कौंध जाती हैं ।
8. रिपोर्ताज प्रत्यक्ष दर्शित घटनाओं का वर्णन होता है ।
9. रिपोर्ताज में सजीवता, रोमांचकता, बिम्बधर्मिता और विश्वसनीयता रहती है ।

3.3.4.3 रिपोर्ताज : मसौदा लेखन

'रिपोर्ताज' सामान्यत: साहित्यकार की कलात्मक रिपोर्ट है । 'रिपोर्ताज' के लेखक घटना-स्थल पर उपस्थित रहता है । वह आँखों-देखी घटनाएँ, बातें ही लिखता है । इसके लिए कथात्मकता आवश्यक है । रिपोर्ताज के वर्ण्य-विषय के रूप में अकाल, बाढ़, सुखा, महामारी, युद्ध की विभीषिका तथा मानवीय सुख-दुख, पराक्रम और पलायन, संघर्ष जैसे मार्मिक विषय रहते हैं । लेखक इनके पहलुओं एवं तथ्यों को ग्रहण करता है और कलात्मकता से उसे उजागर करता है ।

रिपोर्ताज मसौदा लेखन के संदर्भ में डॉ. रमेश मेहरा निम्नांकित बातों को आवश्यक मानते है -

1) यथातथ्य की रक्षा

सर्वप्रथम 'रिपोर्ताज लेखक' को 'रिपोर्ताज' में यथातथ्यता की रक्षा करनी चाहिए । कारण 'रिपोर्ताज' नितांत सत्य घटना को ही अपना वर्ण्य-विषय बनाकर चलता है । उसका आधार आँखों देखी और कानों सुनी घटनाएँ होती

हैं । किसी कल्पना के लिए उसमें अवकाश नहीं होता । लेखक अपनी भावनाओं के अनुरूप उस घटना में केवल रंग भर देता है । इस दृष्टि से 'रिपोर्ताज' लेखक को संतुलन और निष्पक्षता पर विशेष ध्यान देना पडता है ।

2) जीवंतता का अनुभव

'रिपोर्ताज लेखन' ऐसा हो कि वह पढ़ने में जीवंतता का अनुभव कराए । डॉ. वीरपाल वर्मा के शब्दों में, ''साहित्य की वह प्राणवत्ता जो पाठकों को निरंतर एक स्फुर्ति देती रहती है, जीवंतता कहलाती है । रिपोर्ताज जड़ एवं शुष्क घटना को अपनी साहित्यिक कला से चेतन एवं सरस बनाकर प्रस्तुत करता है, यही रिपोर्ताज की सजीवता, जीवंतता है । इसके कारण ही रचना निष्प्राण नहीं लगती ।''

3) नाटकीयता का समावेश

रिपोर्ताज लेखन में नाटकीयता का समावेश आवश्यक है । घटना-विशेष से संबंधित पात्रों की मुख-मुद्रा, आगमन के दृश्य का सूक्ष्म विवरण, नाटक जैसा देखने को मिलना चाहिए । डॉ. वीरपाल वर्मा के शब्दों में, ''उसे लगे कि आँखों के सामने ही विचित्र परिस्थितियाँ दिखलाई जा रही हैं । कुछ होने जा रहा हैं कि, अचानक कोई व्याघात आ जाता है । पाठक को फिर लगता है कि जो होने जा रहा था, वह अब नहीं होगा कि परिस्थितियाँ तीव्रता से, एक झटके के साथ बदलें और वही हो जाए जो होने जा रहा था । यही नाटकीयता है ।''

4) रोचकता और संक्षिप्तता

'रिपोर्ताज लेखन' में मर्मस्पर्शिता, रोचकता, रसात्मकता तथा संक्षिप्तता होनी चाहिए । संक्षिप्तता का गुण 'रिपोर्ताज' को सटीक और पठनीय बनाता है । रिपोर्ताज का लम्बा होना उसकी प्रभावान्विति को क्षीण करता है ।

5) मर्मस्पर्शिता

जब साहित्यकार के शब्द पाठक के मन को अपनी दुखातिरेकी अभिव्यक्ति से आंदोलित कर देते हैं तब रचना का वह अंश मार्मिक और मर्मस्पर्शी कहलाता है । ये मार्मिक स्थल रचना की संप्रेषणीयता को बढ़ा देते हैं । पात्रों की विवशता, उनका असहनीय दु:ख, भाग्य की विडम्बना आदि 'रिपोर्ताज' में मार्मिकता का समावेश करते हैं जिससे पाठक द्रवित होता है और 'जगबीती' को 'आपबीती' अनुभूत करने लगता है ।

6) रसात्मकता का समावेश

'रिपोर्ताज लेखन' में रसात्मकता आवश्यक है । किसी घटना या दृश्य के शुष्क और नीरस विवरण में भी जब लेखक अपने शिल्प के माध्यम से मार्दवता और सरसता भर देता है वही रिपोर्ताज में रसात्मकता आ जाती है । घटना विवरण की भावमयी शब्द संयोजना रिपोर्ताज को सकल बना सकती है ।

7) त्वरा

रिपोर्ताज में घटना का कम-से कम शब्दों में प्रभावपूर्ण वर्णन किया जाता है । इस दृष्टि से 'त्वरा' रिपोर्ताज में अनिवार्य हो जाती है । इसमें क्रिया का सौंदर्य 'त्वरा शक्ति' के द्वारा अद्भुत होता है । डॉ. विश्वंभरनाथ उपाध्याय के विचारों के अनुसार ''रिपोर्ताज में शब्द उसी प्रकार 'त्वरा' पकड़ते हैं जैसे बंदूक की गोली ।''

8) परिवेश का अंकन

रिपोर्ताज लेखन में घटना का वर्णन करने के साथ परिवेश का अंकन भी किया जाना चाहिए । उसके अंकन के बिना रिपोर्ट अधूरी, अप्रामाणिक हो जाती है । डॉ. श्यामसुंदर घोष के अनुसार, ''रिपोर्ताज की चित्रात्मकता प्राय: परिवेश की चित्रात्मकता भी होती है । रिपोर्ताज लेखक वस्तु पर जितना ध्यान देता है, उतना ही ध्यान उसके परिवेश पर भी देता है । उसका यह परिवेश-ग्रहण रागात्मक और आंतरिक भाव से होता है । परिवेश का फोटोग्राफिक चित्रण करते हुए भी वह उस पर अपनी संवेदना की कूची फेर देता है ।''

9) भाषाशैली

रिपोर्ताज की कलात्मकता लेखक के सूक्ष्म निरीक्षण, उसकी भावुकता और उसके शब्द चयन पर आधारित होती है । भाषा का संवेदनशील उपयोग, छोटे-छोटे अनुच्छेद, तारतम्य, उद्धरण आदि रिपोर्ताज के शिल्प को प्रभावशाली तथा संप्रेषणीय बनाते हैं । शैली की दृष्टि से हास्य-व्यंग्यात्मक, चित्रात्मक, विश्लेषणात्मक-विचारात्मक आदि शैलियों का प्रयोग 'रिपोर्ताज' लेखन में किया जाता है ।

3.3.4.4 रिपोर्ताज की भाषा

रिपोर्ताज की भाषा सुगम, सरल और प्रगल्भ होनी चाहिए । रिपोर्ताज लेखन में लेखक के तत्कालिन परिवेश जन्य भाषाज्ञान का बहुत बड़ा महत्त्व होता है । क्योंकि 'गागर में सागर' भर देना रिपोर्ताज लेखक का उद्देश्य होता है । रिपोर्ताज की भाषा से पाठक वर्ग को वास्तव घटनाओं का ज्ञान, परिक्षण होता है । तभी तो रिपोर्ताज की कलात्मकता लेखक के सूक्ष्म-निरिक्षण, परिक्षण तथा उसकी भावुकता और उसके 'शब्द चयन' पर आधारित होती है । रिपोर्ताजकार जड़ तथा रसहीन घटना को अपनी साहित्यिक कलात्मकता से उसमें रस भर देता हैं । इसके लिए उसकी भाषा सादगी भरी परंतु रसयुक्त होनी चाहिए ।

रिपोर्ताज की भाषाशैली के संदर्भ में 'मीडिया और प्रसारण' किताब में डॉ. रमेश महेश लिखते है कि, ''भाषा का संवेदनशील उपयोग, छोटे-छोटे अनुच्छेद, तारतम्य, उद्धरण आदि रिपोर्ताज के शिल्प को प्रभावशाली तथा संप्रेषणीय बनाते हैं । शैली की दृष्टि से हास्य-व्यंग्यात्मक, चित्रात्मक, विश्लेषणात्मक, विचारात्मक आदि शैलियों का प्रयोग 'रिपोर्ताज' लेखन में किया जाता है ।''

3.3.4.5 रिपोर्ताज का हिंदी स्वरूप

हिंदी में रिपोर्ताज विधा नयी है । हिंदी में इस विधा का प्रारम्भ सन 1940 ई. के आस-पास से माना जाता है । शिवदान सिंह चौहान कृत 'मौत के खिलाफ जिन्दगी की लड़ाई' शीर्षक से पहला रिपोर्ताज 'हंस' पत्रिका में 'समाचार और विचार' स्तंभ के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था । जिसमें उन्होंने राष्ट्र का स्वतन्त्रता से पूर्व का जीवन्त परिवेश चित्र उकेरा ।'' (हिन्दी गद्य की नयी विधायें-राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव)

हिंदी में 'रिपोर्ताज' विधा का साहित्य-भण्डार अन्य गद्य विधाओं की अपेक्षा विशाल नहीं है । जो उपलब्ध है वह निम्नलिखित रूप में प्रकाशित हुआ है ।

1) पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित रिपोर्ताज

2) उपन्यासों में प्रसंगवश आये रिपोर्ताज

3) ललित निबन्धादि संग्रहों में उपलब्ध रिपोर्ताज

4) गोष्ठी-प्रसंग और सभा-अधिवेशनों पर आधारित रिपोर्ताज

हिंदी साहित्य में 'रिपोर्ताज' का सृजन संवेदनशील साहित्यकारों द्वारा हुआ है । इन साहित्यकारों में प्रमुख हैं रांगेय राघव, अमृतलाल नागर, प्रकाशचंद्र गुप्त, भगवतीशरण उपाध्याय, फणीश्वरनाथ रेणु, जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी, निर्मला वर्मा, कमलेश्वर, लक्ष्मीकान्त वर्मा, धर्मवीर भारती आदि हैं ।

इन साहित्यकारों ने बंगाल का अकाल, साम्प्रदायिक दंगें, भारत-चीन युद्ध, बाढ़, सुखा, अग्निकाण्ड, भूकम्प, आतंकवाद, विमान दुर्घटना, बंगलादेश स्वाधीनता संग्राम आदि विषयों पर रिपोर्ताज लिखे हैं ।

रांगेय राघव ने बंगाल के अकाल के समय अकालग्रस्त क्षेत्रों का दौरा कर 'तुफानों के बीच' रिपोर्ताज लिखा है । जो सन 1946 में 'विशाल भारत' में प्रकाशित हुआ था । इसके बाद हिंदी में प्रकाशचंद गुप्त, रामनारायण उपाध्याय, धर्मवीर भारती, शमशेर बहादूर सिंह, श्रीकांत वर्मा, फणीश्वरनाथ रेणु, जगदिश प्रसाद चतुर्वेदी, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा आदि रचनाकारों तथा पत्रकारों ने अनेक मार्मिक एवं रोचक रिपोर्ताज लिखे हैं । भदंत आनंद कौसल्यायन का 'देश-की मिट्टी बुलाती है', धर्मवीर भारती का 'युद्ध यात्रा', कन्हैयालाल मिश्र का 'क्षण बोले, कण मुस्काएँ', शमशेर बहादूर सिंह का 'प्लाट का मोर्चा', फणीश्वर नाथ रेणु का 'धनजल-ऋणजल' विदेकीराय का 'बाढ़ ! बाढ़ !! बाढ़ !!! और निर्मल वर्मा का 'प्राग एक स्वन्प' आदि हिंदी में उत्कृष्ट रिपोर्ताज हैं ।

3.3.5 उद्घोषणा

3.3.5.1 स्वरूप

'उद्घोषणा' एक प्रकार की कला है । उद्घोषणा को अंग्रेजी में Announcement कहा जाता है । उद्घोषणा का संबंध मुख्य रूप से रेडियो से है । रेडियो पर समाचार, नाटक, वार्ता, संगीत आदि कार्यक्रम प्रसारित होते हैं । उद्घोषक इन कार्यक्रमों की आरंभिक और अंत की सूचना देने का कार्य 'उद्घोषणा' के माध्यम से करता है । ये उद्घोषणाएँ रेडियो प्रसारण के शुरू होने से लेकर रात को प्रसारण बन्द होने तक जारी रहती है । श्रोताओं को कार्यक्रम की सूचना मानवी रूचि के अनुरूप दी जाती है । जिससे श्रोता के मन में उसे सुनने, समझने और जानने की उत्सुकता बनी रहती है ।

परिभाषा

''उद्घोषक द्वारा कार्यक्रमों के बारे में दी जाने वाली जानकारी को उद्घोषणा कहा जाता है ।''

3.3.5.2 व्याप्ति

विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी उद्घोषणा से मिलती है । उद्घोषणा से कार्यक्रम के सारे सूत्र उद्घोषक के हाथ में रहते हैं । रेडियो के सभी कार्यक्रम उद्घोषणा के सहारे ही चलते हैं । दूरदर्शन में सीमित रूप में उद्घोषणाएँ होती हैं ।

उद्घोषक प्रस्तुत होने वाले कार्यक्रमों की प्रास्ताविकी रखता है और श्रोता तथा दर्शक को उस कार्यक्रम के रसास्वादन की मनोभूमिका तैयार करता है ।अत: सभी प्रकार के कार्यक्रमों विशेष रूप से आकाशवाणी के प्रसारण में उद्घोषणा का बहुत अधिक महत्त्व है । उद्घोषक के लिए उद्घोषणा एक उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य है । मधुकर गंगाधर के शब्दों में, ''जिस प्रकार पूजा के लिए धूप-दीप वातावरण निर्माण करता है, उसी प्रकार उद्घोषणा भी कार्यक्रम के लिए वातावरण बनाती है । एक अच्छे उद्घोषक द्वारा की गई व्यवस्थित उद्घोषणा कार्यक्रम सुननेवालों को कार्यक्रम के प्रति विशेष आकर्षण प्रदान करती है ।''

3.3.5.3 उद्घोषणा - मसौदा लेखन

रेडियो के कार्यक्रम रूपी महल का प्रवेश-द्वार वस्तुत: उद्घोषणा लेखन ही है । किसी कार्यक्रम की आरंभिक और अंत की सूचना देने का कार्य उद्घोषणा के माध्यम से ही होता है । उद्घोषणा लेखन में निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है -

1) उद्घोषणा में उन शब्दों का प्रयोग करना चाहिए जो सामान्य बोलचाल में प्रयुक्त होते हैं , और जन-साधारण जिनको आसानी से ग्रहण कर सके । कठिन शब्दों से सदैव बचना चाहिए ।

2) वाक्य सरल हों, छोटे-छोटे हों, शुद्ध तथा रोचक हों । विषय के अनुरूप उनमें प्रभाव क्षमता होनी चाहिए ।

3) भारी-भरकम शब्दावली, व्यर्थ का शब्दाडम्बर और उलझे हुए वाक्यों को उद्घोषणा में टालना चाहिए ।

4) विषय के अनुरूप उद्घोषणा की अभिव्यक्ति होनी चाहिए । यह बात सदैव ध्यान में रहनी चाहिए कि हम किसके लिए लिख रहे हैं ? जो लिखा है वह कौन-से श्रोता सुनेंगे ? उनपर इसकी क्या प्रतिक्रिया होगी ?

5) प्रत्येक कार्यक्रम की समय सीमा पहले से निर्धारित रहती है । उस समय-सीमा का ध्यान रखना आवश्यक होता है ।

उद्घोषणा के मसौदा लेखन में निम्नलिखित तथ्यों का समावेश होता है -

1) कार्यक्रम प्रसारित करनेवाले केन्द्र का नाम

उद्घोषणा में सर्वप्रथम कार्यक्रम प्रसारित करनेवाले केन्द्र का नाम लिया जाता है । जैसे - 'यह आकाशवाणी मुंबई है ।'

2) मीडियम वेब ... मीटर यांनी किलोहर्ट्स का उल्लेख

कार्यक्रम प्रसारित होनेवाले केन्द्र के नाम के पश्चात उस केन्द्र का मीडियम 'वेब स्थान' बताया जाता है । जैसे - 'अब..... मीटर यांनी ..... किलोहर्ट्स पर । या 'मीडियम वेब 266 दशमलव 39 अर्थात 1116 किलोहर्ट्स पर ।'

3) कार्यक्रम प्रसारित होने का समय तथा तिथि

कई श्रोता रेडिओ पर बताये जाने वाले समय पर अपनी घड़ी का समय मिलाते है । इसके लिए कार्यक्रम प्रसारित होनेवाला समय उद्घोषणा में बताया जाना चाहिए । जैसे - 'इस समय ..... बजकर .... मिनट हुए हैं ।'

रेडियो प्रसारण की पहली सभा प्रात: छ: बजे शुरू होती है । इस पहली सभा में उस दिन की तिथि की भी घोषणा होती है । जैसे - ' आज, शके, संवत, 1922 के आषाढ़ महिने की 15 वी तिथि है, अर्थात 26 जुलाई, सन् 2015 ।'

4) प्रसारित होने वाले कार्यक्रम का नामोल्लेख

उद्घोषणा में प्रसारित होनेवाले कार्यक्रम का नामोल्लेख किया जाता है । जैसे -

'अब प्रारंभ होता है । हमारा .... कार्यक्रम । 'हवा महल' इसके अंतर्गत प्रस्तुत है ..... ए.एल. माथुर लिखित हास्य नाटिका 'गरम मसाला' निर्देशन है अचला नागन ।'

5) प्रसारित होनेवाले पूरे दिन के कार्यक्रम की रूपरेखा

आकाशवाणी केंद्र की पहली सभा प्रात: छ: बजे शुरू होती है । सभा के शुरू में उसी दिन प्रसारित होनेवाली कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की जाती है । जैसे -

ये है 'विविध भारती' । अब प्रस्तुत है आज प्रसारित होनेवाले कार्यक्रमों की रूपरेखा '..... भक्ति संगीत का कार्यक्रम' 'वंदन भारत' आप सुन सकेंगे सुबह ६ बजकर ५ मिनट से । सुबह 6 बजकर 30 मिनट से प्रसारित किया जायेगा कार्यक्रम 'तेरे सूर और मेरे गीत' ।

'भूले बिसरे गीत' हम आप को सुनवायेंगे सुबह 7 बजे से ।

'भारतीय फिल्म संगीत' इस शृंखला की पाँचवी कडी का प्रसारण आप सुन सकेंगे 'संगीत सरीता' में सुबह 7 बजकर 30 मिनट से । आमंत्रित कलाकार है 'सुप्रसिद्ध तबला वादक एवं संगीतकार बालकृष्ण अय्यर । प्रस्तुति कांचन प्रकाश संदीप की ।

'त्रिवेणी' कार्यक्रम का प्रसारण होगा सुबह 7 बजकर 45 मिनट से और 7 बजकर 55 मिनट से प्रसारित किया जायेगा 'चित्रपट' संगीत ।

'चित्रलोक' गाने नये जमाने के इस कार्यक्रम का प्रसारण आप सुन सकेंगे 8 बजकर 15 मिनट से कार्यक्रम के प्रायोजक है - मेसर्स निरमा लिमिटेड ।

'पत्रावली' कार्यक्रम का प्रसारण होगा सुबह 9 बजकर 15 मिनट से ।

9 बजकर 30 मिनट से प्रसारित किया जायेगा पार्श्वगायिका आशा भोसले पर केंद्रित कार्यक्रम 'आज के फणकार' ।

11 बजे से दोपहर 2 बजे तक आप सुन सकेंगे सत्तर दशक के 'सदाबहार गाने' 'पिटारा' में ।

2 बजकर 5 मिनट से 5 बजे तक 'झरोखा' में आप सुन सकेंगे विभिन्न पहलू पर आधारीत कार्यक्रम ।

'भक्ति संगीत' बजायेंगे श्याम 5 बजकर 5 मिनट से ।

संध्या 6 बजकर 15 मिनट से प्रसारित किया जायेगा 'सांध्यगीत' ।

और 'म्युजिक मसाला' कार्यक्रम आप सुन सकेंगे संध्या 6 बजकर 30 मिनट से ।

'जयमाला' कार्यक्रम होगा संध्या 7 बजकर 5 मिनट से ।

श्रोता अपने पत्रों के उत्तर सुन सकेंगे 'पत्रावली' में संध्या 7 बजकर 45 मिनट से ।

'गरम मसाला' ए-एल माथुर की लिखि 'हास्य नाटिका' हम आपको सुनवायेंगे आज के 'हवा महल' में रात्री 8 बजे से । निर्देशन अचला नागन का ।

'चित्रलोक' गाने नये जमाने के इस कार्यक्रम का रात्री का प्रसारण समय 8 बजकर 15 मिनट ।

'हिट-सुपरहिट' कार्यक्रम का पुन: प्रसारण आप सुन सकेंगे रात 9 बजे सै ।

और रात 9 बजकर 30 मिनट से फिर आपको सुनवायेंगे फिल्म अभिनेता सदाशिव अमरापुर की यादें 'आज के फणकार' में ।

'छायागीत' का आनंद आप पा सकेंगे रात 10 बजे से ।

और रात 10 बजकर 30 मिनट से हम पेश करेंगे कार्यक्रम 'आपकी फरमाईश' ।

यह था आज के दिन का कार्यक्रम का ब्यौरा ।

3.3.5.4 उद्‌घोषणा के प्रकार

उद्‌घोषणाएँ कार्यक्रम के पूर्व और कार्यक्रम के समापन के बाद की जाती हैं । इस आधार पर उद्‌घोषणा के दो प्रकार होते हैं ।

1) आरंभिक उद्‌घोषणा

2) अंतिम उद्‌घोषणा

1) आरंभिक उद्‌घोषणा

'आरंभिक उद्‌घोषणा' आगे प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की सूचना देती है । इस प्रकार के उद्‌घोषणा से श्रोता वर्ग में उत्सुकता या जिज्ञासा निर्माण होती है । साथ ही कार्यक्रम के प्रति रूचि पैदा की जाती है । श्रोता वर्ग का पूरा ध्यान इस कार्यक्रम पर केंद्रित हो इसी उद्‌देश्य से ये उद्‌घोषणा की जाती है ।

2) अंतिम उद्‌घोषणा

'अंतिम उद्‌घोषणा' में ये बातें होती है कि आप कौन-सा कार्यक्रम सुन रहे थे, इस कार्यक्रम में सहभागी कौन-कौन थे या कौन-कौन कलाकार शामिल थे । रचना किसकी थी और प्रस्तुतकर्ता कौन थे इत्यादि । उदा. 'अभी आप सदाबहार गीतों का कार्यक्रम सुन रहे थे । इस कार्यक्रम में लता मंगेशकर, मंहमंद रफी, आशा भोसले, किशोर कुमार इन गायकों के गाये हुए गीत प्रस्तुत हुए ।'

जो श्रोता आरंभिक उद्‌घोषणा सुन नहीं पाया था उसके मन में कार्यक्रम को लेकर जो प्रश्न उपस्थित हुए होंगे उनका समाधान अंतिम उद्‌घोषणा से हो जाता है ।

अत: आरंभिक तथा अंतिम दोनों ही उद्‌घोषणाओं की उपयोगिता निर्विवाद है ।

3.3.5.5 उद्‌घोषणा : भाषा और विशेषताएँ

भाषा -

उद्‌घोषणा के लिए रेडियो की उपयुक्त भाषा को सदैव दृष्टिगत रखना चाहिए । रेडियों कार्यक्रम के श्रोता सभी वर्ग के होते हैं । इसलिए शब्दों का चयन इसप्रकार हो कि वो श्रोता द्‌वारा सरलता से समझा जा सके । उद्‌घोषक को आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना चाहिए । तत्सम और क्लिष्ट शब्दों को त्यागना चाहिए । छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग आवश्यक है । छोटे-छोटे वाक्यों में एक-एक सूचना क्रमश: रखी जा सकती है ।

रेडियो की उद्‌घोषणा के लिए चुने गए शब्द 'बोले' हुए प्रतीत हो । मधुकर गंगाधर 'रेडियो लेखन' किताब में लिखते है - ''रेडियो प्रसारण शब्दों का भागता हुआ तुफान है । जो एक ही दिशा में जाता है और निरंतर जाता है । इसके पाँव उल्टे नहीं चलते और न रूकते ही हैं । इसलिए भागते हुए शब्दों से जितना कुछ आप श्रोताओं को कह सकें, वही आपकी उपलब्धि है और आदर्शरूप में हम चाहते हैं कि हमारा एक भी शब्द, एक भी भाव निरर्थक नहीं जाए ।'' उद्‌घोषणा के उतार-चढाव या सुर, ताल में विविधता लानी चाहिए ।

उद्‌घोषणा का समय सीमित होता है । उद्‌घोषणा करते समय लम्बे-चौड़े विवरणों के बजाय उद्‌घोषणा संक्षिप्त होनी चाहिए । गैर जरूरी अंश को त्यागना चाहिए ।

रेडियो का श्रोता बात को दुबारा पूछ नहीं सकता, न दुबारा सुन सकता है । अत: उसके लिए यदि भाषा में कठिनाई अथवा जटिलता हुई तो सुननेवालो में होनेवाली रूचि ही नष्ट हो जाती है । अत: उद्‌घोषक को रोचक और आकर्षक शैली में उद्‌घोषणा करनी चाहिए ।

उद्‌घोषणा-लेखन की विशेषताएँ

आकाशवाणी के सभी कार्यक्रमों में उद्‌घोषणा की आवश्यकता होती है । उद्‌घोषणा के कारण ही श्रोता कार्यक्रमों के बारे में जानकारी पाते हैं । इसलिए उद्‌घोषणा लेखन में निम्न गुणों का समावेश होना जरूरी है ।

1) सूचना

उद्‌घोषणा का मूल उद्‌देश्य कार्यक्रम संबंधी सूचना देना है । मुख्य रूप से वार्ता, नाटक/रूपक और संगीत जैसे कार्यक्रमों के अनुरूप श्रोताओं को सूचना देनी चाहिए । कार्यक्रम की सूचना के साथ, अन्य सूचनाएँ भी इसमें शामिल की जाती हैं । जैसे - 'यह आकाशवाणी मुंबई है । मीडियम वेब 266 दशमलव 39 यानी 1116 किलोहर्ट्‌ज पर । इस समय .... बजकर ... मिनट हुए हैं । अब प्रारंभ होता है, हमारा ... कार्यक्रम । इसके अंतर्गत प्रस्तुत है उपेन्द्रनाथ 'अश्क' लिखित एकांकी 'पापी' । कार्यक्रम की सूचना के साथ-साथ उद्‌घोषणा लेखन में प्रसारण केंद्र का नाम, किस मीडियम वेब पर प्रसारित किया जा रहा है, कितना समय हुआ है, किस विधा का कार्यक्रम है, लेखक कौन है, रचना का शीर्षक क्या है - इन सूचनाओं को भी शामिल किया जाता है ।

2) भाषा की सहजता

उद्‌घोषणा का आलेख लिखने के लिए रेडियो के लिए उपयुक्त भाषा को सदैव दृष्टिगत रखना चाहिए । रेडियो कार्यक्रम के श्रोता सभी वर्ग के लोग होते हैं । निरक्षर, साक्षर, शिक्षित से लेकर विद्‌वान और विषयों के विशेषज्ञ भी । ग्रामीण जन भी और महानगरों के नागरिक भी । इसलिए उद्‌घोषणा लेखन की भाषा में सहजता होनी चाहिए । उद्‌घोषणा आलेख के शब्द इस प्रकार चुने जाने चाहिए कि उनको पढ़ने पर वह लिखा हुआ नहीं बल्कि बोला हुआ प्रतीत हो । मुद्रित भाषा और मौखिक भाषा का अंतर ध्यान में रखना उचित होता है । उद्‌घोषणा की भाषा कहीं से भी किताबी भाषा नहीं लगनी चाहिए । रेडियो की भाषा सहज बोलचाल की भाषा है । उसमें दृश्य प्रभाव उत्पन्न करने की क्षमता होनी चाहिए । छोटे-छोटे वाक्य और सरल, सहज शब्दों का प्रयोग इस लेखन की कसौटी है ।

3) रोचकता

आकाशवाणी प्रसारण के कार्यक्रम में उद्‌घोषणा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है । उद्‌घोषणा पर ही कार्यक्रम के प्रति श्रोता वर्ग में आकर्षण उत्पन्न होता है । उद्‌घोषणा रोचक और नवीन होनी चाहिए । रोचक उद्‌घोषणा के कारण ही श्रोताओं का ध्यान आकर्षित होता है और वे कार्यक्रम से जुड़े रहते हैं । डॉ. जितेंद्रे वत्स लिखते है, ''उद्‌घोषणा लेखन में कार्यक्रम की रोचकता का आभास होना महत्तवपूर्ण है । कई उद्‌घोषणा लेखक किस प्रकार उद्‌घोषणा में रोचकता उत्पन्न करेगा, यह उसकी मेधा, कल्पना-शक्ति पर निर्भर करता है । फिर उसकी वाचन शैली से भी रोचकता उत्पन्न होती है, लेकिन प्रयुक्त शब्दावली में वैसी सरसता और आकर्षण तो चाहिए ही, जो श्रोताओं को कार्यक्रम सुनने के लिए बाध्य कर सके ।'' एक उदाहरण देखें, ''अब प्रस्तुत है हर दिल को भाने वाला, आनंद में डुबोने वाला पंकज उधास का यह भजन ।'' इस तरह की उद्‌घोषणा श्रोता वर्ग को कार्यक्रम सुनने के लिए प्रेरित जरूर करती है ।

4) उत्सुकता

उद्‌घोषणा में रोचकता के साथ-साथ उत्सुकता होनी चाहिए । कार्यक्रम के प्रति अगर श्रोता के मन में जिज्ञासा उत्पन्न होगी तो वह उस कार्यक्रम को ध्यानपूर्वक सुनना चाहेगा । श्रोता में उत्सुकता जागेगी और कार्यक्रम के अंत तक वह उसे सुनने के लिए बाध्य हो जाएगा । इसलिए उद्‌घोषणा में उत्सुकता बनी रहे इसकी ओर उद्‌घोषणा लेखन में ध्यान देना जरूरी है । जब उद्‌घोषणा में कोई रोचक बात कही जाए, ऐसी बात जो श्रोता वर्ग में कार्यक्रम के प्रति उत्सुकता जगाने में सक्षम हो । इस दृष्टि से रोचकता और उत्सुकता एक-दूसरे के पूरक हैं ।

5) संक्षिप्तता

उद्‌घोषणा लेखन के लिए संक्षिप्तता खास गुण है । रेडियो के कार्यक्रमों की समय-सीमा निर्धारित होती है । इसलिए समय का ध्यान रखना आवश्यक है । मधुकर गंगाधर के शब्दों में, ''कोई भी आलेख एक खास समय के लिए ही तैयार किया जाता है, इसलिए निर्धारित समय के भीतर हम अपनी बातों को पूर्णता के साथ तथा कारगर ढंग से कह सकें, यह आवश्यक है और आलेख की आवश्यकता है ।'' उद्‌घोषणा के लिए महज चंद सेकण्ड ही निर्धारित होते हैं । इन चंद सेकंण्डों के लिए ज्यादा शब्दों का प्रयोग हो ही नहीं सकता । दो-चार छोटे-छोटे वाक्यों में ही उद्‌घोषणा को इतना सक्षम और सफल बनाना मुश्किल काम जरूर होता है, लेकिन असंभव नहीं । इसलिए उद्‌घोषणा को अत्यंत संक्षिप्त किंतु सरल, सहज, सुबोध, रोचक तथा उत्सुकता के गुण से भरा होना जरूरी होता है ।

उद्‌घोषणा लेखन की इन विशेषताओं का ध्यान में रखकर उद्‌घोषणा का लेखन करना आवश्यक है । ऐसी लिखी उद्‌घोषणा कार्यक्रमों को सफल बनाने में मद्‌दगार सिद्ध होगी ।

3.4 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

जनसंचार माध्यम	:	जनता में विचार फैलाने वाले साधन
विज्ञापन	:	ज्ञापित वस्तु के बारे में विशेष जानकारी
रिपोर्ताज	:	वृत्त निवेशन
उद्‌घोषणा	:	कार्यक्रम की सूचना, घोषणा
उद्‌घोषक	:	रेडियो अथवा टी.वी. के कार्यक्रम शुरू होने से पूर्व कार्यक्रम संबंधी या अन्य आवश्यक घोषणाएँ करनेवाला ।
रिपोर्टर	:	संवाददाता
प्रुफ रीडर	:	वह व्यक्ति जो प्रुफ पढ़ता है और उसे संशोधन कर शुद्‌ध करता है ।
इंट्रो	:	किसी समाचार के प्रारम्भिक एक या दो पैराग्राफ जिनमें समाचार के मुख्य और महत्त्वपूर्ण अंश होते हैं और जो अपेक्षाकृत बड़े टाइप में छापे जाते हैं ।

स्लोगन	:	नारा, घोषवाक्य
अनाउन्समेंट	:	उद्‌घोषणा
हैन्डबील	:	नोटिस पत्रक, परचा (परची), सूचना पत्र, इश्तिहार ।
होर्डिंग्स	:	विज्ञापन पटल, सूचना पट्ट

3.5 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न

(अ) निम्नलिखित वाक्यों में दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर वाक्य फिर से लिखिए ।

1. 'संचार' शब्द की व्युत्पत्ति ..... धातु से हुई है ।
   (क) चर (ख) सचर (ग) अचर (घ) चीर
2. सम्राट अशोक के शासनकाल में ..... ने संचार माध्यम का कार्य किया ।
   (क) बिरूदावलियाँ (ख) लोककथाओं (ग) शीलालेखों (घ) मंदिरों
3. 'विज्ञापन' उपभोक्ताओं में ..... की इच्छा जाग्रत करता है ।
   (क) चलने (ख) खरीदने (ग) हँसने (घ) सोने
4. रिपोर्ताज जनसंचार का ..... माध्यम है ।
   (क) परंपरागत (ख) मुद्रित (ग) इलेक्ट्रॉनिक (घ) नव-इलेक्ट्रॉनिक

५. उद्‌घोषणा का मुख्य संबंध ..... से है ।
   (क) समाचार पत्र (ख) विज्ञापन (ग) रेडिओ (घ) रिपोर्ताज

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए ।

1. 'संचार' को अंग्रेजी में क्या कहते है ?
2. समाचारपत्र की उत्पत्ति किस शब्द से हुई है ?
3. 'इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' में समाचारपत्र की दी हुई परिभाषा बताइए ?
4. 25 हजार अंक तक प्रसारित होनेवाले समाचारपत्र को क्या कहते है ?
5. 'एडवर्टर' शब्द का अर्थ क्या है ?
6. जॉन वी. ल्युंड विज्ञापन के संबंध में क्या कहते है ?
7. 'रिपोर्ताज' का जन्म कब माना जाता है ?

8. 'रिपोर्ताज' किस भाषा का शब्द है ?

9. हिंदी में प्रथम रिपोर्ताजकार किसे माना जाता है ?

10. आकाशवाणी के कार्यक्रम के प्रसारण में क्या महत्त्वपूर्ण है ?

11. 'उद्घोषणा' को अंग्रेजी में क्या कहते है ?

12. 'श्रोताओं' को कार्यक्रम की जानकारी किससे मिलती है ?

3.6 स्वयं-अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

(अ) बहुविकल्पी प्रश्नों के उत्तर

1) चर

2) शीलालेखों

3) खरीदने

4) मुद्रित

5) रेडियो

(आ) एक-एक वाक्य में उत्तर

1. 'संचार' को अंग्रेजी में 'कम्युनिकेशन' कहाजाता है ।

2. समाचारपत्र की उत्पत्ति 'जर्नल' शब्द से हुई है।

3. समाचारपत्र की परिभाषा 'इनस्काइलोपीडिया ब्रिटेनिका' में इस प्रकार दी है, ''समाचारपत्र एक अजिल्द धारावाही प्रकाशन है, जो नियमित समय के अन्तर से प्रकाशित होता है और उसमें समाचारों को प्रमुखता दी जाती है ।''

4. 25 हजार अंक तक प्रसारित होने वाले समाचार पत्र को लघु समाचार पत्र कहते है ।

5. 'एडवर्टर' शब्द का अर्थ है - 'टू टर्न टू' याने मोड़ना या आकर्षित करना ।

6. जॉन वी-ल्युंड विज्ञापन के संबंध में कहते है, ''विज्ञापन बिक्रीकारी के किसी अन्य प्रकार की भाँति लोगों के विचारों और क्रियाओं को प्रभावित करने का प्रयास है ।''

7. 'रिपोर्ताज' का जन्म प्रथम विश्वयुद्ध के समय माना जाता है ।

8. 'रिपोर्ताज' फ्रांसीसी भाषा का शब्द है ।

9. हिंदी में प्रथम रिपोर्ताजकार शिवदान सिंह चौहान को मानते है ।

10. आकाशवाणी कार्यक्रम के प्रसारण में उद्घोषणा महत्त्वपूर्ण होती है ।

11. उद्घोषणा को अंग्रेजी में 'अनाउन्समेंट' (Announcement) कहा जाता है ।

12. श्रोताओं को कार्यक्रम की जानकारी उद्घोषणा के कारण होती है ।

3.7 सारांश

1. जनसंचार का अर्थ है, जनसंचार माध्यम जैसे - रेडियो, दूरदर्शन, प्रेस और चलचित्र द्वारा सूचना, विचार और मनोरंजन का प्रसार करना ।

2. जनसंचार माध्यमों के तीन प्रमुख भेद हैं - परंपरागत, मुद्रित और इलेक्ट्रॉनिक ।

3. समाचार पत्र मुद्रित माध्यमों में सबसे महत्त्वपूर्ण है । समाचार पत्रों में जनमानस को प्रभावित करने की शक्ति होती है ।

4. पत्र-पत्रिकाओं में जानकारी के साथ जीवन की बहुरंगी झलकियाँ दिखाई देती हैं ।

5. जनसंचार के क्षेत्र में विज्ञापन की महत्त्वपूर्ण भूमिका है । विज्ञापन जनसंप्रेषण माध्यम द्वारा नियंत्रित, पहचान योग्य सूचना प्रदान करने तथा मनाने का कार्य करता है ।

6. 'रिपोर्ताज' संचार तथा साहित्य की नई विधा है । संघर्ष के क्षणों को तत्काल शब्दों में प्रस्तुत करना रिपोर्ताज है ।

7. उद्घोषणा से कार्यक्रम की जानकारी मिलने के साथ-साथ कार्यक्रम जीवंत और सरस बनता है ।

3.8 स्वाध्याय

दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. जनसंचार माध्यम का अर्थ और स्वरूप स्पष्ट कीजिए ।

2. समाचार पत्र का परिचय देकर उसके प्रसारण की आवश्यकता स्पष्ट कीजिए ।

3. समाचार पत्र का तात्पर्य समझाकर उसकी सामूहिक गतिविधि स्पष्ट कीजिए ।

4. पत्र-पत्रिकाओं का स्वरूप स्पष्ट करके उसके बहुविध आयामों पर प्रकाश डालिए ।

5. पत्र-पत्रिकाओं का वर्तमान स्वरूप बताकर उसके सामर्थ्य को स्पष्ट कीजिए ।

6. विज्ञापन की परिभाषा बताकर मुद्रित विज्ञापनों का स्वरूप स्पष्ट कीजिए ।

7. मुद्रित विज्ञापनों के मसौदा लेखन को स्पष्ट कीजिए।

8. रिपोर्ताज की परिभाषा देकर उसके स्वरूप और व्याप्ति को स्पष्ट कीजिए ।
9. रिपोर्ताज की उपयुक्तता बताकर उसकी विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।
10. उद्घोषणा का स्वरूप बताकर उसका उदाहरण दीजिए ।
11. उद्घोषणा के प्रकार बताकर उसकी विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए ।

3.9 क्षेत्रीय कार्य

1. समाचार पत्र के कार्यालय में जाकर उसकी कार्य प्रणाली को जान लीजिए ।
2. विज्ञापन संबंधी संस्था के कार्यालय में जाकर विज्ञापन की प्रक्रिया को समझ लीजिए ।
3. रेडियो केंद्र में जाकर उद्घोषणा किस प्रकार दी जाती है इसकी जानकारी लीजिए ।
4. उद्घोषक से मिलकर उद्घोषणा के महत्त्व को समझ लीजिए ।
5. किसी विशेष घटना पर उपस्थित रहकर रिपोर्ताज लिखिए ।

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी पत्रकारिता का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. रमेशकुमार जैन
2. मुद्रित माध्यम - प्रो. राजेन्द्र इंगोले
3. संपादन, पृष्ठ सज्जा और मुद्रण - प्रो. रमेश जैन
4. पत्रकारिता एवं सम्पादन कला - नेहा वर्मा
5. प्रिन्ट मीडिया लेखन - प्रो. रमेश जैन
6. समाचार पत्रों की भाषा - डॉ. माणिक मृगेश
7. हिंदी पत्रकारिता का विकास - एन. सी. पन्त
8. विज्ञापन की दुनिया - कुमुद शर्मा
9. आधुनिक विज्ञापन और जनसम्पर्क - डी. के. राव
10. जनसंचार माध्यम लेखन - डॉ. संतोष गोयल
11. मीडिया और प्रसारण - डॉ., रमेश मेहरा
12. हिंदी गद्य की नवीन विधायें - राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव

13. हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार माध्यम - डॉ. जितेंद्र वत्स
14. रेडियो लेखन - मधुकर गंगाधर
15. प्रयोजन मूलक हिंदी : अधुनातन आयाम - डॉ. अम्बादास देशमुख

इकाई 4
वृत्तांत लेखन

अनुक्रम

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 विषय - विवेचन

4.3.1.1 वृत्तांत लेखन : स्वरूप, परिभाषा, व्याप्ति।

4.3.2.2 वृत्तांत लेखन : तत्व

4.3.3.3 वृत्तांत लेखन : विविध सोपान

4.3.4.4 वृत्तांत लेखन : विशेषताएँ

4.3.5.5 वृत्तांत लेखन : विधि

4.3.2 महाविद्यालयीन समारोह का स्वरूप

4.3.2.1 महाविद्यालयीन समारोह की विविधता

4.3.2.2 महाविद्यालयीन समारोह : मसौदा लेखन

4.3.2.3 महाविद्यालयीन समारोह के वृत्तांत लेखन की विशेषताएँ

4.3.2.4 महाविद्यालयीन समारोह के वृत्तांत लेखन की समस्याएँ

4.3.2.5 महाविद्यालयीन समारोह का वृत्तांत लेखन

4.3.3 सामाजिक समारोह का स्वरूप

4.3.3.1 सामाजिक समारोह : विवरण शैली

4.3.3.2 सामाजिक समारोह : महत्वपूर्ण बातें

4.3.3.3 सामाजिक समारोह : मसौदा लेखन

4.3.3.4 सामाजिक समारोह : वृत्तांत लेखन की भाषा

4.3.3.5 सामाजिक समारोह : वृत्तांत लेखन की विशेषताएँ

4.3.3.6 सामाजिक समारोह : वृत्तांत लेखन की समस्याएँ

4.3.3.7 सामाजिक समारोह : वृत्तांत लेखन

4.3.4 प्राकृतिक आपदाएँ : स्वरूप और प्रकार

4.3.4.1 प्राकृतिक आपदाएँ : मसौदा लेखन

4.3.4.2 प्राकृतिक आपदाएँ : वृत्तांत लेखन की भाषा

4.3.4.3 प्राकृतिक आपदाओं के वृत्तांत लेखन की विशेषताएँ

4.3.4.4 प्राकृतिक आपदाएँ : वृत्तांत लेखन की समस्याएँ

4.3.4.5 प्राकृतिक आपदाएँ : वृत्तांत लेखन

4.3.5 दुर्घटनाओं का वृत्तांत लेखन : स्वरूप एवं प्रकार

4.3.5.1 दुर्घटनाओं का मसौदा लेखन

4.3.5.2 दुर्घटनाओं के वृत्तांत लेखन की विशेषताएँ

4.3.5.3 दुर्घटनाओं के वृत्तांत लेखन की समस्याएँ

4.3.5.4 दुर्घटना का वृत्तांत लेखन

4.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

4.5 पारिभाषिक शब्द,शब्दार्थ

4.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

4.7 सारांश

4.8 स्वाध्याय

4.9 क्षेत्रीय कार्य

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

संदर्भ ग्रंथ सूची

4.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढने के बाद आपको -

- समाज में घटित होनेवाली घटनाओं की जानकारी मिलेगी ।
- वृत्तांत लेखन की उपयोगिता मालूम होगी ।
- सरकार की विभिन्न नीतियों की जानकारी होगी।
- शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार करने में वृत्तांत लेखन की कैसे सहायता हो सकती है या मालूम होगा।
- राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता बनाए रखने में क्या करना चाहि ए यह समझ में आएगा।
- विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं एवं दुर्घटनाओं के लिए कौन-कौन जिम्मेदार हैं इसकी जानकरी होगी।

4.2 प्रस्तावना

आधुनिक युग संगणक युग है। इस युग में जनसंचार माध्यमों की अत्याधिक गतिशीलता है। इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की विभिन्न सेवा एवं सुविधाओं के कारण इनकी संख्या दिन-ब-दिन बढती ही जा रही है। इसके बावजूद मुद्रित माध्यमों का असर एवं महत्व रत्तीभर भी कम नहीं हुआ है। विश्व के हर एक कोने में घटित घटनाओं एवं समाचारों के संबंध में जानने के लिए, पढने के लिए सब उत्सुक रहते हैं। अत: वृत्तांत लेखन करने की अपनी प्रविधि होती है।

मनुष्य हमेशा ही जिज्ञासू प्रवृत्ति का रहा है। यह बात जानकारी देने तथा पाने की सहज मानवीय प्रवृत्ति से युक्त है। जानकारी देने की प्रणाली को आज दुनियाभर में 'वृत्तांत लेखन' कहा जाता है। आज के संगणक युग में 'वृत्तांत लेखन' की कला काफी महत्वपूर्ण एवं विकसित हो गई है। वृत्तांत लेखन में अनेक बातों के संबंध में सावधानी बरती जाती है। विभिन्न जानकारियों, विषयों, गतिविधियों, सूचनाओं एवं विज्ञापनों को कम से कम शब्दों में प्रभावशाली ढंग में पाठकों तक पहुँचाना 'वृत्तांत लेखन' का मूल उद्देश्य है ।

'वृत्तांत लेखन' यह कला के क्षेत्र में आता है। इसमें रोचकता, ज्ञान, जिज्ञासा, जानकारी अदि बातों का मिलाफ रहता है। विभिन्न विषयों, क्षेत्रों, स्थानों, गतिविधियों एवं सूचनाओं को संक्षिप्त, रोचक एवं प्रभावशाली ढंग से लोगों तक पहुँचाना, वृत्तांत लेखन का प्रमुख कार्य माना जाता है।

4.3 विषय विवेचन

4.3.1 वृत्तांत लेखन का स्वरूप, परिभाषाएँ और व्याप्ति

वृत्तांत लेखन को कई अन्य नामों से जाना जाता है, जैसे समाचार लेखन, रिपोर्ताज आदि। वृत्तांत लेखन के स्वरूप को विद्वानों एवं प्रसिध्द पत्रकारों ने अपनी दृष्टि से पारिभाषित करने का प्रयास किया है । जैसे -

1) **लैदर वुड -**

किसी घटना, स्थिति, अवस्था अथवा मत का सही-सही और समय पर प्रस्तुत किया गया विवरण समाचार है।

2) **जॉर्ज एच. मौरिस -**

समाचार जल्दी में लिखा गया इतिहास है।

3) **प्रो. किलार्ड ब्लेयर -**

अनेक व्यक्तियों की अभिरूचि जिस सामायिक बात से होती है, वह समाचार है।

4) **डॉ. एस. लाईले स्पेंसर -**

वह सत्य घटना या विचार जिसमें बहुसंख्य पाठकों की अभिरूचि हो, समाचार कहलाता है।

5) **इरी सी हापवुड -**

उन महत्वपूर्ण घटनाओं की पहली रिपोर्ट को समाचार कह सकते है, जिसमे जनता की दिलचस्पी हो।

6) **अम्बिका प्रसाद वाजपेयी -**

हर घटना समाचार नहीं है। केवल वही घटना समाचार बन सकती है, जिसका सार्वजनिक महत्व हो।

7) **चिल्ड्रन ब्रुश -**

समाचार सामान्यत: वह उत्तेजक सूचना है, जिससे कोई व्यक्ति चमत्कृत हो सकता है।

8) **रामचंद्रराव खंडेलकर -**

दिन में कही भी, किसी समय कोई छोटी - मोटी घटना या परिवर्तन हो, उसका शब्दों में जो वर्णन होगा, वह समाचार है ।

9) **एम. चलपतिराव -**

वह सब कुछ जिससे आप कल तक अनजान थे, समाचार होता है।

ब्रिटन के प्रख्यात पत्र मानचेस्टर गार्जियन के अनुसार समाचार किसी अनोखी या साधारण घटना की उस अविलम्ब सूचना को कहते हैं, जिसके बारे में लोग प्राय: पहले से कुछ जानते हो, लेकिन जिसे तुरन्त जान लेने की रूचि अधिक से अधिक लोगों में हो।

हिंदी 'समाचार' शब्द व्यवहारात: अंग्रेजी के न्यूज (News) शब्द का पर्याय है। शब्द के चारों अक्षर चार दिशाओं के सूचक हैं - North (उत्तर), East (पूर्व), West (पश्चिम), South (दक्षिण) का संकेत देते हैं। इसका तात्पर्य है कि उत्तर, पूर्व, पश्चिम, दक्षिण किसी भी दिशा में अर्थात सम्पूर्ण भूमण्डल में घटित घटना या सूचना 'समाचार' का विषय होता है। कुछ विद्वानों के विचारों के अनुसार अंग्रेजी का 'News' शब्द लैटिन के 'नोवा' और संस्कृत के 'नव' शब्द से बना है। 'न्यू', 'नोवा' और 'नव' तीनों शब्दों का अर्थ है 'नवीन', जिससे आशय मिलता है कि 'समाचार' वह है, जो नवीन है। विश्व के सभी देशों के कोने से समाचार देने का प्रयास होता है।

4.3.2 वृत्तांत के तत्व

प्रसिध्द पाश्चात्य पत्रकार किपलिंग ने समाचार पत्र में छपने योग्य अर्थात सर्वसाधारण के लिए पठनीय समाचार में छ: तत्वों का समावेश अनिवार्य माना है। उन्होने अंग्रेजी में उसे पाँच 'डब्ल्यु' और एक 'एच' कहा है -

१) क्या (What) - क्या हुआ ?

२) कहाँ (Where) - कहाँ की घटना है, स्थान या देश से संबंधित।

३) कब (When) - समाचार किस समय, किस दिन का है।

४) कौन (Who) - घटना से सम्बध रखने वाला व्यक्ति, विषय।

५) क्यों (Why) - समाचार का कारण तथा स्थिति।

६) कैसे (How) - पूरा विवरण।

उपर दिए हुए छ: प्रकार 'समाचार' के प्रमुख तत्व हैं। इन छ: प्रश्नों का समाधान ही सही रूप में 'समाचार' कहा जा सकता है। हर समाचार इन छ: बिंदूओं से जुडा होता है। संवाद लेखक के सामने समाचार में सजीवता लाने का काम आवश्यक होता है। इसके प्रारंभिक वाक्यों से घटना के प्रति पाठकों के मन में उत्सुकता पैदा होती है। यह उत्सुकता बढाने के लिए समाचार की रूपरेखा को किसप्रकार प्रस्तुत किया जाए, इसपर विचार करना चाहिए। सामान्य घटना से संबंधित क्या, कहाँ, कब, किसने, क्यों और कैसे आदि की जानकारी पाठकों को कराने की परंपरा समाचारों का सूत्रपात करने से जुडी हुई है।

4.3.3 वृत्तांत लेखन के विविध सोपान

वृत्तांत लेखन के अंतर्गत विभिन्न सोपानों का ध्यान रखना आवश्यक होता है। इन सोपानों के सिवाय वृत्तांतलेखन संभव नहीं होता।

1) शीर्षक

पाठकों का ध्यान आकर्षित करनेवाला शीर्षक होना चाहिए। क्योंकि समाचार की सफलत। 'शीर्षक' पर ही निर्भर होती है। कम से कम शब्दों में सीमित रूप में शीर्षक होना चाहिए। सरल, स्पष्ट परंतु संक्षेप में शीर्षक हो। शीर्षक पढने के बाद ही पाठक वृत्तांत पढने के लिए प्रेरित होतें हैं।

2) स्थल

वृत्तांत में स्थल, काल एवं व्यक्ति का उल्लेख होना चाहिए। कोई नेता एवं प्रसिध्द व्यक्ति का संदर्भ होने पर उनके नाम का उल्लेख उस में करना आवश्यक है। अत: उनका नाम महत्वपूर्ण लगना आवश्यक है। कभी-कभी शीर्षक छोटा देकर उसमें उस महत्वपूर्ण व्यक्ति के नाम का उल्लेख अनिवार्य रूप में होना चाहिए।

3) विवरण

वृत्तांत का विवेचन एक दो पंक्तियों में देना चाहिए। प्रमुख अतिथि का विधान, प्रमुख अतिथि कहाँ, किस सभा / समारोह में, किस कारण से बोल रहे थे, समारोह का अध्यक्ष कौन था, अन्य अतिथि आदि का विवरण देना चाहिए। पाठकों की शंकाओं का समाधान करनेवाला विवरण हो।

4) वस्तुनिष्ठता

समाचार वस्तुनिष्ठता के साथ लिखा जाना चाहिए। जिस प्रकार से घटना घटित हुई है, उसी प्रकार वृत्तांत लिखना चाहिए। संवाददाता के अपने मतों की यहाँ कोई गुंजाइश नहीं होती। किसी समाचार का गलत रूप न देकर जैसे घटना घटित हुई है वैसा ही समाचार होना चाहिए।

5) भाषा

वृत्तांत लेखन की भाषा सीधी, सरल, स्पष्ट एवं आसान होनी चाहिए। सामान्य पाठकों की समझ में आनेवाली भाषा का प्रयोग करना चाहिए। क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग न के बराबर हो। वाक्यरचना स्तरीय हो।

समाचार एवं वृत्तांत की भाषा सरल, बोधगम्य, होनी चाहिए। इस में अलंकारिकता एवं जटिलता न हो। ललित एवं अलंकारिक भाषा का प्रयोग इस में नहीं करना चाहिए। जितना संभव है, समाचार की भाषा प्रवाहमयी, प्रसंगानुकूल एवं सहज होनी चाहिए।

समाचार में योग्य, उचित एवं अर्थपूर्ण शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। लंबा-चौडा विवरण यहाँ अपेक्षित नहीं है। विचारपूर्वक एवं संतुलित रूप में शब्दों की योजना करनी चाहिए। अनावश्यक शब्दों की यहाँ अपेक्षा नहीं होती।

समाचार एवं वृत्तांत की भाषा व्याकरण के नियमों के अनुसार होनी चाहिए। वृत्तांत लेखन के समय व्याकरण के नियमों का पालन हर हाल में करना चाहिए। शब्दों का स्थान, पदक्रम आदि के बदलाव से गलत अर्थ निकलने की संभावना होती है।

किसी व्यक्ति, संस्था आदि की बदनामी करनेवाला वृत्तांत नहीं होना चाहिए। वृत्तांत की वाक्यरचना का आधार सत्यता होनी चाहिए। असत्य बातों के लिए वृत्तांत में कोई स्थान नहीं होता। समाचार लेखन के समय बलात्कार, तलाक आदि समाचारों के लेखन में संयम एवं मर्यादा का पालन होना चाहिए। जो लिखना है उसके संबंध में पहले विचारपूर्वक निर्णय लेना चाहिए। सभी वर्ग एवं स्तर के पाठकों के संबंध में सोचकर लेखन करना चाहिए।

6) मुद्रण तंत्र

वृत्तांत लेखन के समान ही उसकी रचना को महत्व दिया जाता है। मुद्रण तंत्र आज बहुत विकसित हो गया है। मुद्रण की विशेषताओं की सहायता लेकर वृत्तांत की पठनीयता को बढाया जा सकता है। वृत्तांत को अत्यंत लाक्षणिक ढंग से प्रस्तुत करने के लिए मुद्रणतंत्र अत्यंत उपयुक्त है। इसके लिए लेखनकर्ता को मुद्राक्षरों का भी गहरा ज्ञान होना चाहिए। वृत्तांत के विवरण के लिए कौन से आकार के मुद्राक्षरों का प्रयोग करना चाहिए, यह जानकारी उसे होनी चाहिए। दो मुद्राक्षरों के बीच कितनी (Space) जगह होनी चाहिए यह भी उसे तय करना चाहिए।

वृत्तांत लेखन में सबसे महत्वपूर्ण घटना सबसे पहले देनी चाहिए। बाद में उसका स्पष्टीकरण हो। प्रथम शीर्षक, उसके बाद सबसे महत्वपूर्ण घटना एवं उसके बाद कम महत्वपूर्ण घटना का विवरण होना चाहिए। अंत में सबसे कम महत्वपूर्ण हिस्सा होना चाहिए। जो जगह के अभाव में वहाँ से निकाला भी जा सकता है। इसप्रकार वृत्तांत का ढाँचा होना चाहिए। वृत्तांत का चरित्र उस की लीड में कलापूर्ण ढंग से समाहित कर देना आवश्यक होता है।

4.3.4 वृत्तांत लेखन के गुण

मि. जोसेफ (अमेरिकन पत्रकारिता के मूर्धन्य पत्रकार) ने वृत्तांत लेखन के तीन गुण बताएँ है। जैसे - यथार्थता, संक्षिप्तता एवं रोचकता। इन तीनों के साथ ही वृत्तांत लेखन के लिए निम्न गुण होना अनिवार्य है।

1) सत्यता

वृत्तांत इस प्रकार लिखा जाय कि उसकी सत्यता प्रमाणित रहे। यदि समाचार किसी घटना मात्र से संबंधित है, तो उसमें विवरण सही होना चाहिए। घटनाक्रम, उसका विवरण, व्यक्ति का संबंध आदि बातें वास्तविकता एवं क्रमिकता से आनी चाहिए। ज्यों का त्यों वर्णन करके अपनी ओर से न कुछ छोडना चाहिए न ही कुछ जोडना चाहिए। झुठ - मूठ की बातों के लिए यहाँ कोई स्थान नहीं होता। खुशामद करने का प्रयास वृत्तांत में नहीं होना चाहिए।

2) रोचकता

वृत्तांत में आनेवाली घटनाएँ विभिन्न प्रकार की होती हैं। खून - खराबा, मार - पीट, लूटमार अदि वृत्तांत की मात्रा अधिक होती है। लेखनकर्ता को चाहिए कि वृत्तांत की भाषा शिष्टाचार से युक्त हो। सभ्य समाज के सामने जानेवाला वृत्तांत रोचक एवं स्वाभविक शैली में लिखा हुआ होना चाहिए।

3) संक्षिप्तता

इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वृत्तांत केवल वृत्तांत हो। वह लेख न हो। अर्थात वृत्तांत का आशय यदि विवरण द्वारा स्पष्ट किया जाय, तो भी वह संक्षेप में किया जाय। तथ्यों एवं घटनाओं को संक्षेप में तथा कम - से - कम शब्दों में लिखना चाहिए। संक्षिप्त वृत्तांत बडे प्रभावशाली होते हैं। वृत्तांत को स्तर के अनुसार संक्षेप में प्रस्तुत करना एक कसोटी होती है, जिसका ध्यान लेखनकर्ता को रखना चाहिए।

4) लोककल्याण की भावना

लोककल्याण की भावना वृत्तांत में होनी चाहिए । समाज का हित ध्यान में रखकर वृत्तांत लिखे जाने चाहिए। समाज के किसी भी वर्ग के प्रति भेदभाव एवं हीनता भाव न रखकर उनका सम्मान एवं आदर की भावना का उल्लेख होना चाहिए।

5) स्पष्टता

वृत्तांत स्पष्ट होने चाहिए। किसी भी प्रकार का भ्रम पैदा न होनेवाला वृत्तांत का लेखन होना चाहिए। द्विअर्थी, अस्पष्ट और भ्रामक वृत्तांत नहीं लिखना चाहिए । असमंजस में डालनेवाली भाषा का प्रयोग न हो।

6) नवीनता

घटी हुई घटना को नए पन के साथ प्रस्तुत करना चाहिए। नई बात एवं घटना को पाठक चाव से पढते हैं। अंतिम बात को पढने की उत्सुकता की तृप्ती वृत्तांत में छिपी नूतनता से ही संभव होती है।

7) वस्तुनिष्ठता

घटित घटना को वस्तुनिष्ठ रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। वृत्तांत की भाषा तथा शैली ऐसी होनी चाहिए कि वह उसके केंन्द्रबिंदू अर्थात वृत्तांत के चरमोत्कर्ष पाठक को प्रभावित करनेवाले होने चाहिए। उसमें वस्तुपरकता कैसी रखी जाय यह वृत्तांत लेखक के लेखन अनुभव की बात है।

8) संपूर्णता

घटना से जुडे हुए हर एक पहलू को वृत्तांत लेखन में लाना चाहिए। संक्षिप्तता के मोह में पडकर हम संपूर्णता की ओर अनदेखा करते है, अत: घटना का हर एक पहलू, हिस्सा वृत्तांत में आना चाहिए।

9) भाषाशैली

वृत्तांत लेखन की भाषा सरल, आसान, पठनीय एवं प्रवाहात्मक होनी चाहिए। आकर्षक भाषा में लिखे गए वृत्तांत पाठकों का ध्यान आकर्षित करने में सफल होते हैं । अत: भाषा अलंकारिक न हो। अलंकार रहित भाषा के द्वारा लिखे गए वृत्तांत पाठकों पर प्रभाव डालते हैं।

10) घटनाओं का औचित्य

वृत्तांत में घटनाओं का औचित्य खोजना पडता है। हैजे से मरे किसी एक व्यक्ति के मृत्यू का समाचार नहीं होता लेकिन अनेक व्यक्तियों का, हैजे से मरना वृत्तांत हो सकता है। भिखारी की लॉटरी निकलना वृत्तांत हो सकता है। अंत: उचित घटनाओं का समावेश वृत्तांत में करना चाहिए। इस प्रकार वृत्तांत लेखन के गुण बताए जा सकते हैं।

4.3.5 वृत्तांत लेखन विधि

वृत्तांत लेखन में घटनाओं की क्रमिकता से विश्लेषण होना चाहिए। साथ ही तथ्यात्मकता पर भी ध्यान देना चाहिए। वृत्तांत सुव्यवस्थित रूप में पाठकों के सामने प्रस्तुत हो। इसमें शुष्कता न हो, इसिलिए थोडी काल्पनिकता भी आवश्यक है। वृत्तांत लेखन विधि में शीर्षक, आमुख, विवरण आदि बातों का समावेश होता है।

1) शीर्षक

वृत्तांत में सबसे पहले पाठकों की नजर शीर्षक पर जाती है। शीर्षक आकर्षक एवं कुतूहल बढानेवाला होना चाहिए। प्रस्तुत वृत्तांत में किस बात का महत्व है, उसके अनुसार शीर्षक छोटा, बडा होना चाहिए। शीर्षक, प्रतीकात्मक एवं कलात्मक हो तभी वह पाठकों पर प्रभाव डालता है। शीर्षक विषय के अनुसार हो। शीर्षक का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। पाठकों के मन में जिज्ञासा उत्पन्न करनेवाला शीर्षक हो।

2) आमुख

किसी की जानकारी को सुव्यवस्थित रूप से पाठकों तक पहुँचाना वृत्तांत लेखक का काम है। वृत्तांत लेखन के बारे में पारिभाषिक शब्द प्रचलित हैं। जैसे - 'इन्ट्रो' यह शब्द 'इन्ट्रोडक्शन' का संक्षिप्त रूप है। इसका तात्पर्य है विषय प्रवेश। हिन्दी में इसे आमुख कहते हैं। इस में पहले-पहले कुछ ऐसी पंक्तियाँ हो, उससे विषय का अनुमान तो लगही जाए, साथ ही आगे की जानकारी पाने की इच्छा पाठकों के मन में जागृत हो। इसे वृत्तांत की पृष्ठभूमि भी कहा जाता है।

3) विवरण

'विवरण' से तात्पर्य है, विषयवस्तु। जिसका प्रस्तुतीकरण विचार-क्रम से अलग-अलग अनुच्छेदों के माध्यम से किया जाता है। वृत्तांत का विवरण समाचार के अनुकूल, गंभीर या हास्य-व्यंग्य के पुट से युक्त होना चाहिए। एक ही वृत्तांत में अगर समान महत्ववाले कई तथ्य मिलते हो, तो उन्हे महत्व की दृष्टी से अलग-अलग अनुच्छेदों में रोचक ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए।

4.4.1 महाविद्यालयीन समारोह का स्वरूप

महाविद्यालयीन स्तर पर विभिन्न गतिविधियाँ संपन्न होती हैं। इनका उद्देश छात्रों में सभी गुणो एवं कुशलताओं का विकास करने के लिए महाविद्यालय में विभिन्न प्रकार के समारोह अथवा गतिविधियों का आयोजन किया जाता हैं।

जिसप्रकार से एवं क्रम से समारोह संपन्न होता है, ठीक उसी प्रकार उसका चित्रण वृत्तांत में आना चाहिए। क्रमानुसार समारोह कैसे संपन्न होता है, इसका वर्णन वृत्तांत में करना आवश्यक है। महाविद्यालयीन कार्यक्रमों में स्वागतगीत, इशस्तवन, प्रतिमापूजन तथा दीपप्रज्वलन आदि बातें समारोह के आरंभ में ही होनी चाहिए। प्रमुख अतिथि या समारोह के अध्यक्ष के हाथों दीप प्रज्वलन किया जाता है। प्रास्ताविक में संयोजक, आयोजन का उद्देश,

तारीख, समय, स्थल का उल्लेख हो। प्रमुख अतिथि से पहले अगर कोई मंतव्य देना चाहे तो दे सकते हैं । उनके बाद नहीं। यह सूत्र हमेशा ध्यान में रखना चाहिए । अध्यक्षीय मंतव्य के पश्चात आभार एवं राष्ट्रगीत के सिवाय अन्य किसीका मंतव्य नहीं होता।

महाविद्यालयीन स्तर पर समारोह की पूरी जिम्मेदारी अध्यापकों के मार्गदर्शन के अनुसार छात्रों को सौपी जाती है। छात्र इस कर्तव्य को भली भाँती निभाते हैं। विभिन्न प्रकार के समारोह में छात्रों का बडा योगदान होता हैं । विविध कार्यक्रमों का गठन करने के बहाने उनमें भी कई कुशलताएँ आ जाती हैं। समारोह का प्रशिक्षण उन्हे महाविद्यालय में ही मिलता है।

महाविद्यालयीन स्तर पर समारोह में पुष्पमाला एवं 'बुके' देकर स्वागत करने की पद्धति होती है, परंतु इसमें समय काफी बरबाद होता है । इन बातों से भी बचना चाहिए।

समारोह का आयोजन पहले ही किया जाता है। समारोह के दिन केवल समारोह पूरा करने की औपचारिकता होती है। तैय्यारी तो बहुत पहले से करनी पडती है । तब कहीं जाकर समारोह सुचारू एवं सुनियोजित रूप में संपन्न हो सकता है।

4.4.2.1 महाविद्यालयीन समारोह

महाविद्यालयों में विविध प्रकार के समारोह आयोजित किए जाते हैं। इन समारोह के उद्देश्यों में पहला उद्देश्य होता है - छात्रों के व्यक्तित्त्व का विकास करना।

छात्रों के व्यक्तित्त्व विकास के लिए निबंध, रंगोली, भाषण, एकांकी, चित्रकला, संगीत और गीत आदि प्रतियोगिताओं का समावेश होता है । ऐसी प्रतियोगिताओं का आयोजन एक प्रकार से समारोह ही माना जा सकता है।

महाविद्यालयों में हिंदी दिवस, वार्षिक पारितोषक वितरण, छात्रों का स्वागत, शुभकामनाएँ, शिक्षक दिन , रक्तदान, स्वाधीनता दिवस, गणतंत्र दिवस, कवि सम्मेलन, काव्यगोष्ठी, रंगोली, वार्षिक क्रीडा महोत्सव, वृक्षारोपण, विश्व जनसंख्या दिन, प्रतियोगिता परीक्षा केंद्र का उदघाटन, राष्ट्रीय सेवा योजना उद्घाटन, पर्यावरण संवर्धन, प्रकृति संवर्धन, क्रांतिदिन, शाहु जयंती, ग्रंथालय का उद्घाटन, महात्मा गांधी जन्मदिन, प्रेमचंद जन्मदिवस, डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर जन्मदिन, विश्व महिला दिन, मातृदिन, वन महोत्सव, महात्मा फुले एवं सावित्रीबाई फुले जन्मदिवस, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जन्मदिवस आदि विभिन्न प्रकार के समारोहों का गठन छात्रों के लिए किया जाता है।

ऐसे समारोह के द्वारा छात्रों के सामने एक आदर्श रखने का प्रयास किया जाता है । छात्र अनुकरण प्रिय होते हैं। अपने वैयक्तिक विकास के साथ समाज एवं देश के विकास में योगदान दे सकते हैं ।

4.4.1.2 महाविद्यालयीन समारोह का मसौदा लेखन

कराड दि. 20 - वेणूताई चव्हाण महाविद्यालय, कराड में दि. 20 जनवरी 2015 में सुबह 10.00 बजे 'काव्यगोष्ठी' समारोह का आयोजन किया था । प्रसिध्द कवि मंगलेश डबराल प्रमुख अतिथि थे । समारोह की अध्यक्षता प्रधानाचार्य डॉ. सुरेशकुमार जैन ने निभाई । महाविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. सुर्यकांत भोसले ने प्रास्ताविक किया ।

प्रमुख अतिथि एवं समारोह के अध्यक्ष के हाथों से सावित्रीबाई फुले की प्रतिमा का पूजन किया गया । तत्पश्चात हिंदी विभाग के सहयोगी प्राध्यापक प्रा. अभिजित पवार ने प्रमुख अतिथि के परिचय की जिम्मेदारी निभाई । हिंदी विभाग के अध्यक्ष भोसले जी ने प्रमुख अतिथि एवं समारोह के अध्यक्ष का स्वागत फुलों का गुलदस्ता देकर किंया ।

स्वागत के पश्चात छात्र - छात्राओं ने काव्य रचनाएँ प्रस्तुत की । इसमें सामाजिक, प्राकृतिक तथा प्रेमपरक कविताओं की संख्या अधिक थी। इसके बाद प्रमुख अतिथि कवि मंगलेश डबराल जी ने अपनी काव्य रचनाओं की जानकारी देते हुए छात्रों से कहा कि ''मनुष्य जीवन में अपनी दैनिक समस्याएँ भूलकर एक अलग से विश्व में भ्रमण करने के लिए काव्य उपयुक्त होता है ।'' प्रतिभाशक्ति के संबंध में उन्होने मौखिक विचार व्यक्त किए ।

समारोह के अध्यक्ष प्रधानाचार्य डॉ. सुरेशकुमार जैन जी ने छात्रों की भूरी-भूरी प्रशंसा की । कहा कि मुनष्य जीवन के सही विकास के लिए साहित्य आवश्यक है । विभाग की छात्रा भाग्यश्री कांबळे ने आभार व्यक्त किया । सूत्रधार की भूमिका विश्वविद्यालय प्रतिनिधि सागर चव्हाण ने निभाई । राष्ट्रगीत से समारोह का समापन हुआ ।

4.4.1.3 महाविद्यालयीन समारोह : वृत्तांतलेखन की विशेषताएँ

महाविद्यालयीन समारोह के माध्यम से विविध प्रकारकी जानकारी मिलती है । जैसे -

- महाविद्यालय में होनेवाली गतिविधियों की विस्तृत जानकारी मिलती है ।
- छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए यह गतिविधियाँ उपयुक्त होती हैं ।
- महाविद्यालयीन समारोह के वृत्तांतलेखन में सत्यता होती है ।
- वृत्तांत लेखन में लेखक का भाषापर अधिकार होना चाहिए ।
- पाठकों की जिज्ञासा जागृत करनेवाला वृत्तांतलेखन हो ।
- शीर्षक आकर्षक हो ।
- वृत्तांतलेखन में सजीवता एवं आर्कषकता आवश्यक है ।
- दीपप्रज्वलन में सभी लोगों के नाम देने की आवश्यकता नहीं ।
- छात्रों को विभिन्न गतिविधियों में प्रतिभागी होने की प्रेरणा मिलती है ।

4.4.1.4 महाविद्यालयीन समारोह : वृत्तांतलेखन की समस्याएँ

महाविद्यालयीन समारोह का वृत्तांत लेखन करते समय निम्नांकित समस्याएँ आती हैं -

- वृत्तांत लेखन करते समय अतिशयोक्ति पूर्ण कथन किया जाता है।
- वृत्तांतलेखन में कभी - कभी दीपप्रज्वलन करनेवालों की लंबी फेरीस्त दी जाती है।
- वृत्तांत लेखन के स्वागत सत्र में गलतीयाँ होती हैं।
- अलंकारिक भाषा का प्रयोग किंया जाता है।
- नाट्यपूर्ण बातें लिखी जाने की संभावना होती है।
- वृत्तांत लेखन में क्रमिकता की ओर ध्यान नहीं दिया जाता ।

4.4.1.5 महाविद्यालयीन समारोह : वृत्तांत लेखन

1) हिंदी दिन समारोह

कोवाड दि. 15 सर्वोदय शिक्षा संस्था द्वारा संचलित कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय कोवाड में दि 14 सितंम्बर, 2014 को सुबह ठीक 10.30 बजे हिंदी दिन समारोह का बडी धूमधाम के साथ मनाया गया। गोवा विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. बी. डी. मिश्राजी समारोह के प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित थे । महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. आर. एस. केतकर जी ने समारोह की अध्यक्षता निभाई।

समारोह के प्रारंभ में प्रमुख अतिथि, समारोह के अध्यक्ष आदि महानुभावों के करकमलों से दीप प्रज्वलन किया गया । उसके बाद बी. ए. I की छात्राओं ने ''हिंद देश के निवासी, सभी जन एक है'' इस स्वागतगीत का मधुरता से गान किंया।

'हिंदी दिन' के सुअवसर पर समारोह का प्रास्तविक हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. के. एन. कराडे जी ने किंया। तत्पश्चात अतिथि का डॉ. सुभाष जाधव ने करवाया। समारोह के प्रमुख अतिथि मिश्रा जी का स्वागत हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. कराडे जी ने गुलदस्ता देकर किया। समारोह के अध्यक्ष का स्वागत डॉ. सुभाष जाधव ने किया तथा विश्वविद्यालय प्रतिनिधी सागर पाटील ने सभी अध्यापकों तथा छात्र मंडल के छात्रों को गुलाब पुष्प देकर स्वागत किया। प्रमुख अतिथि के करकमलों से निबंध प्रतियोगिता में अव्वल आए छात्रों का सम्मान किंया।

समारोह के इस सुअवसर पर छात्र - छात्राओं ने अपना मंतव्य व्यक्त किया । इसमे प्रतिभा जाधव, रेश्मा पाटील, अमृता देशपांडे तथा ओंकार रणभिसे आदि शामिल थे। छात्र मंतव्य में हिंदी का महत्त्व बताया गया । लोगों के दिल को जोडनेवाली एकमात्र कडी संपर्क भाषा हिंदी है। राष्ट्रीय आंदोलन से लेकर आज तक हिंदी ने अपनी एकता की जिम्मेदारी अब तक निभाई है। विश्वबंधुता की भावना को बढाने के लिए आवश्यक भाषा के रूप में हिंदी ने अपना दायित्व निभाया है। समारोह के अध्यक्ष डॉ. आर. एस. केतकर जी ने कहा की संचार एवं संपर्क के लिए हिंदी भाषा अत्यंत अनिवार्य है । हिंदी विभाग के छात्र सचिन बिर्जे ने उपस्थित सबके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की । राष्ट्रगीत के पश्चात समारोह की समाप्ति हुई। सूत्रधार की भूमिका प्रतिभा जाधव एवं रेश्मा पाटील ने निभाई।

2) वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह

कोवाड दि. 13 -चंदगड तहसील के कोवाड में सर्वोदय शिक्षा संस्था संचलित कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, कोवाड में 2 फरवरी 2015 में वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह बडे जोश एवं उत्साह के साथ मनाया गया । इस अवसरपर शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के कुलपति डॉ. एन. जे. पवार प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस समय सर्वोद्य शिक्षा संस्था के सभी पदाधिकारी, संचालक, सदस्य, निमंत्रित अतिथिगण, अभिभावक, अध्यापक तथा छात्र छात्राएँ बडी संख्या में उपस्थित थे ।

आरंभ में प्रमुख अतिथि, समारोह के अध्यक्ष, विश्वविद्यालय के छात्र प्रतिनिधीऔर प्रधानाचार्य ने दीप प्रज्वलन करके समारोह का उद्घाटन किया । इस अवसर पर महाविद्यालय की छात्राओं ने स्वागतगीत पेश किया । महाविद्यालय के प्रधानाचार्य जी ने अतिथि महानुभावों का स्वागत फुलों का गुलदस्ता देकर किया । महाविद्यालय के सांस्कृतिक विभाग प्रमुख डॉ. एस. एन. शेलार ने अतिथि महोद्यों का परिचय करवाया। तत्पश्चात महाविद्यालय में होनेवाली विभिन्न गतिविधियाँ एवं उन्नत्ति का लेखा - जोखा शारिरिक शिक्षा संचालक प्रा. एन.आर. पाटील ने प्रस्तुत किया ।

समारोह के अवसर पर खेल प्रतियोगिता, और विभिन्न गतिविधियों में विशेष सफलता पानेवाले छात्रों को अतिथि महोद्य के करकमलों से प्रशस्तिपत्र तथा गौरव चिह्न (मोमेंटो) देकर गौरवान्वित किया। इस समय 'आदर्श छात्र' एवं 'आदर्श छात्रा' पुरस्कार देकर छात्रों को गौरवान्वित किया गया ।

समारोह के प्रमुख अतिथि शिवाजी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एन. जे. पवार जी ने अपने मंतव्य में कहा कि, ''स्वयं को पहचानो, अपने अस्तित्व को पहचान कर अपनी सबलताएँ एवं दुर्बलताओं को समझने की कोशिश करनी चाहिए । क्योंकि कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती । प्रयासों के बलबुते पर ही उन्नति होती है तथा मंजिल मिलती है।'' अध्यक्षीय मंतव्य में अध्यक्ष महोद्य (सर्वोदय शिक्षा संस्था के अध्यक्ष) प्रा. एल. के. देशपांडे जी ने अनुशासन एवं परिश्रम के महत्व के संबंध में छात्रों को अवगत कराया । आभार प्रदर्शन का काम प्रा. डी. ए. रेडेकर ने सँभाला। इसके पश्चात राष्ट्रगीत से समारोह का समापन संपन्न हुआ । सूत्रधार की भूमिका प्रा. डॉ. ए. एस. पाटील ने निभाई ।

3) 'शिक्षक दिन' समारोह का वृत्तांत लेखन

कोल्हापुर : छ. शाहू कॉलेज कोल्हापुर में 'शिक्षक दिन' समारोह 5 सितम्बर 2014 में सुबह 10.00 बजे बडे उत्साह एवं धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्रधानाचार्य, प्राध्यापक, प्रशासकीय वर्ग एवं छात्र - छात्राएँ बडी संख्या में उपस्थित थे । समारोह के प्रमुख अतिथि के रूप में विश्वविद्यालय अनुदान मंडल के अध्यक्ष मा डॉ. सुखदेव थोरात उपस्थित थे । समारोह के अध्यक्ष के रूप में महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. जे. जे. जाधव उपस्थित थे ।

प्रास्ताविक ओर अतिथि परिचय प्रा. डॉ. राजन केळकर ने किया । स्वागत प्रधानाचार्य डॉ. जे. जे. जाधवजी ने किया । उनका स्वागत प्राध्यापक राम सरवदे जी ने किया । प्रमुख अतिथि समारोह के अध्यक्ष एवं छात्र मंडल के सचिव आदि ने मिलकर भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधा कृष्णन की प्रतिमा पर पुष्पमाला चढाई । इस

समय छात्र-छात्राओं ने 'गुरू महिमा' का महत्व विशद करनेवाला स्त्रोत्र गाया । एम. फिल, पी.एचडी प्राप्त अध्यापकों को गौरवान्वित किया गया। महाविद्यालय के ज्येष्ठ प्राध्यापक राजन तिवले जी ने 'शिक्षक दिन' मनाने की भूमिका विशद करते हुए कहा कि, ''5 सितम्बर, डॉ. राधाकृष्णन का जन्मदिन है । वे राष्ट्रपति होने के बावजूद एक आदर्श शिक्षक थे। इसीलिए उनकी स्मृति में 5 सितम्बर यह दिन शिक्षक दिन मनाया जाता है।''

नितीन दिंडे, रोहन माने, नीलम साने एवं छात्र सचिव श्री. सोहम पवार ने अपने मंतव्य में शिक्षक एवं छात्रों के दायित्व का महत्व विशद किया। गुरूओं के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त की। प्रमुख अतिथि डॉ. सुखदेव थोरात ने कहा की, ''व्यक्ति के जीवन में माता - पिता के बाद गुरूजनों का महत्व अनन्यसाधारण है। समारोह के अध्यक्ष प्रधानाचार्य जे. जे. जाधव ने कहा कि, '' गुरूजनों ने बताए हुए मार्ग पर चलने से ही जीवन सफल हो सकता है।'' आभार प्रदर्शनी की जिम्मेदारी प्राध्यापक मनीष येवले जी ने निभाई । राष्ट्रगीत से समारोह संपन्न हुआ।

4) 'रक्तदान' समारोह

कोवाड दि. 11 : कोवाड के कला महाविद्यालय के स्थापना दिन के उपलक्ष्य में 11 अगस्त 2014 को सुबह 9.30 बजे 'रक्तदान' समारोह का आयोजन किया गया था। समारोह के प्रमुख अतिथि सर्वोदय शिक्षा संस्था के अध्यक्ष प्रा. पी. सी. पाटील थे । समारोह के अध्यक्ष महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. विश्वजीत वेलणकर थे।

प्रमुख अतिथि, अध्यक्ष और संस्था के पदाधिकारीयों ने मिलकर दीप प्रज्वलन किया। महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रकल्प अधिकारी योगेश कुलकर्णी ने प्रास्ताविक करके अतिथि परिचय करवाया। लायन्स ब्लड बँक, गडहिंग्लज के व्यवस्थापक मा. राजन पाटील जी ने रक्तदान का महत्व विशद करते हुए कहा कि ''एक बोतल रक्त देने से मरते हुए एक व्यक्ति की जान हम बचा सकते है।'' इसके साथ ही रक्तदान के संबंध में समाज एवं छात्रों में जो गलत फहमियाँ थी, उन्हे दूर करने का प्रयास किया।

प्रमुख अतिथि प्रा. पी. सी. पाटील ने कहा कि, ''एक बूँद खून देने से किसी की जान बच सकती है और यही इस समारोह का उद्देश है।'' समारोह के अध्यक्ष प्रधानाचार्य डॉ. विश्वजीत वेलणकर ने कहा कि, ''रक्तदान आज समय की माँग है। जिस प्रकार हमें जीने का हक है, वैसे ही दूसरों को भी जीने का हक है । इसीलिए हमे रक्तदान करना चाहिए।'' उन्होने सबको रक्तदान करने के लिए प्रेरित किया। आभार की जिम्मेदारी प्राध्यापक डॉ. व्ही. एस. कोले ने सँभाली। प्रधानाचार्य, अध्यापक, प्रशासकीय सेवक और छात्र - छात्राओं ने रक्तदान किया।

4.4.2 सामाजिक समारोह का स्वरूप

व्यक्ति समाजशील प्राणी है। समाज से अलग रहने की कल्पना भी मनुष्य नहीं कर सकता। समाज में रहकर आपसी संबंध जोडना एवं बरकरार रखना आदि बातें आम मनुष्य चाहता है। जिस समाज में हम रहते हैं, उसमें विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ संपन्न होती रहती हैं। नगर निगम, जिला परिषद, ग्रामपंचायत, पंचायत समिती, नगर परिषद, अस्पताल, विभिन्न प्रकार के क्लब, सामाजिक संस्थाएँ, आश्रम, मंदिर, मठ, धर्मशाळा आदि संस्थाओं द्वारा राष्ट्रीय

नेता, राजनेता, सामाजिक सुधार लानेवाले सुधारकों के जन्म दिन, उनकी स्मृतियाँ मनाने के उपलक्ष्य में विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यक्रमों का गठन किया जाता है।

विभिन्न युवा मंडलों की ओर से भी सामाजिक समारोह का गठन किया जाता है। छ. शिवाजी महाराज, छ. शाहू महाराज, डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर, महात्मा फुले, सावित्रीबाई फुले, महात्मा गांधी, बसवेश्वर, आदि महान विभुतियों का स्मरण करने के लिए भी विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। कभी रक्तदान शिबीर, किताबें बाँटना, कम्बल बाँटना, अन्नछत्र का आयोजन करना आदि कार्यक्रम भी इसमें आतें हैं।

युवा मंडलों की ओर से रंगोली, भाषण, नृत्य एवं गायन आदि प्रतियोगिताओं का गठन किया जाता है। ऐसे समारोहों को सामाजिक समारोह कहा जाता है।

साहित्य सम्मेलन, क्रीडा प्रतियोगिता, सांस्कृतिक समारोह, धार्मिक समारोह, राजनीतिक कार्यक्रम आदि विभिन्न विषयों को लेकर आयोजित शिबिर भी सामाजिक समारोह का हिस्सा बन चुके हैं। समाज में घटित होनेवाली विभिन्न गतिविधियों को सामाजिक समारोह माना जाता है।

4.4.2.1 सामाजिक समारोह की विवरण शैली

'वृत्तांत' का अर्थ है घटित घटना एवं कार्यक्रम का वर्णन। हमारे सामाजिक जीवन में विविध कार्यक्रम होते रहतें हैं, जो हमारे जीवन में महत्वपूर्ण हो सकते हैं। किसी सामाजिक संस्था के द्वारा ऐसे समारोह का आयोजन किया जाता है, जैसे घटित घटना, प्रसंग एवं गतिविधि की सुसंगत जानकारी देना एवं 'वृत्तांत लेखन' है। उल्लेखनीय उपक्रमों का समापन किसी कार्यक्रम के माध्यम से संपन्न होता है। सामाजिक चेतना के कारण किया हुआ कार्य भी इसमें आता है। सामाजिक जीवन में हो रहे परिवर्तन का वर्णन सामाजिक समारोह में किया जाता है।

'वृत्तांत लेखन' में प्रस्तुतीकरण एवं मुद्दों का समावेश किया जाता है । जहाँ कार्यक्रम संपन्न हुआ है, वहाँ का स्थान, समारोह में शामिल हुए लोगों के नाम, उन्होंने व्यक्त किए हुए विचार, उद्देश्य, वास्तविकता आदि बातों के साथ किसी विषय पर विद्वानों के मत एवं विचार आदि का समावेश होना चाहिए। नियोजन के अनुसार प्रस्तुतीकरण का वर्णन महत्वपूर्ण होता है।

घटित कार्यक्रम का सिलसिलेवार एवं वास्तविक वर्णन वृत्तांतलेखन में अपेक्षित होता है। वृत्तांत में सभी महत्वपूर्ण बातों का समावेश यथार्थता के साथ होना चाहिए। अगर किसी साहित्य सम्मेलन का वृत्तांत लिखना हो, तो संमेलन किस प्रकार का था; कहाँ संपन्न हुआ, प्रमुख अतिथि एवं कौन लोग शामिल थे, कार्यपद्धति किसप्रकार की थी एवं इससे क्या मिला, आदि बातों का वर्णन वस्तुनिष्ठ एवं उचित ढंग से करना चाहिए। ताकी वृत्तांत पाठकप्रिय हो।

4.4.2.3 सामाजिक समारोह - महत्वपूर्ण बातें

सामाजिक समारोह का वृत्तांत लेखन करते समय निम्नलिखित बातों की ओर अधिक ध्यान देना पडता है,

1) विषय के संबंध में सोच समझकर सामाजिक समारोह का वृत्तांत लिखना चाहिए।

2) वृत्तांत लेखन में केवल महत्वपूर्ण बातों का ही समावेश हो।

3) घटना के वर्णन में एकसूत्रता होनी चाहिए।

4) दिनांक, स्थान, समय, महनीय व्यक्ति आदि का स्पष्ट उल्लेख हो।

5) वृत्तांत लेखन सुंदर एवं सजीव वर्णन हो।

6) वर्णन में उचित स्थानपर अनुच्छेद हो।

7) छोटा एवं आकर्षक तथा कुतूहल जागृत करनेवाला शीर्षक होना चाहिए।

8) प्रमुख अतिथि एवं अध्यक्ष का मंतव्य संक्षेप में देना चाहिए।

4.4.2.4 सामाजिक समारोह का मसौदा लेखन

शर्मिला व्हनबट्टे का प्रेरणादायी सत्कार

कोल्हापुर दि. 19 : रेडेकर ग्रुप एवं रोटरी क्लब के संयुक्त रुप में सु. श्री. शर्मिला व्हनबट्टे को सन्मानपूर्वक गौरवान्वित किया गया।

गडहिंग्लज के 'रेडेकर फौंडेशन' द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभाशक्ती एवं हुनर का परिचय देनेवाले लोगों को गौरवान्वित किया जाता है। कोल्हापुर की शर्मिला व्हनबट्टे ऐसी ही एक लडकी है जिसने अनेक विश्वविक्रम किए हैं। हाल ही में उन्हे भारत सरकार की ओर से 'पद्मश्री पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। आंतरराष्ट्रीय महिला दिन के उपलक्ष्य में उन्होंने फौंडेशन को सदिच्छा भेंट दी थी।

'योग एवं प्राणायाम' क्षेत्र में उन्होंने किए गए विश्वविक्रम के उपलक्ष्य में रेडेकर फौंडेशन, गडहिग्लज एवं रोटरी क्लब कोल्हापुर के संयुक्त तत्वावधान में उसे गौरवान्वित किया गया।

खेल जगत एवं योग तथा प्राणायाम क्षेत्र में सफलता हासिल करने के उपलक्ष्य में उसे 'केदारी रेडेकर' मोमेंटो देकर गौरवान्वित किया गया। इस अवसर पर शर्मिला ने अपने बचपन से लेकर पद्मश्री तक की गयी सफर को, अपनी साहसी प्रवृत्ती एवं नीडरता को उत्साह से कथन किंया।

उनका साहस, ध्येय प्राप्तकरने की लगन, मेहनत एवं प्रयास के कारण सभी श्रोतागण भावविभोर हो गए।

उद्देश्य सफल करने के लिए उन्होंने बताए मार्ग पर अगर आप लोग चलेंगे तो आज के प्रतियोगिता की होड रखनेवाले समाज में अपने उद्देश तक पहुँचना असंभव नहीं है। ऐसा कथन रेडेकर फौंडेशन की अध्यक्षा श्रीमती अंजना रेडेकर ने किया। रोटरी क्लब, कोल्हापुर शाखा के अध्यक्ष संजय कोल्हापुरकर ने अंजना रेडेकर जी के कार्य का

गौरव किया। किसी भी क्षेत्र को चुनकर जीवन में सफल कैसे होना चाहिए इस विषयपर मंतव्य दिया। आभार की जिम्मेदारी श्रीमान बापुसाहेब म्हेत्री ने सँभाली । सूत्रसंचालन सरला देशपांडे ने किया।

4.4.2.5 सामाजिक समारोह : वृत्तांत लेखन की भाषा

सामाजिक समारोह के वृत्तांत लेखन की भाषा प्रभावशाली, पाठकों की जिज्ञासा बढानेवाली होनी चाहिए। उसमें निम्नांकित विशेषताएँ होनी चाहिए -

1) नकारात्मक भाषा का प्रयोग न किया जाए।

2) भाषा औचित्यपूर्ण हो।

3) व्याकरण की दृष्टि से सर्वसम्मत भाषा का प्रयोग किया जाए।

4) भाषा में वर्तनी दोष बिल्कुल न हो।

5) सभी स्तर के लोगों की समझ में आनेवाली भाषा होनी चाहिए।

6) भाषा में सहजता एवं अकृत्रिमता होनी चाहिए।

7) कम से कम शब्दों में प्रभावशाली ढंग में वृत्तांतलेखन होना चाहिए।

8) पाठकों का कुतुहल जागृत करनेवाली भाषा हो।

9) भाषा में रोचकता, नयापन एवं ताजगी हो।

10) अलंकारिकता का प्रयोग न हो।

11) महत्वपूर्ण बातों का वर्णन हो, अनावश्यक बातों को टाला जाए।

12) भाषा सजीव, सार्थक एवं मार्मिक हो।

13) भाषा अतिशयोक्तिपुर्ण न हो।

4.4.2.6 सामाजिक समारोह : वृत्तांतलेखन की विशेषताएँ

समाजशील प्राणी होने के नाते मनुष्य अपने जीवन में समाज के लिए कुछ करने के उत्तरदायित्व की भावना से प्रेरित होकर विभिन्न सामाजिक समारोह का गठन करता है, जिससे समाज का विकास हो सके।

1) समाज में स्थित जनता के विकास के संबंध में ऐसे समारोह होते हैं।

2) शासन की विभिन्न योजनाओं के उद्घाटन के लिए ऐसे समारोह होते हैं।

3) आम आदमी की सहायता के लिए ऐसे वृत्तांत लिखे जाते हैं।

4) समाज की विभिन्न समस्याओं को सुलझाने का प्रयास ऐसे समारोह के वृत्तांतलेखन से किया जाता है।

5) समाज की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ऐसे समारोह रखे जाते हैं।

6) महान विभुतियों के स्मरण के लिए, उनके वंदन के लिए तथा समाज के सामने उनका आदर्श प्रस्तुत करने के लिए ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

7) लोगों की छिपी प्रतिभाशक्ति, हुनर, कुशलताएँ आदि के परिचय के लिए ऐसे समारोह का गठन किया जाता है।

8) शैक्षिक एवं वैचारिक क्षमता का विकास करने के लिए ऐसे समारोह होते हैं।

9) प्रशिक्षण प्राप्त करके कुशलता संपादन करने के लिए इस प्रकार के कार्यक्रम होते रहते हैं।

10) व्यक्तिगत एवं सामुहिक तौर पर कला एवं गुणों का विकास करने के लिए समारोह गठित किए जाते है।

11) आरोग्यदायी जीवन जीने के संबंध में मार्गदर्शन करने के लिए ऐसे समारोह रखे जाते हैं।

12) सामाजिक चेतना निर्माण करने के लिए इसप्रकार के समारोह गठित किए जाते हैं।

13) समाज में विज्ञाननिष्ठ दृष्टिकोन का विकास करने हेतु ऐसे सामाजिक समारोह होते है।

4.4.2.7 सामाजिक समारोह : वृत्तांतलेखन की समस्याएँ

सामाजिक समारोह के वृत्तांतलेखन में निम्न समस्याएँ आती हैं -

1) वृत्तांतलेखन में सत्य जानकारी का अभाव होता है।

2) कभी - कभी वृत्तांतलेखन में अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया जाता है।

3) सामाजिक समारोह के वृत्तांतलेखन में दीपप्रज्वलन एवं प्रतिमापूजन करनेवाले अतिथियों के नामों की लंबी सूची दी जाती है।

4) बिना वजह नाट्यपूर्ण बातें लिखी जाती है।

5) वृत्तांतलेखन का लेखक अपने मन के मुताबिक काल्पनिक बातें भी लिख सकता है।

6) वृत्तांतलेखन में घटना एवं समारोह की क्रमिकता को हर हाल में बनाए रखना चाहिए।

7) स्वागत के संबंध में अक्सर गलतियाँ होती हैं।

8) अलंकारिकता का प्रयोग किया जाता है।

4.4.2.8 सामाजिक समारोह : वृत्तांत लेखन

1) शिवजयंती समारोह का वृत्तांत लेखन

कागल 19 : कागल के क्रांतिवीर युवा मंडल की ओर से 19 फरवरी 2015 के शाम ठीक 4.00 बजे शिवजयंती उत्सव बडे उत्साह के साथ मनाया गया। इस समारोह के लिए शिवसेना के कोल्हापुर उत्तर के विधायक राजेश क्षीरसागर प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित थे। समारोह के अध्यक्ष शिवसेना शाखा कागल के अध्यक्ष मोहन पाटील थे। इस शुभ अवसर पर युवा मंडल के पदाधिकारी, निमंत्रित सदस्य अतिथि महानुभाव बडी संख्या से उपस्थित थे।

प्रमुख अतिथि (युवा मंडल के अध्यक्ष) के करकमलों से दीप प्रज्वलन करके छत्रपती शिवाजी महाराज की प्रतिमा को पुष्पमाला अर्पण कर पूजन किया गया। समारोह का प्रारंभ कन्या प्रशाला, कागल की छात्राओं के स्वागत गीत से हुआ। युवा मंडल के अध्यक्ष, प्रकाश सुर्यवंशी ने प्रास्ताविक करके मंच पर विराजमान अतिथि एवं अध्यक्ष आदि का स्वागत गुलदस्ता देकर किया। युवामंडल के उपाध्यक्ष भैया चौगुले ने अतिथि महोद्य एवं अध्यक्ष महोदय का परिचय करवाया। युवक मंडल की ओर से गठित की गई विभिन्न प्रतियोगिताओं का वृत्तांत प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर शिवकालीन खेल, निबंध एवं रंगोली प्रतियोगिता का गठन किया था। विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त युवाओं को ट्रॉफी प्रदान करके गौरवान्वित किया गया।

प्रमुख अतिथि (कोल्हापुर उत्तर के विधायक) राजेश क्षीरसागर जी ने अपने मंतव्य में कहा कि ''शिवाजी महाराज के मौखिक विचारों, आदर्श मूल्यों का आचरण करेंगे तभी हमारी उन्नति होगी। हम सब सही मायने में सुखी होंगे।'' इन सभी विचारों के संबंध में उनका जीवन सबके लिए एक नई मिसाल बना हुआ है। उनके विचार आज भी प्रासंगिक है। शिवसेना शाखा कागल के अध्यक्ष मोहन पाटील ने कहा कि, ''जो व्यक्ति विचारों के अनुसार आचरण करता है, वही व्यक्ति संसार में पूजनीय होता है।'' राजशेखर निंबालकर ने धन्यवाद अदा किया। राष्ट्रगीत से समारोह का समापन हुआ। समारोह के सूत्रधार नीलेश राजे थे।

2) महात्मा गांधी जयंती समारोह

कोवाड दि. 3 : कोवाड में ग्रामपंचायत की ओर से म. गांधी जयंती समारोह संपन्न हुआ। इस अवसर पर म. गांधी के पोते श्रीमान डॉ. तुषार गांधी प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित थे। समारोह के अध्यक्ष कोवाड के सरपंच कल्लाप्पा पाटील थे। इस समय कोवाड की उपसरपंच श्रीमती सुलोचना कांबळे एवं ग्रामपंचायत के सभी सदस्य और सम्माननीय नागरिक उपस्थित थे।

प्रारंभ में प्रमुख अतिथि, अध्यक्ष, उपसरपंच आदि ने मिलकर म. गांधी की प्रतिमा का पूजन किया। इस अवसर पर मिडिल स्कूल की छात्रा तनुजा गुरव ने बडी तन्मयता के साथ अपनी मधुर वाणी में 'वैष्णव जन तो ते ने कहिए जे' भजन का गान किया। प्रास्ताविक पूर्व विधायक भरत भोगण ने किया। अतिथि परिचय का दायित्व ग्रामसेवक कैलास माने जीं ने निभाया। प्रमुख अतिथि, अध्यक्ष आदि का स्वागत ग्रामपंचायत सदस्य रोहित वांद्रे ने किया।

'गांधी जयंती' समारोह के अवसर पर अपने घर एवं आसपास के परिवेश की सफाई करने के उपलक्ष्य में गाँववालो को दिए गए पुरस्कार के लिए उनका गौरव किया गया। प्रमुख अतिथि डॉ. तुषार गांधी जी ने कहा कि ''गांधीजी ने देश के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित किया। देश की जनता का विकास करना है तो हम गांधीजी के सत्य, अहिंसा आदि मार्गो का अनुसरण करें। उनके विचारों के आधार पर चलने से ही प्रांतीयता एवं भाषिक विवाद से ऊपर उठकर विश्वबंधुता की भावना को आगे बढा सकते हैं।'' समारोह के अध्यक्ष ने अपने मंतव्य में कहा कि ''म. गांधी के विचारों के अनुसार ही जीवन के मार्ग पर संकटों के आने के बावजूद सत्य के मार्ग का ही आचरण करना चाहिए।'' उपसरपंच सुलोचना कांबळे ने कृतज्ञता निभाई। प्रशांत रेडेकर ने सूत्रसंचालन किया।

3) छ. शाहू महाराज जयंती समारोह

कोल्हापुर दि. 26 : कोल्हापुर के एबल मेरीवेदर मैदान में राजर्षी छ. शाहू महाराज की जयंती बडी धुमधाम से मनाई गई। शिव-शाहू प्रतिष्ठान कोल्हापुर की ओर से समारोह आयोजित किया गया था।

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री मा. पृथ्वीराज चव्हाण प्रमुख अतिथि थे। प्रसिध्द इतिहास संशोधक डॉ. जयसिंगराव पवार, शिव-शाहू प्रतिष्ठान के सभी पदाधिकारी सदस्य उपस्थित थे।

प्रमुख अतिथि और करकमलों से दीपप्रज्वलन संपन्न हुआ। प्रतिष्ठान के अध्यक्ष मा. विश्वासराव जाधव ने प्रास्ताविक एवं अतिथि परिचय करवाया। अतिथि महोदय के हाथों विभिन्न प्रतियोगिताओं में अव्वल विजेताओं को गौरवान्वित किया गया।

मा. पृथ्वीराज चव्हाण जी ने शाहू महाराज के सामाजिक कार्य की भूरी-भूरी प्रशंसा की। उन्होने कहा कि, ''छ. शाहूजीने सभी जातियों एवं धर्मों के लोगों के लिए पढने एवं रहने की व्यवस्था की थी। सबके लिए समान हक का पुरस्कार किया था।'' समारोह के अध्यक्ष डॉ. जयसिंगराव पवार जी ने कहा कि, ''सही मायने में शाहू महाराज लोग कल्याणकारी एवं लोगों के दिलों दिमाग में श्रध्दा के पात्र बने राजा थे। उनके जैसा शायद ही कोई राजा हुआ हो। जो इतनी दूरदृष्टी एवं सभी विषयों की पहुँच रखनेवाला राजा है। सबको मानवीयता से देखना उनका धर्म माना जा सकता है।''

प्रतिष्ठान के उपाध्यक्ष संभाजीराव देवणे जी ने सभी लोगों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। सुभाष पोवार ने शाहू महाराज के जीवन चारित्रपर लिखा पोवाडा पेश किया। राष्ट्रगीत से समारोह संपन्न हुआ।

4) क्रांतिदिन समारोह - वृत्तांत लेखन

सातारा दि. 9 : एल. बी. एस कॉलेज, सातारा एवं सातारा नगर निगम के संयुक्त तत्वावधान में संभाजी सांस्कृतिक भवन में 9 अगस्त 2014 को सुबह 10.00 बजे क्रांतिदिन समारोह बडे धूमधाम से मनाया गया।

रयत शिक्षा संस्था के अध्यक्ष प्रा. एन. डी. पाटील प्रमुख अतिथि थे। समारोह के अध्यक्ष नगरनिगम सातारा के अध्यक्ष शिवेंद्रराजे भोसले थे।

समारोह के अतिथि एवं अध्यक्ष के हाथों से दीपप्रज्वलन संपन्न हुआ। क्रातिस्तंभ के पूजन के पश्चात कन्या प्रशाला की छात्राओं ने स्वागत गीत गाया। समारोह का प्रास्ताविक एवं अतिथि परिचय डॉ. प्रशांत मेडसिंगे ने किया।

स्वतंत्रता सेनानियों ने अपना मंतव्य व्यक्त किया । इसमें राजाराम पाटील, शिवाजीराव भोसले आदि शामिल थे। प्रमुख अतिथि प्रा. डॉ. एन. डी. पाटील ने अपने मंतव्य में कहा कि ''देश के सिपाहियों ने 9 अगस्त के दिन क्रांति करके अंग्रेजोको भारत छोडने के लिए मजबूर किया था। देश के प्रति निष्ठा एवं श्रध्दा होने से ही देश की उन्नति हो सकती है।''

समारोह के अध्यक्ष शिवेंद्रराजे भोसले ने अपने मंतव्य में कहा कि 'देश के लिए' क्रांति अनिवार्य थी । अंग्रेजों को निकालने के लिए एकता की आवश्यकता थी। सातारा नगर निगम के उपाध्यक्ष शिवराज पाटील जीने आभार प्रदर्शन किया। इस अवसर पर देशभक्तिपर गीतों का गायन का आयोजन किया था । राष्ट्रगीत के पश्चात समापन संपन्न हुआ। डॉ. कुमुदिनी राजेभोसले ने सूत्रसंचालन किया।

4.4.3 प्राकृतिक आपदाएँ : स्वरूप

प्रकृति मानवी जीवन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। प्रकृति के बिना मनुष्य का विकास संभव नहीं है। प्रकृति मनुष्य के लिए सहायक एवं उपयुक्त होती है। वह मनुष्य के लिए अपना अनमोल दान देती है। प्रकृति हमें देना सिखाती है, लेना नहीं । मनुष्य जीवन से उसे अलग कर पाना संभव नहीं है ।

मनुष्य ने अपनी बुध्दी, विचार एवं प्रयासों के बलबूते पर प्रकृति पर विजय पाने की कोशिशें की हैं। प्रकृति मनुष्य के लिए अधिकतर सहायक साबित होती है । लेकिन कभी - कभी वह रौद्र रूप धारण करती है । अनेक प्राकृतिक आपदाएँ मनुष्य पर टूट पडती है।

जैसे - बाढ, भूचाल, पर्वतों का स्खलन, बारिश का कहर, त्सुनामी, अकाल, ज्वालामुखी का उद्रेक और समुंदर के पानी से आनेवाली आपत्तियाँ आदि अनेक प्राकृतिक आपदाएँ मनुष्य जीवन को तहस नहस कर देती है।

प्राकृतिक आपदाओं के प्रकार

प्राकृतिक आपदाओं के निम्न प्रकार किए जा सकते हैं -

1) प्राकृतिक आपदाएँ

प्राकृतिक आपदाओं पर मनुष्य का नियंत्रण नहीं होता. भूकंप, बाढ, त्सुनामी, तूफान आदि से भारी नुकसान होता है।

2) मानवनिर्मित आपदाएँ

मानवनिर्मित आपदाओं में मनुष्य ने अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए पेडों को काटा है जिससे अकाल, एवं वातावरण की हानि हुई है। 'ओझोन' का स्तर कम होने के कारण अल्ट्राव्हायलेट का खतरा बढता जा रहा है ।

4.4.3.1 प्राकृतिक आपदाएँ : मसौदा लेखन

नेपाल में भूकंप, 2500 लोगो की मौत

काठमांडू, 26 : नेपाल के लामजुंग में आज 7.9 रिश्टर स्केल क्षमता के धक्के महसूस हुए । नेपाल के साथ भारत, पाकिस्तान, बाग्लादेश, म्यानमार और तिबेट के कुछ हिस्सों में भी जोरदार भूकंप हुआ। इस भूचाल के कारण नेपाल में भारी नुकसान हो गया है । साथ ही 2500 लोगों की मौत हो गई है। इतना ही नहीं भूचाल के कारण इमारतों के मलबे के नीचे कई लोग दबे होने की आशंका है। घायल लोगों की संख्या भी काफी बडी है । जिन्हे अस्पताल में पहुँचाने का कार्य जारी है। मलबे के नीचे दबे लोगों को निकालने का, राहत कार्य जारी है।

नेपाल में पिछले 80 सालों में हुए भूचाल में से यह घटना सबसे बडी है। भारत की ओर से राहतकार्य दल भेजे गए हैं। सुबह 11.40 बजे दो मिनट तक चले भूचाल के झटकों से भारत के उत्तर, दक्षिण भूभाग, बांगलादेश, पाकिस्तान, तिबेट में 12 लोगों की मौत हुई, तो 20 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। भारत के विभिन्न राज्यों में 53 लोग मारे गए । 200 लोग जख्मी हो गए हैं। काठमांडू में भूचाल के झटकों से अनेक मकान ढह गए हैं। मकानों के मलबे के नीचे हजारों लोग फँसे हुए हैं । साथ ही मरे हुए लोगों के आंकडों में बढोत्तरी होने की संभावना है।

पहले झटके के साथ ही नेपाल के प्रशासन ने रेडियो द्वारा लोगों को घर से बाहर निकलने की सूचना दी थी। फिर दुसरा झटका लगा । इसके बाद 17 झटकें लगे। पहले झटके के बाद ही नेपाल प्रशासन ने राहत कार्य आरंभ किया था। मरनेवालों की संख्या बढ रही है। नेपाळ में भारी आर्थिक नुकसान हो गया है। भारत की ओर से मदद मिल रही है। नेपाळ का 19 वीं सदी का 'मिनार' धराशायी हो गया है। उसके नीचे दबे 200 लोगों के शव बाहर निकाले गए हैं।

भूचाल के बाद विमान सुविधा तुरंत बंद कर दी गई है। हवाई अड्डे पर भी भारी नुकसान हुआ है। सूत्रों के अनुसार पता चला है कि हिमालय एवं भूचाल इनका गहरा रिश्ता है । इस इलाके में स्थित इंडियन एवं युरेशियम यह दो प्लेट एक दुसरे से टकराने से ऐसे भूचाल के तीव्र झटकें होते ही रहते हैं।

4.4.3.2 प्राकृतिक आपदाएँ : वृत्तांत लेखन की भाषा

प्राकृतिक आपदाओं के वृत्तांतलेखन की भाषा सहज, सरल एवं वस्तुनिष्ठ होनी चाहिए। भाषा में अतिशयोक्ति नहीं होनी चाहिए ।

उसमें प्रवाहात्मकता, सुबोधता एवं सुस्पष्टता होनी चाहिए। पुरे प्रसंग का सिलसिलेवार वर्णन यहाँ आवश्यक होता है।

व्याकरण की दृष्टि से भाषा सर्वसम्मत होनी चाहिए। उसमें वर्तनी के दोष नहीं होने चाहिए। वर्तनी के दोषों से पाठकों में गलतफहमियाँ बढने की संभावना होती है। सभी स्तर के पाठकों को प्रभावित करनेवाली तथा सबके लिए बोधगम्य भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

भाषा सूत्रबध्द, आकर्षक और मार्मिक होनी चाहिए। उचित शब्दों का प्रयोग करके लेखन करना चाहिए। अपरिचित शब्द, असंबद्ध वाक्य संरचना, पांडित्यपूर्ण शब्दों को टालना ही बेहत्तर होता है।

घटना एवं प्रसंग का वर्णन प्रभावशाली होना चाहिए। शैली में पठनीयता हो। मुद्दों के आधारपर घटना का वर्णन अपेक्षित होता है।

4.4.3.3 प्राकृतिक आपदाएँ : वृत्तांत लेखन की विशेषताएँ

प्राकृतिक आपदाओं के कहर से मनुष्य जीवन में भारी नुकसान होता है। उसके बाद मुनष्य को कई दिनों तक समस्याओं से जुझना पडता है। उसके दैनंदिन जीवन में भारी विडंबनाओं से उन्हे गुजरना पडता है।

1) वृत्तांत लेखन में रोचकता, उत्कंठा एवं जिज्ञासा होनी आवश्यक।

2) उसमें काल्पनिक बातों के लिए स्थान नहीं होता।

3) इस प्रकार की घटनाएँ पहले घटित हो चुकी हो, तो उसका उल्लेख आवश्यक है।

4) वर्णन इस प्रकार से किया जाए कि पाठकों के मन में भी ठीक वैसी ही संवेदना जागृत हो सके।

5) वृत्तांत लेखन को मार्मिक एवं हद्यग्राही बनाने का प्रयास होना चाहिए।

6) किसी घटना एवं प्रसंग का पूरा वर्णन वृत्तांत लेखन में आना आवश्यक है।

7) जिस प्रकार की घटना हो उसी के अनुरूप भाषा का प्रयोग करना चाहिए ।

8) घटना या प्रसंग का वर्णन क्रम के अनुसार हो।

9) वर्णन में एकसूत्रता होनी चाहिए ।

10) घटना का परिणाम किसपर एवं कैसे होनेवाला है इसबात का वर्णन होना चाहिए ।

11) घटना की ताजगी, एवं निकटता का वर्णन होना चाहिए।

4.4.3.4 प्राकृतिक आपदाएँ : वृत्तांत लेखन की समस्याएँ

1) वृत्तांत लेखन का विवरण आधा - अधूरा नहीं होना चाहिए।

2) वृत्तांत लेखन कृत्रिम नहीं होना चाहिए।

3) वृत्तांत लेखन नकारात्मक नहीं लिखना चाहिए।

4) वृत्तांत लेखन में कभी - कभी पदक्रम की ओर अनदेखा किया जाता है उसे टालना चाहिए।

5) वृत्तांत में गलतफहमियाँ पैदा होने की गुंजाईश न हो।

6) वृत्तांत लेखन में अपने मतों को नहीं घुसेडना चाहिए ।

7) वृत्तांत लेखन में तटस्थता से तथ्य को बाहर लाना चाहिए।

8) भाषा द्विअर्थी न हो।

9) प्राकृतिक आपदाओं के स्थल एवं दिनांक में एकसूत्रता होनी चाहिए।

10) विषयों की रचना प्रक्रिया को समझकर अलग-अलग शैली को अपनाना चाहिए।

11) प्राकृतिक आपदा के प्रसंगो में कोई भी छोटा सा अंश न छूटे, इसका ध्यान रखना चाहिए।

4.4.3.5 प्राकृतिक आपदा : वृत्तांत लेखन

1) त्सुनामी कहर से 196 लोगों की मौत

अंदमान 20 : अंदमान निकोबार के पूर्ववर्ती किनारे पर समुंदर में उठे 'त्सुनामी' के कहर से तटवर्ती इलाके के 196 लोगों की मौत हुयी । अंदमान निकोबार के पूर्ववर्ती इलाकों में बंगाल के उपसागर के अंतर्गत लहरों ने कल रात भीषण तांडव किया। कल रात 8.00 बजे से ही सागर की लहरें जोर-शोर के साथ तटवर्ती इलाके में टकराने लगी थी। झोपडियों में रहनेवाले लोगों ने लहरों की टकराहट सुनी थी। पर यह टकराहट उनके लिए नयी नहीं थी । ऐसा तो ज्वार-भाटा के समय वे निरंतर सुनते आए थे। दिन-भर के थके हारे मल्लाह एवं बाकी लोग रूखा-सुखा भोजन करके अपने बाल-बच्चों समेत सोए थे । रात के मध्य में फिर बार-बार जोर-शोर के साथ लहरें किनारे से टकराने लगी थी। लहरों के आघात से बहुत बडी आँधी आने की संभावना दिखाई दे रही थी। फिर भी किसी ने लहरों के उफान को देखने की बिल्कुल कोशिश नहीं की थी, क्योंकि यह तो उनके लिए रोज की बात थी। परंतु लहरों का तूफान इस बार हमेशा की तरह चुपचाप लौटनेवाला नहीं था। उसमें अचानक बदलाव आया । तटवर्ती इलाकों की झोपडियों में घुसकर लोगों को उनके बालबच्चों एवं उनकी झोपडियों समेत अपने विकराल मुँह में निगल लिया। सोई हुई पूरी की पूरी बस्ती त्सुनामी लहरों की चपेट में आ गई थी। चारों ओर हाहाकार मच गया था। जो जीवित थे वह सामनेवाला दृष्य देखकर किंकर्तव्यविमुढ हो गए थे। क्योंकि उन्होने अपनी पूरी जिंदगी में इतना बडा सागरी तूफान देखा नहीं था। हँसती खेलती बस्ती को लहरों ने निगल लिया था। यह लहरें तो हजारों फीट उँची उड रही थी। हर चीज को निगलकर अपने वश में कर रही थी।

दुसरे दिन जैसे-तैसे जीवित बचे हुए लोगों ने देखा कि, उनकी पूरी बस्ती तहस-नहस हो गई थी। बच्चे एवं बुढे मिलकर दो सौ लोग मृत्यु के अधीन हो गए थे। कुछ लोग गंभीर रूप से घायल हो गए थे। गिने - चुने लोग इस तांडव में बच गए थे। बस्ती का तो कही नामोनिशान नहीं था। अपनों की मौत से जीवित लोगों का दिल दहला दिया था। पूरा तटवर्ती इलाका नष्ट हो गया था। दो-तीन बच्चे कुदरत के करिश्मों के कारण बच गए थे। पर उनके माता - पिता मर गए थे। स्थानिय लोगों और मिडिया के द्वारा सरकार को इस घटना का पता चला तो प्रशासन ने बचाव कार्य के लिए सेना की टुकडी फौरन भेज दी। अंदमान के मेयर क्वात्रोची तुरंत घटनास्थल पर दाखिल हो गए थे।

उन्होने गंभीर रूप से घायल व्यक्तियों को इलाज के लिए सरकारी अस्पताल में भर्ती करने के आदेश दिए तथा उन्हे 50 हजार घोषित किए। जिनकी मृत्यु हुई है, उनके परिवारवालों को तीन लाख रू. देने की घोषणा की। इस आपत्ती को राष्ट्रीय आपत्ती समझकर देश की जनता को मद्द करने की बिनती की।

2) कच्छ में भूकंप से विनाश - प्राकृतिक आपदा

कच्छ दि. 29 : गुजरात के कच्छ इलाखें में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव का पर्व शुरू हो गया था। जन्माष्टमी की तैयारियाँ जोर-शोर के साथ हो रही थी। लेकिन आधी रात को पूरे कच्छ भूभाग में अचानक भूचाल आ गया । लोग घबराकर बाहर भागना चाहते ही थे, पर हडबडी में वे भाग नहीं पाएँ। कच्छ इलाके के सभी मकान ढह गए। जो लोग जहाँ सो रहे थे वे वहीं दब गए। चारों ओर हाहाकार मच गया था। क्या हुआ यह जानने से पहले ही सबकुछ तहस - नहस हो गया था। 7.3 रिश्टर स्केल के भूकंप ने सबकुछ तबाह कर डाला था। चारों ओर मलबे का ढेर एवं धुआँ नजर आ रहा था। क्या करें? कहाँ जाए ? जो जिवित गिने-चुने लोग थे उनकी हालत ऐसी हो गई थी। खुद को बचायें या अपनों को इसी दुविधा में वे पडे थे। रात को गहरी नींद में सोए लोग जमीन में धँस गए थे। हादसा इतना भयंकर था कि कोई भी जीवित नहीं बचा होगा, ऐसा अनुमान लगाया जा रहा था। स्थानिय लोगों ने पुलिस एवं अग्निशामक दल से संपर्क करके वारदात की सूचना दी थी। पर उनके आने से पहले स्थानिय युवाओं ने बचाव कार्य शुरू किया था। मलबे को हटाकर लोग लाशों को निकाल रहे थे। लाशों की छिन्न - विच्छिनता देखकर रोम - रोम काँप रहा था। घायल व्यक्तियों को तुरंत शहर के अस्पताल में भर्ती किया गया था। आसपास के इलाकें के घरों, रास्तों एवं खेतों में भी दरारें पडी हुई थी। रोने, चीखने की आवाजों से माहौल कोलाहल से भरा था। हजारों परिवार मलबे के नीचे दबकर तबाह हो गए थे। स्थानिय लोग, पुलिस, अग्निशामक एवं मशीनों की सहायता से लाशों को निकालना जारी था। गुजरात के मुख्यमंत्री एवं विधायकों का दल घटनास्थल पर दाखिल हुए थे। उन्होने मृतकों के रिश्तेदारों एवं गंभीर रूप से घायल व्यक्तियों को मदद देने की घोषणा की थी । इस आपत्ति में देश की जनता को मदद के लिए आवाहन किया था।

3) सांगली शहर में बाढ से तबाही

सांगली 15 : 11 जुलाई 2014 से लगातार बारिश के कारण सांगली शहर में बाढ की भीषण समस्या निर्माण हो गई थी। पूरा सांगली शहर पानी की चपेट में आ गया था। मूसलाधार बारिश के कारण पिछले चार दिनों से सांगली शहर के पास से बहनेवाली कृष्णा नदी ने बडा विकराल रूप धारण किया था। भारी बारिश के कारण कृष्णा नदी का जलस्तर बढता ही जा रहा था। सांगली शहर पर एक और संकट ने कहर ढाया था, वह यह कि कोयना नहर से 65,000 क्युसेक्स पानी प्रति सेकंड छोडा जाने के कारण पानी के स्तर में बढोत्तरी ही हो रही थी। इतनी बडी मात्रा में पहली बार पानी छोडने के कारण चारो ओर पानी ही पानी दिखाई दे रहा था। पानी के लिए कोई सीमा एवं बंधन नहीं होता । यह कहना सच साबित हो रहा था। शहर के बीचों-बीच दुकानों, घरों एवं सरकारी दफ्तरों में पानी घूसने के कारण लोगों का भारी मात्रा में नुकसान हो रहा था। यह तो कुछ भी नहीं, पानी की चपेट में आने के कारण कई लोग पानी में बह गए थे । उनके शवों का भी कहीं आता पता नहीं मिल रहा था। लोग अपने घरों की छतों पर बडी संख्या में फँस चुके थै। कई लोग अचानक बढते पानी के कारण पेडों पर ही अटक गए थे।

अचानक पानी बढने के कारण लोग अपने घरो में फँस चुके थे। उन्हे वहाँ से निकालने का कार्य सेना के जवानों की सहायता से किया जा रहा था। सेना के जवान अपनी जान जोखिम में डालकर पानी में फँसे लोगों को सुरक्षित स्थलों पर पहुँचाने का काम कर रहे थे। मनुष्य एवं पशुओं को बाहर निकालने में जवानों को सफलता मिल रही थी। बचाव एवं राहत कार्य में स्थानिय लोग बडे उत्साह के साथ जवानों की सहायता कर रहे थे। तथा सांगली शहर को जोडनेवाले सभी रास्तों पर पानी भरने के कारण बस एवं रेल सुविधा भी ठप्प हो गई थी। मुख्यमंत्री मा. पृथ्वीराज चौहान एवं उपमुख्यमंत्री मा. अजित पवार ने घटनास्थल पर पहुँचकर मुआयना करके मृतकों के रिश्तेदारों को रू. 3,00,000, जिनका गंभीर नुकसान हुआ था उनको रू. 1,00,000 देने की घोषणा की थी। बाढ के प्रकोप के बाद भी लोगों का इतना नुकसान हुआ था कि कई दिनों तक स्थानीय लोग कीचड, गंदगी एवं अनेक बीमारियों का सामना कर रहे थे।

बाढ के प्रकोप के कारण सांगलीवासियों के जीवन एवं यातायात पर गंभीर असर हुआ था ।

4.4.4 दुर्घटनाओं का वृत्तांत लेखन : स्वरूप

आज आधुनिक युग में जीवन की आपाधापी में हर एक मनुष्य को दौड-धूप करनी पडती है। जीवन गतिमय हो गया है । इसीकारण आए दिन किसी न किसी दुर्घटना का सामना करना पड रहा है। जैसे विमान दुर्घटना। इसमें कंट्रोल युनिट से संपर्क न होनेपर विमान भटक जाता है और दुर्घटना ग्रस्त हो जाता है।

रेल दुर्घटना - की संख्या काफी बढ गई है। सिग्नल न मिलने से, ड्राइव्हर का नियंत्रण न रहने से, ट्रेन बेकाबू होती है। इससे कई लोग मौत के घाट उतारें जातें हैं। बसों एवं मोटर साइकिलों की दुर्घटना के संबंध में जितना कहा जाए उतना कम है। बस, ट्रक, कार आदि की दुर्घटना की कोई सीमा ही नहीं है। तेज रफ्तार यही मनुष्य जीवन का महत्वपूर्ण अंग बनने के कारण दुर्घटनाओं की संख्या बढ़ती डा रही है ।

कभी-कभी किसी कंपनी और मीलों, कारखानों में भी भीषण अग्निकांड होता है। कभी शॉर्ट सर्किट की वजह से, तो कभी अन्य कारणों से सब कुछ जलकर राख हो जाता है। आजकल जगह जगह पर आतंकवादी हमले होते रहते हैं। इन हमलों में बम विस्फोट का संकट बढ़ता जा रहा हैं। आतंकवादी बडे - बडे नगरों में बम विस्फोट करवातें हैं और लाखो लोगों की जान चली जाती है।

युवक-युवतियाँ मोटरसाइकिल पर संवार होकर सौ - डेढ सौ की रफ्तार से गाडी चलाकर अपने जीवन को खतरे में डाल रहे हैं। मेगा हायवे पर ऐसी दुर्घटनाओं की संख्या निरंतर बढती जा रही है। युवा पीढी को अपनी तथा अपने माता - पिता की जरा भी चिंता नहीं है। इसी प्रकार दुर्घटनाओं की संख्या बढती ही जा रही है।

दुर्घटनाओं के प्रकार

1) विमान, रेल, बस, ट्रक, कार एवं मोटर साइकिल दुर्घटना ।

2) अग्निकांड।

3) बम विस्फोट।

4.4.4.1 दुर्घटनाओं का मसौदा लेखन

भीषण आगजनी में मकान जलकर राख

पुना : कल रात 11.00 बजे पुना के जंगली महाराज रोड पर एक गली में ''आग - आग, बचाओ - बचाओ'' जैसे चीखने चिल्लाने एवं रोने बिलखने की आवाजों से पूरा माहौल गुँज रहा था। गली के सब लोग इकट्ठा हो गए थे। एक मकान में भीषण आग लगी थी। आसमान में उँची लपेटें उड रही थी। आग एवं धुएँ से भरा पूरा मकान आग की चपेट में आकर जलकर भस्म हो चुका था।

किसी ने आग की सूचना फायरब्रिगेड को देने के बाद तुरंत ही उनका दल आकर, मकान पर पानी का जोरदार प्रवाह छोड रहे थे। उनमें से एक - दो आदमी सीढियों की सहाय्यता से मकान के भीतर घुस गए थे । उन्होने राहत कार्य शुरू किया था। दो बच्चे, उनके माता-पिता को उन्होने जलते मकान से बाहर निकाला था। अपनी जान की परवाह किए बिना वे बचाव कार्य करने में जुट गए थे। जैसे ही उन्होने पूरे परिवार को जलते मकान से बाहर निकाला तभी जोरदार धमाका हुआ। यह आवाज गँस सिलिंडर फटने की थी। उसके पश्चात मकान का उपरी हिस्सा गिर पडा। पूरे दो - तीन घंटों तक फायर ब्रिगेड के दल बचाव कार्य कर रहे थे । आग आसपास के घरों में न फैले इसिलिए वे पानी के फवारें आग पर छोड रहे थे। अंत में उन्हे आग को रोकने में सफलता मिल गई थी।

जलता मकान कुछ देर पहले एक सुंदर घरौंदा था। पर आग ने तहस - नहस कर डाला था। सब कुछ धधक रहा था। घायलों को तुरंत अस्पताल पहुँचाया गया था। कुछ दिनों के पश्चात खबर सुनने में आई थी कि घर के किसी बूढे व्यक्ति ने बीडी पीकर उसका अधजला टुकडा मकान के कूडेदान में फेंक दिया था । जिससे यह आग लगी थी।

4.4.4.2 दुर्घटनाओं के वृत्तांत लेखन की विशेषताएँ

1) दुर्घटना में स्थल एवं दृष्य के वर्णन के साथ, दुर्घटना से प्रभावित व्यक्तियों के नामों का उल्लेख विस्तार से किया जाता है।

2) वृत्तांत लेखनकर्ता अनुशासनप्रिय होना चाहिए।

3) पाठकों की जिज्ञासा उत्पन्न करनेवाला शीर्षक होता है।

4) शीर्षक को पढकर ही वृत्तांत का पूरा आशय पाठकों की समझ में आता है।

5) साहसी एवं नीडर व्यक्ति ही वृत्तांत लेखनकर्ता बन सकता है।

6) दुर्घटना का वृत्तांतलेखन, रोचकता एवं बोधगम्यता से परिपूर्ण होता है।

७) विशेषणों का प्रयोग न के बराबर होता है।

८) दुर्घटना के वृत्तांत लेखन में क्रमबद्धता होनी चाहिए।

९) वृत्तांत लेखनकर्ता को अपने मन की बातों का समावेश नहीं करना चाहिए ।

१०) दुर्घटना का परिणाम कितने लोगोंपर एवं कैसे हुआ है, इसकी विस्तार से जानकारी देनी चाहिए ।

११) घटना की ताजगी एवं निकटता का उल्लेख होता है ।

१२) दुर्घटना का तात्कालिक महत्व समझकर वैसी ही घटनाएँ पहले घटित हो चुकी है इसका उल्लेख होता है ।

4.4.4.3 दुर्घटनाओं के वृत्तांतलेखन की समस्याएँ

1) दुर्घटनाओं का वृत्तांत लेखन नकारात्मक भाषा में न लिखा जाए ।

2) दुर्घटनाओं के वृत्तांतलेखन में समय, पाठक, गलत कहानियों के शिकार न हो इस पर ध्यान देना चाहिए ।

3) वृत्तांत लेखनकर्ता अपने मतों एवं विचारों को लेखन में घुसेड देने की संभावना होती है ।

4) वृत्तांत लेखन की भाषा अकृत्रिम नहीं होनी चाहिए ।

5) दुर्घटना के वृत्तांत में बीभत्स वर्णन न हो ।

6) दुर्घटनाओं के वृत्तांतलेखन में स्थल, दिनांक एवं व्यक्तियों के नाम आदि में सुसूत्रता होनी चाहिए ।

7) वृत्तांत लेखन की भाषा द्विअर्थी न हो ।

8) पदक्रम का ध्यान हमेशा रखा जाए ।

9) दुर्घटना के प्रसंग में से कोई भी छोटासा अंश न छुटे, इसका ध्यान लेखक को रखना चाहिए ।

10) अलग - अलग विषयों की रचना प्रक्रिया को समझकर, अलग-अलग शैली अपनानी आवश्यक है ।

4.4.4.4 दुर्घटना वृत्तांत लेखन

1) बस दुर्घटना में 10 लोगो की मौत

बेलगाम 15 : बस खाई में गिरने से 10 लोगों की मौत -

बेलगाम शहर से कुछ ही दूरी पर, बस खाई में गिरने से 10 लोगों को जान से हाथ धोना पडा । अधिकृत सूत्रों के अनुसार पता चला है कि महाराजा निजि ट्रॅव्हल कंपनी की एक बस नं. चक-04879950 यात्रियों को लेकर दि. 14-2-2015 के दिन मुंबई दादर से 10 दिन की दक्षिण भारत यात्रा पर निकली थी । बेलगाम शहर के थोडी दूर, खानापुर के पास चोरला घाटी में आते ही न जाने बस के इंजिन में अचानक कुछ खराबी आ गई और बस बेकाबू हो गयी । यह दृष्य देखते ही सभी यात्री सकपका गए थे । उनकी जान साँसत में आ गई थी । बस के ड्राइव्हर राजपाल यादव ने अपनी ओर से बस पर नियंत्रण पाने की पूरी कोशिश की थी, परंतु बस पूरी तरह आपे से बाहर हो गई । बस की रफ्तार अनियंत्रित होने लगी और देखते ही देखते पचास यात्रियों समेत ड्रायव्हर के साथ बस गहरी खाई में गिर गई थी ।

सूत्रों के अनुसार यह जानकारी मिली थी कि बस में औरतों एवं बच्चों की संख्या काफी बडी थी। बस खाई में गिरते ही चिखने, चिल्लाने की आवाजों ने दिल दहला दिया। बस एवं यात्रियों का हाल देखा नहीं जाता था। आसपास के गाँववालों को जैसे ही बस दुर्घटना की खबर लगी, वैसे लोग दौडते हुए आ रहे थे। देखते-देखते काफी बडी भीड इकट्ठा होने लगी थी। भीड में से किसी ने पुलिस एवं फायरब्रिगेडवालों को इस दुर्घटना के संबंध में समाचार दे दिया था। समाचार मिलते ही स्थानिय लोगों ने पुलिस के आने तक बचाव एवं राहत कार्य शुरू किया था। घटनास्थल पर लाशों का ढेर सा लग गया था। पुलिस तथा फायरब्रिगेड के लोग आते ही, स्थानीय युवाओं की सहाय्यता से राहत कार्य तेजी के साथ किया जा रहा था। 10 लोगों ने पहले ही दम तोड दिया था, जो गंभीर रूप से घायल थे, उन्हे बेलगाम के सरकारी अस्पताल में भरती करवा दिया था। जब इस घटना की खबर पहुँची तो कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिध्दामय्याजी एवं उपमुख्यमंत्री जगदीश शेट्टर जी ने घटनास्थल पर पहुँचकर जाँच करनेके पश्चात अस्पताल जाकर मरे हुए यात्रियों के परिवार को दो - दो लाख देने का वचन दिया। गंभीर रूप से घायल व्यक्तियों को एक - एक लाख देने का वादा किया। पुलिस एवं फायरब्रिगेड के साथ ही जनता ने बडी मात्रा में राहत कार्य में योगदान दिया है।

2) ट्रक - कार दुर्घटना - वृत्तांत लेखन

बेलगाम दि. : हायवे पर ट्रक कार टकराने से 5 मरे, एक घायल

कल शाम 6.30 बजे पुना-बेंगलोर हायवे पर, एक बडी दुर्घटना हो गई। ट्रक नं. 06-4049 पुना से बेंगलोर की ओर जा रहा था। ट्रक के पिछे अन्य ट्रकों की लंबी कतार लगी हुई थी। दुसरी ओर से कारें तेज दौड रही थी। बेलगाम से निकली कार - 33-5457 कारों की लंबी कतार तेज रफ्तार से पार करते-करते बडी जल्दी में ओवरटेक करकेआगे बढने की कोशिश में सामने से तेज गति से आनेवाले ट्रक से जाकर टकराई। पूरी की पूरी कार चकनाचुर हो गई थी। यह टक्कर इतनी जोरदार थी कि लोगों को कुछ समझ में नही आ रहा था। देखनेवाले देखते रह गए थे। ट्रक का ड्रायव्हर लोगों की पिटाई के डर से ट्रक छोडकर भाग गया था। लेकिन कार के ड्राइव्हर की मौत घटनास्थलपर ही हो गई थी। कार में बैठे चार लोगों की मौत घटनास्थल पर ही हो गई थी। इनमें से दो महिला एवं दो पुरूष थे। एक पुरूष एवं एक महिला अधेड उम्र की थी । एक पुरूष एवं एक महिला युवा थे। आश्चर्य की बात यह थी की इतना जोरदार हादसा होने के बावजूद और कार तेज गति से टकराने के बाद भी एक पाँच साल का छोटा बच्चा जीवित था। उसे केवल खरोंच के सिवाय कुछ भी नहीं हुआ था। उस बच्चे को भी नजदीक के अस्पताल में तुरंत भर्ती करवाने का काम स्थानिय लोगों ने किया था। माता-पिता और दादा दादी एवं परिवार के चारों सदस्यों की मौत होने के कारण बच्चा अनाथ हो गया था। भीड में से किसी ने पुलिस से संपर्क करके वारदात की सूचना दी थी। इस घटना से यातायात पूरी ठप्प हो गई थी। बहुत भारी भीड घटनास्थल पर जमा हो गई थी। यह टक्कर इतनी जबरदस्त थी की कार के अंदर की लाशें निकालना बहुत ही मुश्किल हो रहा था। पुलिस एवं अस्पताल के कर्मचारियों के आने के बाद शवों को कार कटवाकर निकाला गया । भागा हुआ ट्रक ड्राइव्हर फरार हुआ था। उसकी तलाश जारी है। सूत्रों के अनुसार पता चला कि मृत परिवार, बेलगाम के निवासी थे, जो अपने रिश्तेदार की शादी में पूना जा रहे थे । तभी यह हादसा हुआ था।

3) रेल दुर्घटना में 116 की मृत्यू

आग्रा दि. 12 : शताब्दी एक्सप्रेस पटरी से उतरने से 116 यात्रियों की मृत्यु एवं 94 व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गए। मडगाँव गोवा से सुबह 7.15 पर छुटने वाली शताब्दी एक्सप्रेस यांत्रियों को लेकर दिल्ली जा रही थी। जैसे ही शताब्दी एक्सप्रेस आग्रा जंक्शन की ओर आने लगी थी, मौसम खराब था, चारों ओर कोहरे की गहरी पर्त जमा हो गई थी। आग्रा जंक्शन पर आने से पहले गाडी को पीछे ही रोकने के लिए लालबत्ती का सिग्नल दिया था । पर गहरे कोहरे की वजह से सिग्नल दिखाई न देने से, गाडी वैसे ही रफ्तार से आगे बढी और तेजी के साथ पटरी से उतर गई। रेल ड्राइव्हर का रेल से नियंत्रण छूट जाने से रेल पटरी छोडकर नीचे उतर गई। जैसे ही ट्रेन पटरी से उतरी उसके कई डिब्बें गुलाटी मारकर नीचे जमीन पर गिर गये थे। जैसे ही यह हादसा हुआ यात्रियों का चीखना - चिल्लाना, मदद के लिए गुहार लगाना आरंभ हो गया था। स्टेशन पर खडे यात्री उस तरफ भागे। कई लोगों के शव इधर-उधर पडे थे। कई लोंग गंभीर रूप से घायल होकर मृत्यू के कगार पर खडे थे। रेल्वे प्रशासन ने इस वारदात की खबर पुलिस एवं अग्निशामक दल को दी थी। परंतु उनके आने से पहले ही अन्य यात्रियों ने बचाव कार्य शुरू किया था। गंभीर रूप से घायल यात्रियों को सहीसलामत बाहर निकालकर अस्पताल में भर्ती करवाने का कार्य शुरू किया था । मृतकों की लाशों को निकालकर शिनाक्त की जा रही थी । कुल मिलाकर 116 यात्रियों की मौत हो गयी थी । उतने ही घायल थे। घटनास्थल पर खून एवं मांस का कीचड नजर आ रहा था। रोने, चिल्लाने की आवाजों से माहौल कोलाहल से भर गया था। अपनों की लाशें सामने देखकर रिश्तेदार क्रंदन कर रहे थे। औरतें दहाड मारकर रोने लगी थी।

किसी का सिर, पैर, हाथ, गर्दन आदि में जख्म होकर खून बह रहा था। पुलिस एवं अग्निशामक दल की सहायता से बचाव एवं राहत कार्य तीव्र गति के साथ हो रहा था। स्थानीय विधायक रामशरण चतुर्वेदी घटनास्थल पर पहुँचकर अस्पताल में भर्ती किए गए घायलों की सेहत का हालचाल पूँछ रहे थे। मृतकों के रिश्तेदारों को एवं घायलों को मदद की घोषणा उन्होने की थी। इस दुर्घटना की छानबीन करने की घोषणा की थी। तथा सरकार की ओर से और भी अधिक सहायता देने का वादा किया था।

4) ए. व्ही. एच कंपनी में आगजनी - हलकर्णी दुर्घटना वृत्तांत लेखन

चंदगड 25 : चंदगड तहसील के हलकर्णी गाँव के नजदीक ए.व्ही.एच कंपनी में भीषण आग लगने से करोडों का नुकसान हुआ हैं। सूत्रों के अनुसार पता चला कि ए. व्ही. एच कंपनी में आरंभ में स्टील बनाने का काम होगा ऐसा कहकर सभी मुद्दों के संबंध में कानून एवं प्रशासन की अनुमति भी ली थी। केवल दो ही वर्षो में 82 एकड जमीन की एरिया में फैली कंपनी बाद में कोलतार का निर्माण करने लगी। प्रारंभ में तो स्टील का उत्पादन बाद में कोलतार का निर्माण यह गुत्थि किसी की समझ में भी नहीं आई। चंदगड एवं आसपास की भूमि प्रकृति का एक सुंदर एवं सजीव चित्र कहलाता है । यह प्रोजेक्ट पर्यावरण के लिए खतरे का निशान बन गया था। जैसे ही कंपनी के द्वारा कोलतार का निर्माण जोर - जोर से होने लगा, यहाँ स्थानिय इलाके में लोगों के स्वास्थ एवं यहाँ के काजु, गन्ना आदि की फसल पर गंभीर असर होने की संभावना पैदा हो गई थी। महाराष्ट्र प्रदुषण मंडल की ओर से जब कंपनी से निकलनेवाले धुएँ की जाँच की गई, तब कंपनी से निकलनेवाले धुएँ में कुछ जहरीली गैस की मात्रा थी, जिसके परिणामस्वरूप यहाँ की सुंदर प्रकृति एवं पेड-पौधें तथा मानवी जीवन के लिए हानिकारक थी। कंपनी के प्रशासन के पास स्थानीय लोग एवं नेताओं ने कई बार मानवी जीवन के लिए हानिकारक बताकर कंपनी का उत्पादन बंद करने का

निवेदन सैंकडो बार दिया था । पर कंपनीवालों ने अनसुनी कर दी । कंपनी को बंद करने की बिनती करने के लिए समाजसुधारक, नेताओं, स्कूल कॉलेज के अध्यापकों एवं छात्रों ने मोर्चे निकालें, मूक मोर्चे निकालें, कँडल मार्च निकाले गए थे । जनआंदोलन भी किए थे । सरकार कभी कंपनी को स्टे ऑर्डर देती, तो कभी कंपनी चालू करने का आदेश देती । ऐसा करते करते जन आंदोलन ने एक व्यापक रूप धारण कर लिया । जन आंदोलन, मोर्चे आदि का असर न होनेपर तथा कंपनी के अधिकारियों की असहाय्यता देखकर लोग अपने आप को रोक नहीं पाये । लोगों की बैठकने विराट रूप ले लिया । जिसमें लोग बडी संख्या में थे । उस दिन भी लोगों ने अपना कहना कंपनीवालों के सामने रखा था । पर कोई असर नहीं हुआ । तब भीड ने पाटणे चौराहे के पास कंपनी की दो गाडियाँ एव पुलिस की एक गाडी जला दी । कई मोटरसाइकिलें जलाई । इतना ही नहीं भीड का स्वरूप उग्र होने के बाद, उन्होने कंपनी का ऑफिस, किमती सामान, मशीन्स, संगणक, टेलिव्हिजन, साइकिलें एवं अन्य सामान जलाना शुरू किया । कंपनी के कर्मचारी बेचारे जान बचाकर भागे । लोगो ने आंदोलन को तीव्र बनाते हुए कंपनी की हर एक चीज जलाकर कुछ चीजों को तोडना भी शुरू किया था । पूरी की पूरी कंपनी को आग लगाकर भीड ने अपना अस्तित्व दिखाया ।

4.5 स्वयं - अध्ययन के लिए प्रश्न

अ) निम्नलिखित वाक्यों में दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए ।

1) अनेक व्यक्तियों की अभिरूचि जिस सामयिक बात से होती है, वह समाचार है ऐसा ..... ने कहा है ।

क) जॉर्ज. एच. मौरिस ख) लेदरवूड ग) प्रो बिलार्ड ब्लेयर घ) स्पेन्सर

2) समाचार जल्दी में लिखा गया इतिहास है, ऐसा ..... ने कहा है ।

क) लेदरवूड ख) जॉर्ज. एच. मौरिस ग) स्पेन्सर घ) हापवुड

3) वृत्तांत लेखन ..... क्षेत्र में आता है ।

क) विज्ञान ख) पत्रकारिता ग) वाणिज्य घ) कला

4) समाचार लेखन विधि के तत्व ..... हैं ।

क) पाँच ख) तीन ग) दो घ) चार

5) समाचार में किपलिंग ने ..... तत्व अनिवार्य माना है ।

क) दो ख) पाँच ग) तीन घ) छ

आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक - एक वाक्य में लिखिए ।

1) वृत्तांत लेखन के अन्य नाम कौन से हैं ?

2) समाचार को अंग्रजी में क्या नाम हैं ?

3) समाचार लेखन के तीन गुण कौनसे हैं ?

4) प्राकृतिक आपदा के दो प्रकार कौनसे हैं ?

5) समाचार पढते समय सबसे पहले किस पर नजर जाती है ?

4.6 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

सामयिक	-	वर्तमानकालीन
आमुख	-	भूमिका
अभिरूचि	-	अभिलाषा, इच्छा
मुद्रण	-	छापना
इन्ट्रो	-	आमुख, भूमिका

4.7 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

अ) 1. प्रो. बिलार्ड ब्लेयर 2. जॉर्ज. एच. मौरिस 3. कला

4. तीन 5. छः

आ) 1) वृत्तांत लेखन के अन्य नाम-रिपोर्ताज और समाचार लेखन है।

2) समाचार को अंग्रेजी मं 'न्यूज' कहते है।

3) समाचार लेखन के तीन गुण - सत्यता, रोचकता, संक्षिप्तता हैं।

4) आपदा के दो प्रकार हैं । प्राकृतिक एवं मानवनिर्मित।

5) समाचार पढते समय सबसे पहले शीर्षक पर नजर जाती है।

4.8 सारांश

1) 'वृत्तांत लेखन' के अन्य नाम समाचार लेखन और रिपोर्ताज है। 'वृत्तांत लेखन' कला क्षेत्र में आता है। विभिन्न क्षेत्रों, स्थानों एवं विषयों की गतिविधियों को संक्षेप में और प्रभावशाली ढंग से पाठकों तक पहुँचाना वृत्तांतलेखन का कार्य है।

2) अंग्रेजी के 'NEWS' शब्द का पर्यायी शब्द समाचार है, जिसका तात्पर्य चार दिशाएँ , आदि को सूचित करता है।

3) किपलिंग नामक पाश्चात्य पत्रकार ने 'वृत्तांत लेखन' में छ: तत्वों का समावेश अनिवार्य माना है । जैसे - (क्या), (कहाँ), (कब), (कौन), (क्यों) और (कैसे)

4) 'वृत्तांत लेखन विधी' में शीर्षक, आमुख और विवरण का महत्व रहता है।

5) अमेरिकन पत्रकार जोसेफ ने वृत्तांत लेखन की यथार्थता, संक्षिप्तता और रोचकता यें तीन गुण बताएँ हैं।

6) 'वृत्तांत लेखन' कई प्रकार से किया जा सकता है, जैसे महाविद्यालय में होनेवाले विभिन्न कार्यक्रमों का, समाज में होनेवाली गतिविधियों का, सामाजिक समारोह, प्राकृतिक आपदाएँ और दुर्घटनाओं का।

4.9 स्वाध्याय

1) वृत्तांत लेखन के विविध सोपानों पर प्रकाश डालिए।

2) 'वृत्तांत लेखन' की परिभाषा, स्वरूप एवं तत्वों का विवेचन कीजिए।

3) आप के महाविद्यालय में आयोजित 'हिंदी दिन समारोह' का वृत्तांतलेखन कीजिए।

4.10 क्षेत्रिय कार्य

1) किसी सामाजिक समारोह के वृत्तांत लेखन का संकलन कीजिए।

2) किसी दुर्घटना का वृत्तांत लेखन किजिए।

4.11 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1) प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूप - डॉ. राजेन्द्र मिश्र, राकेश शर्मा

2) प्रयोजनमूलक हिंदी - डॉ. लक्ष्मीकांत पांडेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी

संदर्भ ग्रंथ सूची

1)	प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूप	-	डॉ. राजेन्द्र मिश्र, राकेश शर्मा
2)	प्रयोजनमूलक हिंदी	-	डॉ. लक्ष्मीकांत पांडेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी
3)	प्रयोजनमूलक हिंदी	-	हरीश
4)	व्यावहारिक मराठी	-	डॉ. ल. रा. नसिराबादकर
5)	अनिवार्य मराठी	-	संपादक प्रा. जॉन्सन बोर्जेस
6)	व्यावहारिक मराठी	-	संपादक डॉ.स्नेहल तावरे
7)	एम. पी. एस. सी मराठी (मेन)	-	सौ. विजया देव
8)	व्यावहारिक मराठी	-	डॉ. कल्याण काळे, दत्तात्रय पुंडे
9)	व्यावहारिक मराठी	-	डॉ. ल. रा. नसिराबादकर